काव्य

भारताम्बरी

काव्य-संस्कृति से रसासिक्त

भारत का

प्रथम महाकाव्य

वाणाम्बरी

पोद्दार रामावतार अरुण

•





काव्यकार

सत्य और स्वप्न

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में कादम्बरी और हर्षचरित के विश्व विख्यात रचयिता महाकवि बाणभट्ट का स्थान अमित महत्वपूर्ण है। उन्हें गद्य-साहित्याकाश का आदि चन्द्र-सूर्य कहा जाय तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं। उनके काव्य-जीवन का जन्म उस समय हुआ जब सभी दृष्टिकोण से आर्यावर्त के कनक-काल का अन्तिम वसन्त अपनी चरम सीमा पर आन्तर और बाह्य सुगंध का स्वर्गीय विस्तार कर रहा था। इसलिए महाकवि कालिदास के बाद बाण में काव्य-शिल्प का जो वैभव दीख पड़ता है वह अन्यत्र नहीं। व्यास-वाल्मीकि मात्र काव्यकार ही नहीं, ऋषि-महर्षि भी थे।

बिहार के हिरण्यबाहु शोण-तट पर अवस्थित प्रीतिकूट ग्राम की पुण्यमयी मिट्टी धन्य है जिसे भारती के अमृतपुत्र बाणभट्ट को जन्म देने का गौरव प्राप्त हुआ। सचमुच विदेह और बुद्ध की दार्शनिक वसुधा पर बाण और विद्यापति के रूप में दो ऐसे कलाकार भी उत्पन्न हुए जिनसे अमर साहित्य की श्रीवृद्धि हुई। ऐसा प्रतीत होता है कि एक शब्द-सिन्धु के महाशिल्पी थे और एक भाव-तरंगों के महान् गीतकार। दोनों ही अपने-अपने क्षेत्र के पथ-प्रदर्शक सिद्ध हुए। किन्तु काव्य-वैभव की उपलब्धि में दोनों महाकवियों में मात्र विभिन्नता ही नहीं ऐश्वर्यशालीनता में भी अथाह अन्तर हो गया क्योंकि बाण भारत-सम्राट् के विशाल-स्कंधावार में रहते थे और विद्यापति तिमिरग्रस्त देश के एक लघु राज्य के पर्ण-प्रासाद में। दोनों ही शिव से अनुप्राणित थे, किन्तु सत्य-सौन्दर्य की स्थापना में इतिहास ने दोनों को भिन्न-भिन्न माध्यम प्रदान किया था। यही कारण है कि मुझे विद्यापति के भावालंकृत जीवन में सर्वप्रथम गीतिप्रबंध की झलक मिली, पर बाण के विस्तृत, चमत्कृत और शिल्प-विभूषित जीवन-रहस्य में एक महाकाव्य का आभास मिला।

निःसन्देह विद्यापति ने रविठाकुर को भी उनके प्रारंभिक काव्य-जीवन में गीति-प्रेरणा दी थी पर अपनी प्रौढ़ावस्था में रवीन्द्रनाथ को लिखना पड़ा कि "हम साहसपूर्वक कह सकते हैं कि संस्कृत कवियों

में बाणभट्ट की भाँति चित्रांकन में कोई निपुण नहीं हुआ। समस्त कादम्बरी काव्य एक चित्रशाला है। साधारणतः लोग घटना वर्णन करके कथा प्रारम्भ करते हैं पर बाणभट्ट चित्र-सज्जित करके कथा बढ़ाते हैं। जिसने ऐसे प्रेम-सहित चित्रों के सौन्दर्य का उपभोग नहीं किया उसका दुर्भाग्य ही समझना चाहिए।" वस्तुतः काव्यालोचना के लिए उक्त उद्धरण प्रस्तुत नहीं अपितु महाकवि बाण के कलात्मक स्थापत्य की ओर एक सूक्ष्म इंगित देना ही मेरा आन्तरिक अभिप्राय है क्योंकि बाण और विद्यापति के स्वर-समारोह में पर्याप्त अन्तर है, कदाचित् उतना ही जितना चित्र अजन्ता गुफा और [illegible] में वीणा और बाँसुरी-वादन का। एक ओर इतिवृत्त की पुत्री भरतमुनि के नाट्य-शास्त्र की निपुणिका है तो दूसरी ओर भाव-प्रधान कथा की कन्या, कल्प-विलास की वीथिका।

और, प्रीतिकूट का वात्स्यायनवंश जिसमें बाणभट्ट उत्पन्न हुए, मगध में मिथिला की सात्त्विक अरुणिमा से तो ओतप्रोत था ही। हर्ष-चरित में वर्णित सूक्ष्म आत्म-कथा में स्वयं बाण ने अपने ब्राह्मण परिवार को वेदाभ्यासी और कर्मकांडी माना है। इस प्रकार विद्यापति की पूर्व आत्मा बाण की जन्मभूमि में वास करती थी और शोधकर्ता ने बागमती या कोसी अथवा गंडकी को जितना अनुमानित किया, वह कौन कहे? मुझे गंगा के इस पार और उस पार में एक ही दर्शन की ज्योति दीख पड़ी।

बाणभट्ट का जीवन भी एक महाकाव्य था। उनके मर्यादित अभिमान में चपलता और अमरता के वरदान पूर्ण थे। उनकी आँखों में मधुरता, उत्सुकता, नैसर्गिकता और काव्य-प्रखरता के साथ-साथ ममत्व की स्निग्धता भी दृष्टिगोचर होती थी। प्रारंभ में उन्होंने जीवन को नहीं पहचाना बल्कि जीवन ने ही उन्हें पहचान लिया। उनमें जन्मजात प्रतिभा थी। परिस्थिति और विधाता ने अनेकानेक वर्षों तक पर्यटन के लिए उन्हें बाध्य किया। गृह-समृद्धि को त्याग कर उन्होंने उस रागात्मक कला का आलिंगन किया जिसमें विराम का स्वप्न-संयोग ऐतिहासिक और काल्पनिक काव्य-क्रीड़ा कर रहा था। कला-तत्परता से ओतप्रोत वह एक ऐसे उदित नक्षत्र थे जिनकी अभिव्यक्तिमयी आभा में सूक्ष्मतम महत्ता व्याप्त थी। बाण को रंगों का देवता कहना चाहिए। उन्होंने प्रकृति और जीवन की जो प्राण-स्पर्शी चित्रकारी की है, वह विश्व की भारतीय साहित्य-प्रदर्शनी में आज भी अपनी अद्वितीय चेष्टा से गौरवान्वित है।

सातवीं शती के स्वर्णोदय में सम्राट् हर्षवर्द्धन ने अपने पौरुष-पराक्रम और व्यक्तित्व-माधुर्य से इतिहास के काल-मंदिर में एक रत्नदीप जला दिया। किन्तु उसकी दीपशिखा पर कलात्मक प्रसून-पंखुड़ियाँ बिखराने वाले महाकवि बाण ही थे। उस समय नालंदा विद्यापीठ अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँच चुका था। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन सांग भी नालंदा में भारतवर्ष के प्राण-तत्त्व का अध्ययन कर रहे थे।

इस काव्य-पुस्तक के प्रणयन में यों तो अनेक ग्रन्थ सहायक हुए पर विशेष रूप से मैं डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का आभार मानता हूँ जिन्होंने 'हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन' में बाण की प्राण-वाणी को भाष्यात्मक रूप से सर्वप्रथम खोलने का कमनीय और कठिन कार्य किया। और, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बाण-सम्बन्धी अपने रोचक उपन्यास में वह सिद्धि प्राप्त की जहाँ महाकवि की मनोवैज्ञानिक और सूक्ष्म कल्पनाएँ काव्य-पीड़ा और आत्म-मंथन का एक नवीन वरदान माँग रही थीं। गहन गद्य ने बाण के मस्तिष्क में सर्वाधिकार प्रवेश किया, पर उस अमर कथाकार का विकल कोमल हृदय स्यात् सृजन-सत्य के लिए मौन हाहाकार भी करता रहा। प्रसिद्ध आत्मकथा में प्राण-व्यथा के मर्म का स्पष्ट स्पर्श तो हुआ किन्तु काव्य और कवि-जीवन की अन्तरात्मा किसी ऐसी हृदयग्राहिणी कल्पना की प्रतीक्षा कर रही थी जो स्वाभाविक अनुभूति की रस-धुरी से निकलती है। चन्द्रमा ज्योत्स्ना बिखराता है, पर ऐसी ज्योत्स्ना को बिना चाँद के बिखरे उसे देखकर तो आश्चर्य होगा ही। और, इसी उत्तेजक आश्चर्य के काव्य-उपपादन पर इस 'बाणाम्बरी' का अवतरण हुआ जहाँ कल्पना इतिहास की मरुस्थलिका पर खड़ी होकर अपने अतृप्त युग में अन्तःप्रवेश का स्वर्णिम स्वप्न देखती है।

आधुनिक हिन्दीकाव्य-अनुरागन प्रसाद-निराला-पन्त-महादेवी के सम्मिलित संदेश से अभिव्यंजित मौलिकता के उद्भासित मूल्यमार्ग पर रचित अपने शिल्प-सौन्दर्य और अभिव्यक्तियों के सम्बन्ध में विशेष स्पष्टीकरण की अनधिकार चेष्टा करना मेरे लिए शोभनीय नहीं। भारत की प्रमुख प्राचीन भाषाओं की काव्य-संस्कृति और प्रगति-चेतना का साहित्याभास इस प्रबंध पर सहज परम्परागत अनिवार्य था। काल-विन्यास की विकास-कथात्मकता के रक्षार्थ एक रहस्यात्मक घटना का उल्लेख कर देना आवश्यक प्रतीत होता है

काल-संयोग से १९५१ ई० की ग्रीष्म-ऋतु में यूरोप-भ्रमण के लिए मैं सर्वप्रथम इंग्लैंड गया। उस दिन लंदन स्वप्नलोक की भाँति सुसज्जित

था। ठंडी हवा के झोंके और अनवरत वर्षा के कम्पित काल में महारानी एलिज़ाबेथ का राज्याभिषेक-समारोह मनाया जा रहा था। विश्व के विविध भाग से उपस्थित दर्शक लंदन की राजकीय रम्यता देख रहे थे। सतरंगिनी महिलाएँ पुष्पित उद्यान-सी दीखती थीं। राजमार्ग के दोनों ओर असंख्य नर-नारी खचाखच भरे थे और उल्लसित उत्सुकता से शोभायात्रा के प्रतीक्षा-काल में अपने रेशमी रूमाल और चर्म-मंजूषा से टोस्ट बिस्कुट, केक आदि निकालकर वृक्षों की सघन छाया में खड़े-खड़े खा रहे थे। थोड़ी-थोड़ी दूर पर जनसमूह-पंक्तियों के पार्श्व भाग में सामयिक टी-स्टॉल (चाय की दुकान) पर युवक-युवतियों और वृद्ध-वृद्धाओं की भीड़ लग जाती थी। अत्यधिक शीत की बरबसती वेला में पुलकी बच्चे आइसक्रीम भी चूस रहे थे।

सहसा शोभायात्रा प्रारंभ हुई। सबकी आँखें दृश्यावलोकन में तल्लीन-सी हो गईं। इसी समय इतनी वर्षा हुई कि रंग-बिरंगे छातों के पंख खुल गए। मेरे ओवरकोट पर भी मेघ के मोती झरने लगे। सिगार और सिगरेट के धुएँ से साँसों में किंचित् उष्णता का आभास हुआ।

जुलूस अपनी जवानी पर था। अलंकृत अश्वों पर राजवस्त्र-सज्जित सैनिक इन्द्रधनुषी तरंगों की तरह मन्द-मन्द ताल भरते चले जा रहे थे। विविध वाद्य-वृन्द से तुमुल घोष निकल रहा था। रोल्सरॉयस मोटर कार पर आसीन प्रधान मंत्री सर विन्स्टन चर्चिल के बाद राजकीय फिटिन पर भारतीय नेता पं० नेहरू अपनी पुत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ आते दिखाई पड़े। अन्य विश्व-नागरिकों की भाँति भारतीय दर्शकों ने भी उन्हें देखकर सामूहिक हर्षध्वनि की।

एक विदेशी महिला जो लगभग अस्सी-पचासी की अवस्था में अपने ओवरकोट में एक उजली बिल्ली छुपाए थी, श्री नेहरू को देखते ही दाएँ हाथ को बार-बार ऊपर उठा-कर अभिवादन करने लगी। मैंने खूब गौर से उसकी ओर देखा। उसकी नीली आँखें हँस रही थीं। दिव्य मुख पर झुर्रियों का जाल बिछा था पर होठों पर एक सजीव मुस्कान व्याप्त थी। कुछ ही देर पहले उसने एक केक मुझे भी खाने को दिया था। किसी बूढ़ी दादी के स्नेह-साम्राज्य में अपने आपको पाकर मेरी आँखों में कुछ कण छिटकने लगे थे।

महारानी की सवारी आने के पूर्व ही उस दादी ने मुझसे कुछ बातचीत करनी प्रारंभ कर दी। मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि

बारह-तेरह साल पहले वह भारत में रह चुकी है। यह जान कर तो और भी आश्चर्य हुआ कि यह बूढ़ी वाली शान्तिनिकेतन की आस्ट्रिया-वासिनी वही दीदी हैं जिसने डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी को 'बाणभट्ट की आत्मकथा' दी थी। संभ्रान्त ईसाई परिवार की उस आत्म-साधिका मिस कैथेराइन के दिव्य दर्शन से मुझे भी कुछ ऐसी अज्ञात वस्तुएँ मिलीं जो अबतक किसी को प्राप्त नहीं हुई थीं।

भारतीय कोहनूर से गौरवान्वित राजमुकुट को धारण करनेवाली सम्राज्ञी एलिजाबेथ जब स्वर्णांकित रथ पर आरूढ़ होकर दीदी के प्रसन्न नेत्रों के सम्मुख आई तो कदाचित् उसे ऐसा लगा कि सम्राट् हर्षवर्द्धन की नवविवाहिता बहन राज्यश्री स्थाण्वीश्वर के सुसज्जित राज-भवन से अपने पति महाराज ग्रहवर्मा के साथ कान्यकुब्ज की ओर प्रस्थान कर रही है।

दूसरे दिन वेस्ट (पश्चिम) लंदन के एम्बेसीहोटल में कैथेराइन दीदी के पुन: दर्शन हुए। ब्रेकफास्ट (जलपान) के समय वह महाश्वेता अपनी काल्पनिक तन्मयता में डोलमा के अतीतकालीन काव्य-कगार पर बैठकर मन-ही-मन महाकवि बाण से कदाचित् कुछ प्रश्न पूछने लगी। उसकी बुदबुदाहट सुनते ही मैं चाय की चुस्की छोड़कर ध्यानमग्नी दीदी की अर्थोन्मीलिनी मुद्रा को देखने का निरन्तर प्रयास करने लगा।

उसी दिन मुझे तत्कालीन भारतीय राजदूत से मिलना था। किन्तु दीदी के दीर्घ वार्तालाप के कारण मैं इंडिया-हाउस में कुछ विलम्ब से पहुँचा।

दीदी के साथ मुझे ब्रिटिश म्युजियम (संग्रहालय) में कई बार जाना पड़ा। जब वह मुझसे संस्कृत और पाली में बोलने लगी तो मैं चुप हो गया। और, वह किंचित् बिहँसती हुई हिन्दी में बोली तू संस्कृत नहीं जानता है तो बाणभट्ट पर काव्य कैसे लिखेगा ?

एक दिन टेम्स के तट पर मेघाच्छादित संध्या में जब जहाजों के कुली भी बन्द कर बैठ गए थे दीदी ने राजगृह और नालंदा की कुछ प्राचीन बातें कहीं। उसकी झोली में संचित कुछ ऐसी पाण्डुलिपियाँ भी देखीं जो अवश्य ही अमर रहस्यात्मक सत्य प्रकट कर सकती थीं। किन्तु अंधेरा हो चुका था। हम वेस्ट मिनिस्टर अबे के सामने टेम्स के पुल पर खड़े थे। सहसा दीदी ने कहा—"बर्नर्ड शॉ ने ठीक ही लिखा है कि दुनिया की सभी आत्मकथाएँ झूठी हैं केवल गांधी-जैसे कुछ महात्माओं ने सत्य का आश्रय लिया है।" दीदी फिर बोली—

"बाणभट्ट ने हर्षचरित में अपने विषय में जो कुछ थोड़ा संकेत किया है वह सही है, लेकिन कदाचित् लोक-लाज के भय से उसने कुछ गंभीर और करुण घटनाएँ छिपा लीं।"

ऐसा लगा कि कैथराइन दीदी ने अपनी अन्तिम अवस्था में बाण के सम्बन्ध में कोई नया अनुसंधान किया है। उस महाविदुषी के साथ मुझे हॉलैण्ड भी जाना पड़ा। समुद्र के किनारे एम्स्टरडम के सेवाय होटल में उसी ऊपर रुक गया। जहाँ तक बन पड़ा मैंने दीदी की सेवाएँ कीं। वहीं जूलिया नामक एक अध्ययनशील तरुणी से मेरा परिचय हुआ। वह नहीं मिलती तो दीदी को अधिक कष्ट होता।

एक दिन दीदी कुछ तीखी पुस्तकें लेकर जब वर्ड (मिरजामर) से लौटीं तो उस समय सूर्यास्त हो चुका था। मैं ऊपर से भटकते हुए समुद्र को देख रहा था। भीतर होटल के प्रधान कक्ष में एक अमरीकी लड़की पियानो पर गुनगुना रही थी। दीदी को देखते ही मैं नीचे उतर गया। रविवार की रात थी। वह मुझे अन्दर ले गईं। बहुत देर तक मैं वहाँ बैठा रहा। ऐसा आभास हुआ कि दीदी आज चुप ही रहेंगी। अचानक उनने मिल्टन का नाम लिया। सूरदास और तुलसीदास की भी चर्चाएँ कीं।

धीरे-धीरे उनकी गंभीरता बढ़ती गई और देखते ही देखते वह विह्वल उठीं। मैं भी उनके नील दर्पण को देख कर कुछ करुण हो गया। एकाएक वह बोलीं—"जानता है रे, बाण की महाश्वेता प्रथम काव्य-वधू बनी थी! उसकी एक सांस्कृतिक कला-सारिका थी जो प्रेरणा-प्रसाद देकर बिछुड़ी हो गई! मैं अपना आत्म-स्वाद देखने गई थी वहाँ! अहा! आत्माओं का प्रवाह अनन्त काल तक " दीदी रोने लगीं।

उस रात मुझे नींद नहीं आई। मैं दीदी के रहस्यात्मक महासागर में गोते लगाता रहा। एक काल्पनिक स्वप्न हुआ कि तरुण बाण अपनी करुण अंध वधू को छोड़ कर जा रहा है और उसकी कला-भारती चिरविरहाच्छादित सौन्दर्य के सजल नयनों में आलोक भर रही है।

कुछ दिनों तक मैं दीदी के साथ स्विट्जरलैण्ड में भी रहा। जिनेवा के नील झील के किनारे जहाँ एक गगन-चुम्बी फुहारा चाँदी-सी जरी बिखरता है फूलों का मेला लगाया जा रहा था। रंग-बिरंगे गुलाब अपनी कमनीयता के नये विकसित यौवन प्रदर्शित कर रहे थे। पंखुड़ियों की बनी हुई पंक्तियाँ कहीं घूम रही थीं कहीं खिल रही

थीं। उसी दिन उस स्वप्न के उद्यान में दीदी ने प्रीतिकूट की कुछ पुष्पित कहानियाँ सुनाईं।

भूमिका के इस रहस्यात्मक अंश को मैं इससे अधिक नहीं बढ़ाना चाहता। काव्य-प्रेरक पूज्य द्विवेदीजी के परामर्श से कभी दीदी पर भी कुछ लिखना ही पड़ेगा क्योंकि एक सहृदय बन्धु की भाँति उसके प्राण-कोष को लूट कर भौतिकवादी पश्चिमी देशों को देख कर मैं स्वदेश लौट आया।

काव्य की अग्रजा (दीदी) और बौद्धिक कला-प्रेरिका (रेखा) की आकृतियों पर जब मैं भाव-भाषा का रंग चढ़ा रहा था कि एक दिन वसन्त की संध्या में पक्षाघात से अचानक मैं पीड़ित हो गया। वर्षों तक मेरी उंगलियाँ पीड़ाओं के कारागार में कैद रहीं। फिर, केवल दो के सहारे बाणभट्ट की सांस्कृतिक काव्यात्मा कला-भारती का सोम-कलश लेकर धीरे-धीरे उतर गई। अस्तु, दीदी मुझे बहुत कुछ बता कर विलीन हो गई। पता नहीं वह प्रभु ईसा में मिली या भगवान बुद्ध में। स्वीत्ज़रलैण्ड के उस सूने श्मशान में ज्योतिर्बिंब को सँवार कर सभी लोग चले गए। केवल मैं ही क्रॉस के निकट खड़ा रहा। मिट्टी में सोई हुई दीदी मुझसे कहती रही—"जैसा मैंने कहा है, यदि वैसा ही काव्य लिखा गया तो उसकी एक प्रति यहाँ भी रख देना रख देना रे! तू तो जानता है, मैं कौन थी।"

रवीन्द्रशताब्दी १९६१ —पोद्दार रामावतार अरुण

कवि निवास

समस्तीपुर (बिहार)

मायाम्बरी

वाग्भरी

प्रथम सर्ग

चन्द्रकलश को उठा स्कंध पर चली पार्वती
निकली किरण-क्वणित इन्द्राणी उषा-उर्वशी
नारायण-रंजिता स्मिता भावाकुल राधा
अत्रि-लालसा-अनिर्व्याजित उदयाचल-आभा

स्फुटित प्राण का ज्योति-पद्म नभ-नील सिन्धु में
रंजित रश्मि-पराग-रेणु हिम-बिन्दु-बिन्दु में
मलयमुग्ध मन्दानिल भैरव रागाच्छादित
प्रीतिकूट सामगान-ऋचाओं से अनुप्राणित

वैदिक भारत का प्रकाश विकसित प्रभात में
शुद्ध सभ्यता का संस्कृति-स्वर ध्यान-यान में
ज्ञानपुञ्ज ऋषि चित्रभानु ध्यानायित भूपर
मन्त्रोच्चित हवनाग्नि-शिखा उठती अब ऊपर

जीर्ण-शीर्ण देहाङ्ग दीप्त मन-स्रोत प्रवाहित
परम्परागम मन्त्रोच्चारित मन अनुशासित
धूम्राच्छन्न समिधा-सुरभि में लिप्त निकेतन
नित्य नियमपूर्वक होता आध्यात्मिक चिन्तन

मल्ल-यश विख्यात सकल उत्तर भारत में
देव-विभा थी व्याप्त वाणि-सुत सारस्वत में
महाशोण में ब्रह्म-स्रोत अन्तर-परिलक्षित
वाद्यवृन्द पर साम-गान कानन में मुखरित

मानदान में चित्रभानु हो जाते तन्मय
शब्द-कुसुम से छात्र-भृंग करते मधु संचय
स्वर-वृन्तों पर श्लोक-सुपर्णा-ध्वनि दादुर-सम
स्थान-स्थान पर नृत्य-निवेदित चरण छमाछम

हिमगिरि को भी चित्रभानु दिग्देश दिखाते
शीलभद्र कुलपति नालन्दा से जब आते
शोणभद्र में सागर की गहराई भी है
जल पर तुंग हिमालय की परछाई भी है

दूर-दूर से ज्ञान-पथिक जब आया करते
जीवन-दर्शन-घन जन-मन पर छाया करते
भानु-सुगन्धी-छन्द पोंछती स्वयं भारती
दुष्कर पग डगमग करते तो वह सँभारती

तत्त्वपुरुष निज त्याग-ज्ञान से सींच गया है
उन्नत मस्तक भारति-धाम में ही निर्भर है
दिव्य तथागत-तप से भी वह नहीं डरा है
उसका प्रखर प्रकाश प्राग-भू पर बिखरा है

मिटी आज तक नहीं आत्म-अनुरंजित भाषा
मनु-पुत्रों में सूक्ष्म ज्ञान की चिर जिज्ञासा
कर्मयोग में रक्षित अनासक्ति-अभिलाषा
महामुक्ति हो मानवता की है परिभाषा

बहिर्जगत ही नहीं सत्य कुछ भीतर भी है
मनस्थल में प्राण-तत्त्व का निर्झर भी है
आत्म-नयन से भी भारत ने सब को देखा
काल मिटा पाता न ख्याति की जीवित रेखा

यहीं बुद्ध-निर्वाण जहाँ अणु-तत्त्व ज्ञान है
प्राण-दान से प्रखर मनुज का आत्म-ज्ञान है
जीवन जिस पर आता वह एक ही यान है
एक दृष्टि के लिए सृष्टि में विविध ध्यान है

चिर विराट का लीला स्थल प्रकृति की क्रीड़ा
केवल सुख ही नहीं व्याप्त कण-कण में पीड़ा
चिन्तनानुमनन कि मानव कर्म कठिन है
सूक्ष्मानाम यही कि यहाँ निशि में भी दिन है

कर्मभूमि का मर्म कि अन्तरतर विकसित हो
आत्म-गन्ध से प्राण-पुष्प प्रतिपल स्पर्शित हो
सुमधुर मृदुल अचपल स्वर से मन मुखरित हो
विचलित वेला में भी उर में किरण उदित हो

रजत रात में प्रिया झाँक कर ठहर गई यों
मृगी मालती-कली सूँघ सकी क्षणभर ज्यों
लाज लगी तो चली गई भट्टिनी कक्ष में
हुई भोर में प्रसव-पीर रवि रंजित वक्ष में

इधर प्रात-होमाग्नि ज्वलित हो रही सुनहली
उधर चन्द्र की प्रभा अस्त हो रही रुपहली
उतरी उधर क्षोणि पर आभा नीलाम्बर से
इधर एक निकला प्राणों का फूल उदर से

पूर्णाहुति सा पुत्र भानु का हृत्कल बन गया
हर्षाकुल सुविशाल भाल तत्काल झुक गया
क्षमा करो देवता ! आज मैं मुग्ध-विभोर हूँ
प्रथम प्रथम सुत-स्नेह-सुधा से सराबोर हूँ

अस्त-प्राय जीर्णोन्मुख तन में चिन्मणि मन का
उभरा अतुल असम्भव रागमय जीवन-बल का
शिशु-सुकुमार उद्गार पग को हरित बनाती
पीत पत्र में ज्यों फिर स्वर्ण-प्रभा बिखराती

इच्छा होती इसी समय चूमूँ कपोल को
सुनूँ मृदुल आरक्त अंग-किसलय-किलोल को
मुकुलित मधु-वात्सल्य पिपासित रोमावलि में
मातृ-शोभिमा व्याप्त अधर-उद्भासित कलि में

रुक आ चन्द्र चकोर, शोण में ज्वार उठा है
चित्रभानु के उर में शिशु का प्यार उठा है
उर्ध्व नन्द उल्लसित यशोदा की माया में
गाने दो देवता सुगंधित तरु-छाया में

मैं उमंग-नौका पर बैठा हुआ बटोही
कहे न कोई मुझे तरंगों में निर्मोही
तडित्तूलिका लिए मेघ-मन उड़-उड़ जाता
कनक-भूम पर इन्द्र-रथ में छवि छितराता

मुक्त मैं हूँ कवि नहीं किंतु फूटी रस-धारा
होगा कभी अमर तुमसे क्या गान-किनारा?
व्यर्थ न होगी स्यात् मंजरित मन की भाषा
इंगित देती दूरागत प्रथमन-जिज्ञासा

गीत-गंध से सिहर उठा उच्छ्वासों का वन
फुल्ल नयन में घिरे चारु चन्द्रिम सन्द्रिम घन
कालिदास-सा रस-सिद्धी क्या जन्मा घर में?
क्षिप्र-हिलोर उठेगी मेरी गान-लहर में?

क्षिप्यघ्रणि ! मैं आज न विद्या-स्नान करूँगा
शिशु-मुख-दर्शन-उत्सव में अति व्यस्त रहूँगा
गृहाङ्गन में गुंजित होंगे गायन-वादन
ध्रुपद-गीत कलकण्ठ करेंगे राग-स्वरचयन

रुको वत्स कण्वाश्रम-सुधि-आवृत मन मेरा
च्यवन-भूमि पर शाकुन्तल-अवतरण-सवेरा
भाषाम्बर में भानु चन्द्र रस-मिश्रित चित्रित
नभ-नीड़ में ज्योति जीव आनन्द-तरंगित

माहात्म्य वर्णन करूँ या कि दूँ संस्कृत उपमा
उत्तर की हिमसाडें या दक्षिण की सुषमा
सप्तदुर्ग ही तुम्हें सुनाना यदि मन रहता
नभ की नील नदी पर अलका तक मैं बहता

कमल-कलि-वन में उभार बना सपन को
वो क्षण आज कहीं खो देता न सपन को
किन्तु घटा है यहाँ छटा की मधुवर्षा है
कुञ्ज-कुञ्ज में सुरभि-कुसुम-कलिका-सभा है

कल अन्तर्हित साम्य-सत्य-स्वर-अर्थ करूँगा
बुद्धि-पात्र में गहन चेतना-सुधा भरूँगा
विचरूँगा दर्शन-अरण्य-गिरि-पथ-उपवन में
भर दूँगा मैं सहज ज्ञान स्थिर उत्सुक मन में

बीते द्वादश वर्ष काल-गति बढ़ती जाती
वयाम्बरा में तीव्र धूप नित चढ़ती जाती
चित्रभानु की वधू राजवधी न रही अब
मन की मही सिहरती सुधि उसकी आती जब

जबसे गृहिणी गई उदासी छाई घर में
स्नेह-सिक्त मुस्कान लुप्त नित प्राण प्रखर में
सुख-चुम्बन से मुकुलित मुख पर लाली आई
असमय में ही हरित मालतिका मुरझाई

मधु जगा कर चली गई शिशु-शोभित जननी
बाल चन्द्र से दूर हुई वासन्ती अवनी
चित्रभानु! मत सिसक काल निष्ठुर होता है
मनुज एक दिन मरण-सेज पर ही सोता है

मैं भी शिथिल हुआ, जीवन का पका आम हूँ
काल-वृक्ष में फला हुआ पीला ललाम हूँ
श्वासों के खँडहर का हूँ मैं दीप पुराना
किस झोंके से कब बुझ जाऊँ, कौन ठिकाना

ऐसा दशरथ हूँ जिसको एक ही राम है
विद्याभ्यास कराना मेरा पुण्य काम है
काम्य प्राण-मलय दीप्त उर-अभिलाषा का
एक प्रात-उद्यान सान्ध्य अम्बर-भास का

चंचलता की वायु शास्त्र-वन में लहराती—
काव्य-कुंज में रुक कर गन्ध-सुरभि बिखराती
चौदह के वय में ही चाँद पकड़ लेता मन
राग-तरंगित वीणा पर छा जाता जीवन

पुण्य पिता के मरम पुत्र में स्वाभिमान भी
गुंजित होते कभी-कभी सम्पमा-गान भी
तरल तरंगों पर किशोर-कविता बह जाती
चपल उमंगों पर गन्धावलियाँ अनुगातीं

किन्तु नीलिमा की गति में उन्मत्त ज्वार क्यों?
बाँध तोड़कर निकल भागती हृदय-धार क्यों?
मर्यादा का भव्य मण्डप क्यों ढह जाता?
मध्य निशा में क्यों अबोध जीवन जग जाता?

'भानु-पुत्र निर्लज्ज चपल निष्प्रभ अभिनेता?
मंजुल मन में कौन अब आँधी भर देता?
मुझसे भी क्या मित्रमण्डली सुखदायी है?
वात्स्यामन-नभ में क्यों यह बदली छाई है?

शुभ्र भारती! प्राण-नयन में दर्शन भर दो
अन्तस्तल में सरल स्वच्छता-चिन्तन भर दो
कितना मैं रोकूँ प्रवाह को? गति ही गति है
त्रास-प्यास-परिहासयुक्त यह कैसी मति है

निर्ममता के नाग-दंश से तन-मन व्याकुल
रह रह प्राण प्रकम्पित व्यथा-गरल में घुल-घुल
चण्ड बादलों के संग चन्द्र कहाँ छिप जाता?
कौन यह अन्तराकाश में तम फैलाता?

पुत्र न हुआ सुपुत्र नहीं तो क्या कुल-महिमा
यदि पुनीत भावना नहीं तो व्यर्थ मधुरिमा
वंश-दीप प्रज्वलित रहे कामना जनक की
धारण करे हंस क्यों पंकिल पाँखें बक की?

मरण-पूर्व प्रमित माता सुत-स्वप्न-जयी थी
स्मित लालसा यशोराशि से स्फीतमयी थी
मैंने वचन दिया था पुत्र महान बनेगा
तिमिर-हरण के लिए ज्योति का बाण बनेगा

किन्तु तरुण तन में न प्रचुर अरुणाभा मन की
चंचल-चंचल हो जाती साँसें यौवन की
विकल वायु उठ रही दीप को कहाँ छुपाऊँ
बहुत भूख है, कहाँ-कहाँ किरणें बिखराऊँ?

क्षोभ तुम्हारे पास में विष तो नहीं मिला है?
पाप-पंक में प्राण-कमल तो नहीं खिला है?
वत्स-शिखर आलोकाच्छादित हिम-सा उज्ज्वल
ऋषिकुल-धारा सुर-सरिता-सी पावन निर्मल

मेरा प्राण न खण्ड कल्पना-व्योम विलासी
मेरे मन में व्यर्थ व्याप्त है घोर उदासी
प्रीतिकूट की पुण्यभूमि का वह है वासी
मैं उसके मंगल भविष्य का चिर विश्वासी

चाँद देख कर हिलकोरें उठती है मन में
चपल पवन चलता ही रहता यौवन-वन में
दिन में भी मद दृग में निद्रा आती रहती
मधु ऋतु के पहले ही कोयल गाती रहती

सुनी-सुनाई बात हृदय स्वीकार करे क्यों?
झूठमूठ कह कर कोई उपचार करे क्यों?
कुसुमित क्रीड़ा भी जीवन का एक अंग है
किसके यौवन में न बसा मन का भृंग है?

भव्य भोर में जल-हिलोर लेने दो मन को
तपने दो तारुण्य-किरण से कोमल तन को
स्वप्न-वीथि पर कौन नहीं जाता यौवन में?
आता अरुणावेग नहीं किसके जीवन में?

अमृत-सिक्त अनुभव में रस-कलशी भर आती
सृजन-सिद्धि-हित वृद्धि ऋद्धि वाणी बिखराती
संगम का सत्संग प्राण को बल देता है—
नयनों में अनुभूति-जलद का जल देता है

शास्त्रों से भी कठिन मनुष्यों का अवलोकन
संघर्षों से अधिक निखर जाता है जीवन
काक-झुण्ड में कोयल कभी न छिपनेवाली
काल-वश्य भी नित्य उगलता तम में लाली

पादप सकल मही गिर पात झंझानिल से
क्यों परास्त होते न बली रिपु-बाहु कुटिल से
विरह-ताप से मग्न भय का भूत बना था
नभ में मन्दाक्रान्ता-मिलन-वितान तना था

पुत्र तुम्हारी तरुणाई प्रतिभा-पुष्पित है
सरस गद्य में पद्य हृदय-वन में गुंजित है
गर्व हो रहा मुझे माधवी मौलिकता पर
लिखता है अध्यात्म सदा ही भौतिकता पर

बिना धूम से मोह लगाए कुछ न मिलेगा
बिना कीच से कमल कभी भी नहीं खिलेगा
शाप तुम्हारे हाथ काज मत करो अपावन
प्राण-क्षोभ में भरा न ऊर्मिल तम का गर्जन

बाल पुत्र का वृद्ध पिता होता अति मोही
अन्तर कभी न ध्यान देता सुत-विद्रोही
उसमें भी मैं वधूहीन उड्डीन विहग हूँ
अस्त-व्यस्त अपने जीवन का अन्तिम मग हूँ

यही आत्म-परितोष अग्नि-संस्कार करोगे
स्मृति-पुञ्जित एकान्त क्षणों में दृग भर रोवे
तत्त्व-समीरण जल-हिलोर में होकर सहज —
प्राप्त करेगा मुक्ति परम वात्सल्याहृत

नरवर विद्यावारिधि बन कर महामना तुम
प्रखर किरण-व्याप्त मन के घन बरसाओ तुम
मेरा जीवन-दीप अधिक अब जल न सकेगा
अन्तिम हर्ष बिना देखे रवि बुझ न सकेगा

पुत्रवधू-सुत परखूँगा ही मन्दाचल पर
छिन्न प्रभा छाएगी अन्तर-सागर तट पर
नूतन छवि से वात्स्यायन-गृह हो गति-गुंजित
वह-वत्सम्भरी दर्शित स्नेह से हो शिशु-विस्मित

मंजुलता की विभा व्याप्त हो दिग्दिगन्त में
मदन पर्व मनाऊँ आगामी वसन्त में
निर्निमेष नयनों में विचरें मृदु-मायाएँ
अमृत-सरित पर तुष्टि-तिरोहित हो आ जाएँ

वन के वन में तरु-तरु पर मारुत लहराया
प्रीतिकूट में राग-रंजित पुष्पासव छाया
अंग-लताओं पर अनंग-अंकित हस्ताक्षर
उत्कंठिता लालसा स्पर्श करती श्यामाम्बर

उड़ी फूल की धूल झूम पर नाचे यौवन
कुंचित कच-कुंजों में अलि-पुंजों का गुंजन
प्राणों में उच्छलित क्षौम-तारुण्य तरंगित
कुसुम-कलि में मधु-वितरण-हित चितवन-इंगित

कादम्बरी

पाटल-कुसुम-कपोल गुलाल-भरे गर्वीले
लाल-लाल मुख-चन्द्र मधुर मधुमत्त छबीले
रस की रागमयी वर्षा से भीगे तन-मन
रागमयी रजनी में ज्यों अनुरागालिंगन

कर पर कर-झकझोर हिलोर हृदय-सागर में
पुष्प-निशा परिव्याप्त रूप की धूप-लहर में
सोम-धार पर प्रीति-गीति से दोलित तरणी
इन्दु-कुहा-आवृता दिशाएँ चम्पकवर्णी

मुखरित मन-उल्लास-हास मधुमास-विचुम्बित
मदन-दहन के पूर्व काम-गिरि-वन ज्यों सुरभित
कमल-वक्ष पर चपल पक्ष की विमल सुकविता
किरण-कक्ष में उषा-सज शोभित ज्यों सविता

जल प्रवाह पर भृकुटि भूमिका बँधी बाँह में
अपलक नयन का पथिक पिपासित दृष्टि-छाँह में
कादम्बरी-सुरा-सी छलकी सुधा स्नेह की
रहा बकुल-छाया में कुछ भी सुधि न देह की

ग्रीष्म-आगमन हुआ मल्लिका-अट्टहास में
प्रीतिकूट रोमायमान पुष्पित पलाश से
धूलि-कणसिक्त उष्ण वायु में मिला प्रभंजन
लगी लगाने तप्त अंग में तरुणी चन्दन

वक्र तटी पर चन्द्र-मल्लिका-मिश्रित सिकताङ्कन
वन से बाहर हिरण्य-हिरणियों का निशि-विचरण
अमृतदीप-सम्मुख शय्या पर निद्रित नारी
श्वासा पर मृदु-क्लान्त छन्द-नापित अँधियारी

आज न पूछो प्राण छटा कितनी छाई है
चित्रभानु के गृह में पुत्रवधू आई है
स्वयं महात्मा मैं प्रसन्न हूँ मैं प्रमत्त हूँ
क्या लोगे हे भिक्षु! कहो मैं भानु भट्ट हूँ

विप्र दीन मैं नहीं रत्न-मणि-कोष सदन में
खिलते कंचन-कुसुम सदा वात्स्यायन-वन में
सप्त दिवस तक विपुल वित्त मैं दान करूँगा
योग्य याचकों का समुचित सम्मान करूँगा।

चित्रभानु ने धूमधूम वेणी को देखा
झरे अश्रु अब अंकित हुई चपल-सी रेखा
अब सुहागिन झुकी हुई-सी रही चरण पर
रुकी रही वह क्षमा माँगती व्याकुल मन पर

वृद्ध भानु का पीपलदल-तन गिरा उसी क्षण
उमड़ द्रवित दृगों में चिन्मय के पावस-घन
मूर्छित-सा हो गया तपस्वी-जर्जर जीवन
दौड़ दुख सुन-सुन कर प्रीतिकूट के जनगण

उधर हुआ सूर्यास्त इधर भी हुआ अँधेरा
निबिड़ निशा में उदित चिता पर स्वर्ण सबेरा
शान्त मौन निस्तब्ध दिशाएँ, भुवन मौन है
पूछ रहा आकाश भूमि से उज्ज्वल कौन है ?

द्वितीय सर्ग

मेरी सीता की सजल दृष्टि चिर श्यामा
कैसे कह दूँ आत्मा कितनी अभिरामा
नयनान्धकार में मेरी ऊषा आती
कमनीय कमलिनी खिलखिल कर सकुचाती

सौन्दर्य-साम्य दीपिका-शिखा तम-स्नाता
पूर्णिमा निशा-सी आती अब सुजाता
यौवनाकाश की अरुणाभा की लाली
कज्जल-कज्जल उज्ज्वल उर की हरियाली

उग-उग उमंग के वह विलीन हो जाते
मन में गन्धाकुल फूल नहीं खिल पाते
लज्जिता पिकी पंचमी निकाल न पाती
मधुऋतु-बयार उठ-उठ कर ही रह जाती

इच्छा की आँधी बार-बार अकुलाई
उर की उर्वशी न स्वर्ग कभी छू पाई
मालती वन में प्राण-कली रोती-सी
सभी सुन्दरता अलस-स्वप्न सोती-सी

प्रतिपल मन की सिसकियाँ सुनाई पड़तीं
सर्वस वेदना की उसासें भरती
पानी में नयन-मीन प्यासी की प्यासी
कोमला कामिनी प्रबल काल की दासी

उल्लास-हास में छिपा रुदन-अधरा
हो गया मधुमय भरा स्वर्ण सवेरा
लोचन-वातायन बन्द कहाँ न झाँकूँ
पाटल-कपोल का मूल्य किस तरह आँकूँ

कारागृह में घिर बसी यौवन-ज्वाला
घन-मन-ग्रीवा में गर्जित विद्युतमाला
श्वासों पर छाई मन्मथता मँडराती
दृग-नभ में रंजित ज्वालामुखी धुआँती

अभिशप्त पुण्य का भार कहूँ मैं कैसे
कुंठित नयनों की चाह गहूँ मैं कैसे
संतप्त धार पर स्थिर रहूँ मैं कैसे
भीगी बातें भी किस कहूँ मैं कैसे

परिणय प्रसून की सुषमा कहाँ मैं पाऊँ
मधुमय आँखियों में नयन टपकाऊँ
बादल-विद्युत में रुद्र रागिनी राची
आत्मा-शिशु निज उच्छ्वासों की होली

झंझा-झकोर में मन-विहग मचलाता
लाञ्छित अतृप्ति से ग्रस्त हृदय झुँझलाता
निस्तब्ध नयन-तल में अकुलाहट होती
दुर्धर्ष कामना वज्रनाद पर सोती

हे अघ पुजारिन इन्द्रपुरी म आओ
आग्नेय स्कंध पर स्पर्श-लता फैलाओ
कर लूँ विधु-वक्षालिंगन अन्तर्मन स
आकाश न कुत्सित होता चन्द्रग्रहण से

संकुचित प्राण-वेदना तुम्हारी पावन
अवरुद्ध नयन-नभ में घन-वर्षित सावन
अपराधहीन सुन्दरता कामाधकित
अभिलषित स्फीत माधुरी अरूप अनिश्चित

ऐसी न घटा देखी अबतक जीवन में
जो बरसे कभी न बाह्य विदग्ध भुवन में
भीतर हा भीतर बरसा करता पानी
करुणा की सरस्वती है मरी रानी

है अब कली पर अब मयनबाली है
तम के रहस्य में वह्नि-शिखा-शाली है
हिल-हिल उठती नित हरसिंगार की डाली
देखता दूर से आत्म-केलि मन-माली

रोमांचित रागों से मैं अभी अपरिचित
अव्यक्त व्यथा का चित्र न कथा-प्रदर्शित
मैं मौन युगों के दर्पण देख न पाता
भौंहों की भाषा पढ़कर मन अकुलाता

वासना-भ्रान्त अतिप्रिय रम्यता-रोगी
संयोग-द्वार पर स्तम्भ वसन्त-वियोगी
मैं स्वयं कम्पित हूँ अतृप्त स्पृहा से
योजित हूँ अपनी विकल प्राण-प्रभुता से

निष्ठुर हूँ मैं निर्मल वेणी कल्याणी
मैं स्वयं भग्न मैं स्वयं एक अभिमानी
मैं तटी देख कर केवल चुप रह जाता
निःशब्द नील जल दूर, दूर बह जाता

अनजानी यौवन व्यथा हो आता है
युगों में फूलों को भी खो आता है
उर घुम्मित ऊर्मि प्रवाह न देख सका मैं
आनन्द-मदस्पन्द-प्रवाह न देख सका मैं

अन्तमन में कामना-कुसुम कुम्हलाने—
जब जब साँसों में अमर भाव भर जाने
व्याकुल बादल जब उमड़ घुमड़ कर आने
तृष्णा-मयूर पर हार-तुषार बरसाने

जब संचित अन्तराकाश छेद छुप जाती
अभी आँखें तब अधिक विभा बिखरातीं
मैं मन-ही-मन रोकर धोता हूँ दृग को
गतिहीन बना देता हूँ मादक मृग को

पथ पर यौवन-आवेग सदा रुक जाता
जब प्रतनु-सुरगाम्भ स्वस्थ मधुपाता
अभी नारी को निरख अध-सा हूँ मैं
निर्गंध पुष्प-सा मलिन छन्द-सा हूँ मैं

कुल की मर्यादा भी न ताप जीवन में
ज्ञानाग्नि-लपट उठती मेरे मरु-मन में
निर्मम निदाघ से झुलसा हुआ बटोही—
बन गया स्वयं कितना निष्ठुर निर्मोही

पाषाण-पुरुष मैं अधम न मधुता मुझमें
गिरि पर चढ़ने की गहन न गुरुता मुझमें
मैं हार गया मर्मांतक मेघ-पतझर से
जाऊँ किस ओर कहाँ अब अपने घर से

सिद्धार्थ-सदृश गृहिणी परि-त्याग करूँ क्या?
विधि के संहार में इतना मग्न बनूँ क्या?
अभी अघोर आशा को क्या ठुकराऊँ?
क्यों मदन-महिमा में अंगार लगाऊँ?

मैं स्वप्न-मगन में लीन प्रभात-तपस्वी
मैं महाभय से भ्रान्त अजय मनस्वी
मेरी श्वासों में वत्सवंश-स्वर-लहरी
विकसित भारत का मैं भावात्मक प्रहरी

मेरे शोणित में आर्य-कला की क्रीड़ा
मेरे प्राणों में मधुर छन्द की पीड़ा
मैं नाट्य शिल्प का एक उन्नत अभिमता
मैं शुभ्र शोणतट का साहित्य प्रणेता

षोडशवय में ही शास्त्रों का ज्ञाता हूँ
सिकता-वंशी पर क्रीड़ा-मग्न गाता हूँ
हे धर्मवधू मेरी वेणी कल्याणी
अब क्षमा करो मेरे दृग में भी पानी

मैं खण्ड नहीं स्वच्छन्द अखण्ड विचारा
तम पीड़ा में भी कला-ज्योति का पग
मैं भानुभट्ट-सा राम प्रेम-सागर हूँ
कल्पना-किरण में व्याप्त अटूट लहर हूँ

यौवन-विहग अम्बर में उड़नेवाला
सपनों में मैं कभी न डरनेवाला
साधना-प्रतिमा जग में जय करनेवाला
मैं नहीं कदाचित भूपर मरनेवाला

मैं हूँ भविष्य का अमृतकोष-अधिकारी
मैं सरस्वती का शरत्प्रसन्न पुजारी
मैं हितचिन्तक प्रस्फुटित मित्रमण्डल का
मैं उदित चन्द्र उर-गुम्फित तारक-दल का

मन कृष्ण-केलि-कूजित आरण्यक मग में
हैं वर्णहीन मानव ही मेरे जग में
उन्मुक्त मम भारती कला में रहती
शिव की गंगा प्रत्येक श्वास में बहती

अनुराग-विरागभरी भाषा गभीरा
ज्वाला-सी होती मधुर काव्य की पीड़ा
तम और विभा के कौतुक बड़े रसीले
सौन्दर्य-स्वप्न-बन्धन हो जाते ढीले

जब चेतन और अचेतन धारा मिलती
संगम पर ही संवेग-कुमुदिनी खिलती
जब अमिय लहर में भाषा भाव लुटाती
झरते हैं झरर-झरर मानस के मोती

साधना-देह में जब विदेह-विधु उगता
कल्पना-हंस तब मन-मुक्ताफल चुगता
योगी वह भी जो आत्म-सोमरस पीता
अक्षरारण्य-सौन्दर्य-भोग में जीता

अन्तर्मन उत्सुक अब भारत-दर्शन-हित
आध्यात्म-सिद्धि-हित नित मन प्राण पिपासित
मैं मगधकूप-मण्डूक नहीं मानव हूँ
कण्टकाकीर्ण दग्ध दिग्पथ का कलरव हूँ

जिज्ञासा की पाँख पसारता हूँ मैं
सागर-गिरिशृंगों को पुकारता हूँ मैं
सौन्दर्य-भार से झुकी दृष्टि की डाली
भरी साँसों से चू पड़ती शेफाली

रचना में रंजित वर्तमान का स्वर हो
अनुकूल मन-चिन्तनाकांक्षा प्रखर हो
दृग घन-वन में द्युति-दीप्त बलाका-पंखी
ज्यों जुहीपुष्प-शोभित सुवासिनी वेणी

सर्वालंकारों से भूषित हो भाषा
नव रस-संगम पर ध्यान कर अभिलाषा
व्याकरण-मग्न अर्थों के रथ पर छवि हो
रवि रश्मि-ध्वनित साहित्य-सारथी कवि हो

यति-गति में भंग हो नहीं वाक्य-यात्रा में
दोष न आए कुछ नहीं छन्द-मात्रा में
सामाजिक पवित्र प्रवाह सत्य-सम निश्छल
अनुभूति-हिमालय ज्ञान-ग्रीष्म में निष्फल

निर्मित हो नव इतिहास-कला का संगम
बिखरे सुदूर तक भू के भाव-विहंगम
देशाटन के पश्चात् मिलूँ जनपति से
झकझोरूँ राजमुकुट को प्राण प्रगति से

पर अब वधू-विच्छेद अशोभन होगा
नयनों के सावन-घन में गर्जन होगा
क्रन्दित सुधि-पथ पर होगी व्याप्त उदासी
विधुन-प्रसार सहेगा नहीं प्रवासी

गुण-निपुण मित्रमण्डल महपयी अविरल
अभिनय अनेक आनन्द-मगणि के मचल
आएँगी कलातीर्थ में कुछ नर्तकियाँ
ज्यों देवालय में कल्पपूर्ण कामिनियाँ

विचरूँगा राजहंस-सा मैं खग-दल में
ज्यों ग्वाल-गोपिका-संग श्याम सुधि-जल में
कर दूँगा भारत-जनपद को नाट्यांकित
होगी दग-वीणा झंकृत झंकृत झंकृत

जाऊँ नालन्दा सर्वप्रथम एकाकी
देखूँ बौद्धिक जग-विद्यालय की झाँकी
शैशव में उडु के संग गया था हठ से
था गिरा एक दिन मैं भग्न-पिच्छिल मठ से

इस चार वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करूँगा
विप्रता-पात्र में श्रमण-किरण भर लूँगा
श्री शीलभद्र का स्नेह मिलेगा निश्चय
मानस-मधुकरी करेगी नव मधु सञ्चय

सम्प्रति सहस्र दस छात्र देश-द्वीपागत
हो रही भूमि-भारती मान्य सर्वोन्नत
आदान-प्रदान-रहित प्राणी अज्ञानी
विविधा-सुविधा में विकसित होती वाणी

नालन्दा में मिथिला-दर्शन-विमर्शन
दक्षिण-पश्चिम ज्ञानोदधि का नित-मन्थन
संस्कृति-संगम पर समन्विता मानवता
पृथ्वी पर उतरी हुई प्रकाश प्रखरता

पनपी वैदिकता कर्मठता भाषा में
वेदान्त उदित आध्यात्मिक जिज्ञासा में
गम्भीर शान्ति में होता जन-कोलाहल
आशा न कभी वह जा पीये हालाहल

मनुजत्व चाहता भवमुक्ति का साधन
आध्यात्मिक प्रभुता नहीं मात्र आराधन
भौतिक वसन्त-वैभव भी विकसित होगा
विकसित भविष्य में मानव सुरक्षित होगा

प्राणों की कला निकलती नैतिक बल में
बनती है कविता-किरण अमृत के जल में
पीयूष-धार करुणा से ही निकली है
सौन्दर्य-कली आँसू में सदा खिली है

कुछ अमिट अश्रुकण बुद्ध काल-लोचन के
अव्यक्त व्यथा के शान्तिदव जन-मन के
आर्यों के राहुग्रस्त रवि के उद्धारक
घनान्धकार में उदित भोर के तारक

पर कर्महीन वैराग्य-मार्ग भी कुण्ठित
यद्यपि अशोक-परिवर्तित पथ आलोकित
गणतन्त्र चेतना में स्वतन्त्रता-स्वर है
स्थिर क्रान्ति-कन्दरा में ज्योतिर्निर्झर है

मैं मात्र काव्य का युग-मनु ध्वनित हृदय में
हूँ कला-तरणि पर बैठा भवन प्रलय में
बसी श्रद्धा में ज्योति-उषा की रेखा
वेणी-वाग्दल-उत्प्रेरित विद्युत-रेखा

विक्षुब्ध मीन-लहरी न तट पर आती
उभरी न मत्स्यगन्धा-सी छवि की बाती
उड्डीन पराग-पथ न विकम्पित होता
कोई भी चतुर विहग न जाग कर सोता

रुक्मिणी-रात का भाल-हरण सुलभ-सा
तैरता हुआ जल-चन्द्र मलिन निष्प्रभ-सा
उगत कपोत को बाहें नहीं दिखाता
सन्ध्या-मयूर उड़ कर न नयन में आता

दिनकर के बिना उदास दिवस की लाली
आँखों की पाँखें काजल काली-काली
रंगीन किरण पूना पर नहीं उतरती
मन की मराल में मधु-मंजरी भरती

करि तक छूते घाना पर धूप न गाती
घन-पंक्ति न चपल [illegible] के पग उगाती
बिजलियाँ कड़क कर इधर उधर हो जातीं
अभिमानमयी बाली सुधि में खो जाती

अन्तर-दर्पण में मुख निहारती भोली
अधरों पर आकर रुक-रुक जाती बोली
सिन्दूरित कृष्ण केश को सजनेवाली—
पहचान लिया करती सन्ध्या की लाली

बँधी हूँ लेकिन प्यार नहीं बँधा है
सुन्दरता का संसार नहीं बँधा है
तुम चले गए चुपचाप कपोल छिटा के
साँसों में अपनी सुरभित साँस मिला के

तब से मैं तरल तिमिर में स्नेह सँजोती
सुधि-दीप शिखा पर रात रात भर रोती
मुद्रित पलकों पर अश्रु-भार नित ढोती
भीग प्राणों को प्रतिपल और भिगोती

शापित सुन्दरता की मुकुलित क्यारी हूँ
कुसुमाग्नि-कुण्ड की चिन्तित चिनगारी हूँ
पुलकित पाहुन की प्रेम-प्रिया प्यारी हूँ
बँधी हूँ पर यौवनवाली नारी हूँ

हिलती श्यामिल सघोम निशा की डाली
तम-व्याकुल लोचन में मदिरा की लाली
अन्तःपुर में आता-जाता यौमानी
मैं गीत-गान से मन भीत मनवाली

मैं प्रणय-परागमयी कविता कल्याणी
नीले नयनों में व्याप्त बाँसुरी-वाणी
मैं राग विरागमयी विधुवदना बामा
श्यामा यौवन-ज्योत्स्ना राका अभिरामा

बिम्बाधर पर मन-मधुप-स्वप्न की क्रीड़ा
प्रस्फुटित वक्ष में सुख-मज्जित प्रिय पीड़ा
कोमल कपोल में काम-कुसुम-उद्दीपन
ज्यों सुधि-समीर में चन्द्र सिन्धु चल चुम्बन

मर्यादा शुभ कामिनी नयनहीना मैं
हूँ लिपि-विस्मृत विदुषी कितनी दीना मैं
केवल सुनकर ही पढ़ती हूँ मैं भाषा
भीगी भीगी रहती मेरी जिज्ञासा

नयनों में ही तो नहीं बनी है नारी
कुछ और लिए आई अथवा बेचारी
मन के भीतर प्रेमाकुल स्वत्व छिपा है
आत्माकुल मृदुता का तत्त्व छिपा है

भीतर ही भीतर भर जाती रस-गागर
लहराता रहता नित सपनों का सागर
पवनों की धूम उड़ा करता मृदु मन में
आँधी उठा करती नव यौवन-वन में

विह्वल वसन्त जब बाँहें फैलाता है
मदमस्त पवन सुमनों में घुस जाता है
मन तिमिर-वाटिका में अँगराई लेती
नयनाञ्जन में कुमकुमित कथा भर देती

वस्तुएँ स्पर्श से भी पहचानी जातीं
सुन-सुन कर भी स्वर्णाभा जानी जाती
निःश्वास-गंध से भी तो अनुभव होता
केवल लोचन ही नहीं ज्ञान को ढोता

परदेशी चले गए दो फूल लुटा कर
वे हुए मुदित नयनों से नमन लुटा के
जलती अन्तर-गृह में उनकी स्मृति-बाती
वेणी प्रकाश-शय्या पर नित अँगराती

देवता प्राण-मंदिर में भी आए थे
आगमन निशा में स्नेह-जलद छाए थे
चरणों पर ज्योंही पहला पुष्प चढ़ाया
उल्लसित हृस्ति कुमुदांकुर वन में आया

उस दिन विद्युत-बादल का भी क्या कहना
जब प्राण-संग हो पावस ऋतु में रहना
हिल्लोरों पर हिल्लोर उछलती आती
अन्तर-तरंग पर उर-तरणी लहराती

जब जूही जुही चुम्बन से खिल जाती है
मन की सुगंध तन में भी मिल जाती है
रहना पड़ता है कृष्ण-कुंज में कवि को
ज्यों घनावरण में छुपना पड़ता रवि को

चुम्बित चितवन में भरी चन्द्र चकोरी
मन की व्यापक इच्छाएँ गोरी-गोरी
होती रहती बरजोरी उर की चोरी
जिस दिन थोड़ी भी रस रंजित झकझोरी

पाहुन-परछाईं पर जब प्राण पिघलते
फूलों के दीप किनार वीथि में जलते
बज उठती मृदु बाँसुरी किसी की मन में
स्वर पर स्वर छा जाते जब मुग्ध मगन में

मैं एक मृगी जिसके दृग में कस्तूरी
मैं पहने झूमझमाली पंख मयूरी
मन कानन में ही चमन की बोली
विपिन प्रसून में भरी मदन की झोली

अभिशापित सीता करती कठिन तपस्या
मैं हूँ स्वामी की सरस जटिल समस्या
बनी हूँ पुष्पित बाण फेंकनेवाली
अभी हूँ कपट हृदय देखनेवाली

आनन्द-घोर-उन्मत्त भामिनी हूँ मैं
पावस-प्लावित शुचि शरद्-यामिनी हूँ मैं
कुसुमाच्छादित कमनीय कामिनी हूँ मैं
सुर-सिंचित स्वप्न-सरोज-स्वामिनी हूँ मैं

सचमुच मैं मोहमयी हूँ स्नेहमयी हूँ
ऐसी सुन्दरता हूँ कि विदेहमयी हूँ
आशा-अनुरंजित माया मायरंगी मैं
उद्दाम तरंगों में निष्काम तरी मैं

दो दीप जल रहे मेरे मानस-पट पर
झरते प्राणों पर नित्य परिमण्डित निर्झर
उर्वरा धरा-सी उरस्थली-हरियाली
दृग-दूर क्षितिज पर साध्य उषा की लाली

अभी हूँ पर आँखें पहचान गई हूँ
किरणें कैसी होती हैं जान गई हूँ
पावन पानी हो नम्र नयन की वाणी
करुणा ही मानवता की अमर कहानी

जाने कब वे नालंदा से आएँगे
ज्योत्स्ना के जल से मन को नहलाएँगे
मैं विरह-तिमिर में मिलन-माधुरी भरती
भावना-भूमि को प्रतिपल चित्रित करती

वसन्त की बेला चली हवा चुम्बन की
झूमीं डालियाँ सुकुसुमित यौवन-वन की
वे जा न सके चुपचाप किसी से छुप के
गुदगुदा गए गीतों को क्षण भर रुक के

पूनम की अब निशा में ही वे जागे
पग-ध्वनि सुनकर मैं गई न उनके आगे
अभी हूँ शुभ में एक अशुभ दर्शन हूँ
मंगल बेला के लिए अमंगल तन हूँ

हूँ विधि-विधान-दण्डिता शापित नारी मैं
पापाग्नि-शिखा पर पतित कुमारी मैं
मैं महाकाल में अति अभिशापित सुषमा
मैं प्रलय रात्रि में भ्रमित गगी की उपमा

सुन्दर स्वामी की मैं अनूठी माया
कलुषित है कलुषित मेरी छवि की छाया
संचित सुपुण्य में वात्स्यायन-गृह आई
निर्भर-ममता दीपिका स्वयं मधुवाद

मेरे मंगल भवन में पाप छिपा है
सौभाग्य-सृजन-क्षणों में अभिशाप छिपा है
मैं अमृत-सिन्धु में विष-धारा बहती-सी
मैं मरु की मूर्च्छित कोयल कुछ कहती-सी

मैं द्वन्द्वमयी दो साँसों की सिहरन हूँ
मैं प्राण-पद्म में बन्द करुण क्रन्दन हूँ
मैं चन्द्र-वधू चन्द्रिकाहीन सुकुमारी
यौवन-मधुवन की मुरझाई मैं नारी

नित वह्नि-ज्वार उठ आती अन्तस्तल में
दामिनी कौंध उठती ज्यों बादल-दल में
कल्पना-गरल पीकर मैं झूमा करती
तप्ताकुल तन पर ज्यों कलिकाएँ झरतीं

जिस दिन बाला से वधू हुई जीवन में
यौवन-तरंग उठ गई अचानक मन में
रञ्जित उमंग में छाई कुछ रंगीनी
भीतर ही भीतर हुई भावना भीनी

मृदु अधरों पर मुस्कान मधुर जब आई
मैं सुख-सुहाग-मञ्जिमसा तनिक सकुचाई
फूली जब उर-उदयाचल पर अरुणाई
रुक गई द्वार पर ही भरी तरुणाई

जिस क्षण दिनमणि न दग मुद्रित दृग-दल
हो उठ सुविकसित जल म हो नीलोत्पल
मैं प्रम-परागमयी कम कुछ कहती
बिन बोल भी म कय तक व्याकुल रहती

छुप गई छाँह में विह्वल बाँहें लेकर
रुक गई राह म आह किसी को देकर
भगवान ! नेत्रहीना म करो मारी को
क्षमा न दण्ड दो सुति की पुण्यारी को

तम-तरणी में मन मरो तड़ित-छवि-कन्या
अधे योवन का दो मन रजनीगधा
म स्वगमयी सुरभिता तिमिर-कन्या हूँ
म अब उगती फिर विषण्ति कया हूँ

शव हूँ जीवित म भव म पीरमयी हूँ
म स्वयं अँधरी रात अपारमयी हूँ
म मग-सुहाग का भार सम्हाल न पाता
शाड क्या ममम थिमना म अनुमानी

मम-सी व्यापर कल्ना मृग-सा कामी
म काल त्राप की व्ययमयी सुग-स्वामी
म तिमिर-गभ में कर्यागत बिवाहित कणी
म हिमनोसा म डरी मृदुम मृगनयनी

अयि सुखद स्वाद से पूर्ण दुखद रमणी मैं
हूँ सूर्य चन्द्र से हीन एक अवनी मैं
पीड़ा का अनुभव नहीं हुआ शैशव में
पर व्यायामास मिल गया मुझे नव भव में

मेरी प्रसन्नता प्रसव-पीर-सी आती
मैं अश्रु नयन से सुख-शिशु को सहलाती
मेरे विराट तम में प्रकाश छा जाता
चिर परिचित कोई रूप एक आ जाता

क्या उसी ज्योति के लिए दृगों में तम है?
कुछ दीख रहा है मुझे कि केवल भ्रम है?
मैं स्वप्न सजानेवाली पीड़ित कविता
मैं भूल गई हूँ कहीं सुलोचन-सविता

बाघाम्बरी

दीपित वेणी न जिस दिन दर्पण देखा
दिप्यता भाल पर चमकी साध्या रेखा
बदी मृग-दृग में दो आँसू अकुलाए
ज्यों नयन-स्वप्न में नयन-सीप खुल आए

नूपुर के बोल निकल आए नव पग से
मल्हार घटा उमड़ी मन-वीणा-मग से
कुसुमित कदम्ब-सा झूम उठा तन कोमल
हो गईं साँस की लहरें चंचल-चंचल

कामना-कलापी-मग्न झूल मन-वन में
हो रही छन्द की वृष्टि दृष्टि के मन में
शृंगार-सृष्टि में हर्षोत्सव की राका
उर-अम्बर में प्रणयातुर मधु-बलाका

चली अनाम क्रीड़ा में लीन अचम्भी
आँगन में माधव्य विपिन की गचित कली
आनन्द-हिलोर म मन-मृदंग का वादन
श्रावण-झकोर में अश्रुपूर्ण आराधन

जीवन बहुला यौवन में जितना रस है
अपनी आँखों में व्यर्थ यही पावस है
निशि-अभिसार में भी आनन्द-दिवस है
जीवन में सरस रस है रस है रस है

जामुनी यामिनी-पथ अचन्द्र
पीताभ अस्तमान पग अतन्द्र
रस रहित भाव

नयना की नीली बिजली स्थिर
मेघोत्पन्न-घिरित दृष्टि-मन्दिर
जल नीर-नाव

दूराभाय अपूरी विरह-दिली
गर्भेन्दु-गोद म उदम पिकी
नीरस रव रति

जजत म तरुण-उर-आयवृन्द
नि:शब्द चन्द्रमालिक अलिन्द
अति मूक प्रगति

ज्यों रवि-वियोग में रात्रि-कमल
शशि-हीन चकोरी-चित विरल
निष्प्राण ग्राम

निर्वासित यम अभाव-मग्न
ज्यों अप्सरा की मन यमु मग्न
ज्यों घन घाम

राधा-सी क्षत रेखा उदास
लोचन-मन में कवि-मिलन-प्यास
उच्छल मन-मृग

प्रत्याशित पथ-दीपाभिषेक
संतुलित न स्रोतस्वी विवेक
विभ्रम में दृग

प्रतिपल उत्कंठा अस्त-व्यस्त
रह-रह कर नित अभ्यस्त हस्त-
खोलने द्वार

शृंगारहीन तरुणाङ्गी तन
ज्यों अनल-राग अरुणाङ्गी वन-
पुष्पित पुकार

रेखा बनी सुधि-सम्मीलित
नयनानुभाव प्रेमाश्रु स्खलित
इच्छा अधीर

प्रार्थित बिछोह-विश्वास-हृत
चकी-विलाप रत प्रीतिस्पृष्ट
धृति-पद्म-नीर

अस्तमित बिम्बित विरह-पथ
जाग नव सम्भव मिलन-हय
रंगा बहनी

कल्पना-चरित-पट खोल-मोल
मन-ही-मन मन में बाल-बोल
सुधि में बहती

उर-अंचलि में संस्मरण-कुटज
भीगी श्वासों में ध्वनित मुरज
प्राणारम-तान

यौवन-कदम्ब पर दगापात
भावातुर पावस रस प्रगाढ़
श्यामल वितान

उल्लसित मधु-वर्षा-मंगल
मर्मरित ग्राम-गीता का चल
हिलमिल हिलोर

घन-घन में घन विद्युत-विलास
चन्द्राम्बुज-गंधित दिशाकाश
रिमझिम झकोर

रक्षा - अन्तर्मुख प्रश्नोत्तर
मन-मारुत-पथ में मेघ-लहर
पक्षिल प्रवाह

उर-पिंजर से सुर-उड्डीयन
स्वर रमण राग पर शब्द चरण
रस-रणित राह

संकल्प-कुण्ड-हवनाग्नि ज्वलित
समिधा-साकल्य सुसमोचित
कामना-ध्यान

तन्मय कुन्ती ज्यों रश्मि-स्नात
रंजित सुस्मृति से दीप्त गात
त्यों ऊर्ध्व प्राण

दार्शनिक द्वन्द्व-दग-आकांक्षा
स्पर्धा में ज्यों मीमांसा-चाप
मिथ्यात्म धुत

ज्यों जनक-सभा में गार्गी-गति
ऋषि याज्ञवल्क्य-उत्तरापत्ति
रेखा प्रबुद्ध

आत्मावाहन में लीन हृदय
अन्तर्हित यशोधरा तन्मय
गभीर तीर

चहुँ ओर चारु चेतनोन्मन
उद्योत भाव-संवेग चयन
अशरीर चीर

श्लोकित पग-ध्वनि सुन सघन प्राण
उच्छ्वसित वायु में मलय-घ्राण
शतदला वृष्टि

तन्द्रिल तन पर ज्यों करस्पर्श
एकात्म-कुंज वार्ता-विमर्श
शृंगार-सृष्टि

पुष्पावृत काषाय-केश
वेषानुकूल श्वेतांग-वेश
सजनी दृगी

कंचुकी-कमल पर रत्नहार
मृदु भुज-मृणाल में अलंकार
भावना मृगी

नूपुर-शोभित स्वच्छन्द चरण
मन में उमग ज्यों उषा-हरण
किंकिणी ध्वनित

कल कम्बु-कंठ में लय प्रसन्न
रस-तालबद्ध नख-शिख-नितम्ब
मुख चन्द्र चकित

दृग बार-बार दर्पण-सम्मुख
कलिकाधर पर मधुरासव-सुख
चित्रित कपोल

कामिनी-दामिनी मणि-मंडित
सस्मित मुक्ता स्वर्णांकित
मृदुलास्य लाल

कोमलता में कुसुम हिन्दोल
प्राणानिल में छवि-गन्धित बोल
यति मध्य मन्द

अनुराग-निमज्जित तन-तरंग
इच्छा स्वयं मुखरित मन-मृदंग
वन-विहग-छन्द

ऋतुबन्ध-सधृत रेखाभिव्यक्ति
अनुराग-भक्ति में आत्म-शक्ति
ऋजुमय विरक्ति

सौन्दर्योज्ज्वल मन मुखमण्डल
सागर पर ज्यों पूनम-पाटल
स्थिर अनासक्ति

ज्योतिर्मय प्राणान्तर समस्त
प्रतिबिम्ब-स्कन्ध पर वरद हस्त
निर्मल निबन्ध

प्रस्फुटित पद्म ज्यों रेणुयुक्त
सम्पूर्ण स्नेहमय देह मुक्त
शुचि कला-गाथ

चित्तोत्कप आनन्द-मग्न
ज्यों प्रकृति-पुरुष-सम्मिलन-लग्न
हृमिल निवृत्ति

देवत्व-भाव-विन्यास सत्य
अम्बर-पथ में उड्डीन स्वस्थ
तेजस प्रवृत्ति

संचित आत्मिक बल अजस्रात
प्राणों में सारस्वत प्रभात
परिचित दिगन्त

अरुणान्तरिक्ष में रसोल्लास
रागात्मा में रमणीय रास
मन मधुवसन्त

उत्पला कला-वासिका प्रखर
उद्घाटित अन्तर-स्वर पर स्वर
अनहद निनाद

आयपण में अनुभूति लिप्त
ज्यों ज्ञान-गिरा म हृदय दीप्त
पावर प्रसाद

चिन्तनारोह अवरोहमयी
गातिका-स्तामृत विधु-त्रिपदी
मूर्च्छना मधुर

एकान्त धारणा-धरा शान्त
एकाग्र चित्त ध्यानोपरान्त
मामा में मुग

निष्कामालिंगित मन से मन
हृवनोमुक्त तनु-अनुराग-मदन
ज्वालाभिसार

नेपथ्य-निशा घन-रण-अधीर
द्युति-कांच-किरण-पुंजित शरीर
नभ-भ्रम-प्रसार

मद वाहित सुधि-सरिता-जल
सुख-स्रोतान्दोलित अन्तस्तल
परिमलित अनल

प्रतिबिम्बित पुष्पित मधि-प्रीति
गर्जित निष्पलक प्रतीति-गीति
कलि-कोलाहल

निज अनय प्राण-तट अट्टहास
हर्षोन्मत्त प्रत्येक श्वास
प्राणात्म-कथा

नयनालिंगित इंगित-भाषण
उर का उर से चिर आश्वासन
किंचित न व्यथा

मित आत्म-चरण मित हृदय-हरण
दिक-पछी-सा शशि-पथ-विचरण
मगन नयन

सिकता पर कम्पित कुसुम-स्वर्ग
क्यों प्रेम-काम्य का तृप्ति-सम
तन तरु बन्दन

म मिलनमयी विरहिणी-अणु
गुन्तम-मग पर भय भ्रम रणु
स्मित ऋषा-भाम

आत्मा रति व्रीडित बदन विमल
मिन नोम-श्याम में गमा-जम
दृग पद्म-नाम

म   स्वस्थ-सती-सगति-सुनीति
अलजाम्रित भक्त रम्य रीति
हूँ काव्य-कला

पावन पराग कलिका-कर में
करुणाम्बु-कथा शाश्वत स्वर में
म चिर सजला

वेणी की आत्मासिका अमिट
अणिमा-सुर मृदु उर-अन्तर्हित
म मौन मुखर

आकाश-पाश भू-भग्न   भाव
शब्दाम्बुधि की   नक्षत्र-नाव
महाशु प्रखर

दयनीय न हो दाम्पत्योत्पल
परन्तु न हो मीनाक्ष विकल
कामना प्रबल

रचनात्मक   घनीभूत   घटना
ज्योतिर्लोचना   सलिलवसना
मृगिम पुष्कल

सामान्य सुखों से दूर दृष्टि
सौरभ-सागर पर साम-वृष्टि
क्षम पीर-तीर

सैकत-सन्दर्भ-ममित्र प्यास
स्वाभाविक असमयस प्रकाश
अभिहृत सुनीर

दारुण सयोग रहस्यात्मक
ज्यों सलिल-गर्भ में स्थिर सम्यक
सतप्त दाम

गाढ़िल छवि में रवि स्पर्शनिहित
पीड़ा में प्रभु क्रीड़ा स्पन्दित
मादक बोम

स्फटिकी-लता-सदन बनी
समवेत पल्लवित-सा सुमनमनी
मधुमती ऋद्धि

शृंगार इच्छा बोगार
मायापुरिता सुपि-सनुसार
सम्पत्ति-समृद्धि

समय न अवदन अमर सुमन
विक्षोभ-विमूर्च्छित कवि-जीवन
करुणिम कवित्व

कल्पना-सिद्धि-हित कठिन कलश
अनिवार्य अमृतमय अनल-कल्प
सीता-सतीत्व

केवल अनुरक्ति नहीं अनुभव
रती विरक्ति भाषा-कलरव
तब काव्य-कर्म

सभय-स्वस्ति-सताप जटिल
अन्वेषित आत्माकाश अखिल
निरपेक्ष मम

निष्पुन्त कली-सी मैं कुलीन
आश्वस्त सुरभि-स्वर-समीचीन
रगीन राग

संस्कृति-उपत्यका-उत्स-दीप्ति
स्वप्नान्तहीन तारुण्य-तृप्ति
रसपूर्ण त्याग

आलिंगन में ज्यों अनासक्ति
प्रत्यक्ष गिरा-उन्मुक्त भक्ति—
सुषमा-सी म

ज्यों जलद-बाहु में विद्युत-छवि
काव्यान्तर्गत काम्योचित कवि—
उपमा-सी म

दाडिम स ही म सत्ता-सग
ज्यों रत्न-सिन्धु-ज्योत्स्ना-तरंग
नीलम निधि में

पूर्णिमा पूत मणि पत्रावलि
म मगत-मल्लिका-आभाञ्जलि
स्पन्द-दिनि में

निम चला रत्नाम्बर घन-ध्वनित
सगति-गति पुष्पायित परिहित
उमपा सुर

सम्यग-शक्ति-अभिव्यक्ति अगम
माधुर्यावृत साहस् सगम
यायावर सुर

प्यारी ऋतम्भरा मधू-कला
म स्वप्नसुन्दरी स्वत्व-सला
कल्लोम-किरण

सज्योति काम शृगार सघन
मोहक बसन्त-विम्बित जीवन
उर थिर चतन

म आत्ममुखी आभा नवीन
भाषा-सरिता की किरण-मीन
शोणित समीर

कवि का आवाहन करती नित
सचय-दीपित दृग आत्म-चकित
मन-स्वन अधीर

झिमि-झिमिकि-झिमिकि रिमझिमी रोर
चहुँ ओर घोर बादल अछोर
मन मार-मत्त

झर-झरर-झरर जलधर-निर्झर
दादुर-झिंगुर-मालातम स्वर
द्रुत बज्र-राग

जाऊँ लहराऊँ गाऊँ मैं
पायल प्रसून बिखराऊँ मैं
आगमन-काल

मलयज प्रणोदित आशाश्रव
यह हूँ सबसे सबल सुखद
हर्षांशु-ज्वाल

बादल-विभोर नाचत-मयूर
घन-स्नानमग्न मन-मन-मयूर
पथ सलिल-मुकुर

पार्थिव प्रसार प्राण प्रसन्न
वाणी-विनाद मानसा-मग्न
जुम्भाम प्रचुर

दीपोत्सुक श्यामल सान्ध्य सघन
ज्यों बिछुड़ी वेणी-वात्स्य नमन
गोधूलि-दृष्टि

निज नीड-ओर मुखि-विहगवृन्द
मल्आत्म-कोष में मन-मिलिन्द
स्थिर सुरभि-सृष्टि

मेघा मल्हार में मृदु-समीर
पीड़ा-विहीन तन-शान्त तीर
कोमल मनीर

दूरागत वंशी-तान सरल
अवसाद रहित स्मित अन्तस्तल
भ्रू-भाव धीर

गृह-गृह में दीपामा-विलास
सरिताम्बर में बस चन्द्र-हास
सम्बर किसान

सानी-पानी का कर उपाय
गृहिणी प्रसन्न दुहती गाय
निपकिप बथान

वेणीपति-सम्मुख मृदु रेखा
मन न मन को तन्मय देखा
हसित -आपण

निःशब्द मौन शशि-मुख-मुद्रा–
पी रहा अमय आनन्द-सुरा
मदनीय वदन

वेणा प्रिय पग पर गई लोट
अनुभूत अविचल अपु सार
सिहरा शरीर

घर में प्राणाभ-पीयूष-कलश
उन्मुक्त बन सुन पात्रा-मन
सुग-सिंचन पीर

अन्तरतर में श्यामामृत भर
आई मैं ब्रह्माणी-सी पर
खुलकर न खुली

दमकी न दामिनी-स्नेह-शिखा
झमकी टुक तन्द्रिल स्नेह-निशा
आँखें न खुलीं

कर सकी न तन पर मन-प्रयोग
दृश्याञ्जन में भी दृष्टि-वियोग
दर्शन अतृप्त

वातायन पर विधु ज्यों धूमिल
गुम्फित उष्णीष-विभा झिलमिल
उर राग-लिप्त

सीमान्त असीमित छद्म-छटा
ज्यों कनक किरण में कुम्भ-घटा
स्थल व जल पर

म मन क्षितिज मारती मुखर
ज्योतिर्वीचन में यौवन-स्वर—
प्राणोत्पल पर

ज्यों स्वय सत्य सपनों म स्थिर
कर्मों में मर्म प्रणव-मन्दिर
म प्रभा-सुधा

विधि-प्राण-बीज-अकुरित लता
कल्याणी म वामी-वनिता
नभ-मणिमुग्धा

अन्तराभिमाणिका आत्ममूर्ति
म इन्दु-मिन्धु-अमि-छन्द-पूर्ति
पिगम प्रवाह

म काम्य-कम्पमा-दान्ता
अन्त गनिमा-रूप-अमित यौ
ऊर्मिल अया

निस राग-विरागोच्छ्वसित देह
मूसलित गय गति-गीति-गह
सस्वरारोह

सगम त्रिलोक सोहम् प्रभास
देवता मनुज-मन सन्धि प्यास
तनमुक्त मोह

शनि भ्रान्तिग्रस्त रस-सृजन-काल
सम्प्रति निनीष रवि चन्द्रजाल—
सुनता स्वर म

सचित प्रतिपल अमरत्व शक्ति
क्रमश सशक्त काव्यात्म-भक्ति
शब्दाक्षर से

अनुभूत इच्छा-आसव निज पी
बढ़ रही स्वत भाषा विटपी
युग-ऋतु रंजित

अनुकूल पयाम्बर का प्रवाह—
उगलेगा अन्तर-अवनि-दाह
धृति निर्वासित

जैसा तप वैसा फल अवश्य
ज्यों श्रम-शोभित सम्पन्न शस्य
विश्राम अटल

जय-ज्योतिर्मय ज्यों दिग्दिगन्त
रस-रूप-मधुमय हो वसन्त
दर्पित भूतल

प्रेरिका प्राण रसा प्रबुद्ध
अप्रौढ़ शिल्प-विधु-वस विरुद्ध
धृतिमयी चाह

आकांक्षित काल-अमिट रचना
प्रतिमा-कल्पना किरणवसना
इंगित अगाह

निःशब्द नयन-लिपिकार सबल
मालिनी पिरोती ज्यों कलि-दल—
तन्मयता में

गति-पथ-निरंकुश कला-स्रोत
पिंजर-विहीन ज्यों मृदु कपोत
निर्भयता में

स्वप्निल रेखा रति-निधि-लज्जित
रस वेणी-युग में ज्योत्स्नामृत
उर-अनुमानित

मन में प्रसन्न सतोष एक
कान्ता क्रीड़ा-गति वस-वेस
ज्यों जलद-तड़ित

अनुभूत हृदा-आसव नित पी
बढ़ रही स्वतः भाषा-विटपी
दृग मधु रंजित

अनुकूल वयाम्बर का प्रकाश—
उगलेगा अन्तर-अवनि-हास
कृति निर्भासित

जैसा तप वैसा फल अवश्य
ज्यों श्रम-शोभित सम्पन्न शस्य
विश्वास अटल

श्रम-ज्योतिर्मय ज्यों दिग्दिगन्त
रस-रूप-गंधमय हो वसन्त
इच्छित भूतल

प्रेरिका प्राण-रेखा प्रबुद्ध
अप्रौढ़ शिल्प-विभु-बल विरुद्ध
धृतिमयी चाह

आकांक्षित काल-अमिट रचना
प्रतिमा-कल्पना किरणवसना
इंगित अगाह

निःशब्द नयन-लिपिकार सजल
मालिनी पिरोती ज्यों कलि-दल—
तन्मयता में

गति-पथ-निरंकुश कला-स्रोत
पिंजर-विहीन ज्यों मृदु कपोत
निर्भयता में

स्वप्निल रेखा रति-निधि-सञ्चित
मत्त मणी-दृग में ज्योत्स्नामृत
उर-अनुमानित

मन में प्रसन्न सतोष एक
कान्ता क्रीडा-गति देख-देख
ज्यों जलद-तड़ित

बालाम्बरी

कल्पना कामिनी तनु कदम्ब
गति-तालबद्ध कटि पग नितम्ब
भुज में तरंग

रुनझुन-रुनझुन-रुनझुन नूपुर
उर्मिल-उर्मिल-उर्मिल मद उर
सुर-स्वर अभंग

दृग में इन्द्रासन देव-सभा
मणिमय प्रासाद-विलास-विभा
किन्नरी परी

सुन्दरी-सुरा-सौन्दर्य सकल
मधुमत रूप राका निर्मल
निखरी बिखरी

आया समक्ष श्रुत शाप-यक्ष
तत्काल शान्त साधन-कक्ष
सखा ज्यों स्थिर

झट पोंछ भाल से स्वेद-वारि
खिलखिला उठी स्वच्छन्द नारि
ज्यों प्रभा अचिर

प्रारम्भ प्रथम यात्रा-विवरण
ज्यों मेघदूत में घन से मन
भू-गगन एक

ज्यों कमल नाल-शोभित मराल
बिम्बित शतारुन-नील ताल
त्यों पथ-विवेक

नालन्दा-मिथिला-मधुर कथा
सुन ध्वस्त विरह-मंजरी-व्यथा
ज्यों शिशिर-अंत

नूतन अनुभव नव ज्ञान धार
संकल्पपूर्ण अभिनव विचार
मुख में वसन्त

अनिवार्य भ्रमण देशाटन फिर
समय-तरंगों पर तिर-तिर
युग चरण-तरी

सोद्देश्य अपेक्षित नाट्यालय
जनपद में हो गतिशील विजय—
दृश्यारम्भ भरी

अवदान यही हो अब रेखे
दृग भारत का भूतल देखे
सरस विभूति

ढूंढूं मैं आर्यावर्त-हृदय
वर्षों तक करूँ नित्य संचय—
यात्रानुभूति

गंभीर गिरा-रवा यह सुन
सत्वर प्रसन्न पुष्पाक्षर चुन—
प्राकृत बल से

उमड़ी-घुमड़ी घन-घटा घोर
कड़कड़ित तुरत तड़ितोर्मि-रोर
नव नभ-तल से

कवि-सम्मुख द्युति-दर्पण नवीन
भारती मेघ-मल्हार-लीन
उड्डीन हंस

विद्युत-वादित आकाश-वीन
आनन्द-ज्योति अन्तरासीन
मुन्नारम-अंश

चतुर्थ सर्ग

सवेग-सिन्धु पर स्वत्व प्राप्त
निष्कुण्ठित अन्तर-उष्म वात
तजम-ताण्डव-रत मम-महत्
मानस-द्रुम में निक्षेप-देश
दिक्-दिक दिगन्त
म्लात् रश्मि-स्तूप

सकल्प-पद्म पर प्रखर चरण
कम्पन-विहीन विक्रम वामन
फेनिल उमंग-उच्छ्वसित श्याम
कामना-शृंग पर कान्ति-दाम
उत्पन्न व्याम
स्थित विरामाम

सांस्कृतिक प्रसव में शिल्पी मनु
चिन्तना-व्यास में यौवन-तनु
विस्फुरित प्रभा प्रज्ञा-प्रेरित
ज्योति स्मित स्मृति विकल्पित
स्वर स्वर-अर्पित
लिपि-उल्लसित

कम्पित तरंग-यात्रा अभंग
दृग-नीर-नाभि में विष्णु-रंग
भावाभ्र प्रखर कल्पना स्वप्निल
अन्तराकाश में सस्तानिल
चिन्तन प्रहिल
शुचि रुचि पमिल

परिभ्रमण चलता मत उन्नत
सम्मिलित अखण्ड मनोरथ-रत
गुञ्जरित पराक्रम-यजन-गान
अध्ययनशील अनुभव-विधान
शब्दात्म-ध्यान
वाणी-विराम

प्रणाक्षर-सार स्वर-अर्थबोध
अनुभूत सत्य रत आत्मशोध
मनुस्मित स्वेच्छा निर्वाचित
मृणनाम सदय नियमित कृत
शिव मन-शोभित
पथ पग-शोभित

जागा अभ्युदित जननायक
अँगराया अन्तर-निर्णायक
नाचा गृह-ग्रीष्माकुल मयूर
मन-अनिकल्प तन से सुदूर
दृढ़ विस्प-सूर
क्यों चकनाचूर

श्रुति-पथ पर पश्चिम उपालम्भ
निशि-दिशि में झुठ्ठिगत दनुज-दम्भ
पर प्राण-दीप पर साम-गान
तम-अट्टहास-विम्बित विहान
मित श्रमण-ध्यान
मा द् या नि या न

इच्छाएँ विकल अरण्यानी
नित उत्प्रेरित रेखा रानी
निस्सार नहीं पद्मिल पुकार
उद्वेगित मथित रत्नाकार
जय जयति ज्वार
उच्छलित धार

मादक आशा का स्वत्व-हरण
ज्यों चन्द्रलोक पर यन्त्र चरण
कल्पनाचक्र गति-सचालित
दिव्यान्तरिक्ष-पथ अक्षांकित
नक्षत्र चकित
भावोत्स भ्रमित

अपलक युग में विधि-वसुन्धरा
प्लावन प्रभ संसृति स्वयम्वरा
युग-सम्पादन की काम्याशा
व्यामोन्मुख अब विराट भाषा
स्मित जिज्ञासा
अन्तस् प्यासा

कहते सब मुझे प्रचण्ड प्राण
निशि-कल्पित कला में सुप्त ज्ञान
अब छिन्न-विपुल-युति-रहित माल
सम्पर्क-हित शंकित मन-मराल
नित जरा-श्वास
झक-झिझक-भास

मैं धन-कलंक का तम-मथन
अनुराग-भरा का पाप-पथ
अम्बर-विहीन अभिनय-अनग
तारुण्य-वायु-स्वर तरंग
नित राग रंग
मधु कन्दु प्रसंग

षोडशी-स्पर्श पर कर अतृप्त
उद्दाम उरोत्सव तिमिर-लिप्त
सदीप्त वपु पर वज्रपात
कौमार्य-स्पर्शी क्या अनाघ्रात ?

दतुरित गात
सदेह स्नात

पुष्पा भार्या मदिग्ध-हीन
ज्यों जनक-सुता रवि-बिम्ब-लीन
मृदु स्मित रमा-संग सम्भाषण
ज्यों थी राधा-रुक्मिणी-मिलन

उत्फुल्ल वदन
मनमोहित मन

स्वीलालहृत गेसा पुनीत
कापाच कला-यज्ञाग्नि प्रीत
गार्गी ग्रीवा में गगन-माल
मणि-दाम्भ-रूप-राका त्रिकाल

नव उषा-भास
शोभन विलास

इन्दीवर पर क्यों गिरा मुखर
रेखा वीणावादिनी प्रखर
अधरों से अमृत-फूल बिखरित
कमनीय दृष्टि से किरण क्षरित
पद-तल पूजित
नूपुर रंजित

प्राणों में सतरंगी प्रकाश
मनस्थल-जल पर ज्योति-हास
शृंगार-सरोज भ्रमर-भूषित
माधुर्य-सुरभि रस सिन्दूरित
कामना कलित
भावना ललित

उस सुन्दरता पर मुग्ध नयन
दिव्याकर्षण से गद्गद् तन
यौवन में नित ज्योत्स्ना-हिलोर
आनन्द-सिन्धु नभ-सा अछोर
मैं छवि-विभोर
चितवन चकोर

तरुणाभ्र-तिरोहित तमसता
नेत्राञ्चित शकुन्त दृष्टि-रुता
मन-मुकुर-मोहिनी इन्द्राणी
मध-विजडित यथा देवयानी
मृग - मत्राणी
वररुचि-वाणी

पुष्पक - पथ - दर्शन परिप्रेक्षण
उत्समन-काल निष्प्रभ नमन
उर-पुरातत्त्व में सुर-प्रघोष
वैदिक विकास-परिचय-लेख
सुविविद्ध श्लेष
क्षत देव-दश

सारस्वत-पुर-प्रतिमा अपार
मानस ऋषिपथ पर स्वस्ति-धार
हिमगिरि पर हरित गंधमादन
नीप भीमम-जल का वपन
अरुणाम्बुज - वन
काव्यादि पथम

यद्यपि अलभ्य तट-मग क्लिष्ट,
संचित समस्त संस्कार-इष्ट
तेजोमुख भास्वर मटट वाण
दृग-अम्बर में दर्शन-वितान
अरुणारम मान
चिर भासमान

रंगों में नित नव रूप-रंग
प्रतिपल परिवर्तित तम-तरंग
रक्तिम सन्ध्या ऊषा-दुकूल
बादल में ही चंचल-फूल
स्थिर केन्द्र-मूल
मन रे! न भूल

आस्था अनादि अन्तहीन सत्य
क्षणारम अनुपमा सृष्टि सत्य
ऋतुमयी धरा रंगीन तत्त्व
भवगत अखण्ड भूमा-महत्त्व
विधि रंग-स्वत्व
गति-शिल्प सत्व

प्रिय प्रकृति अनन्त कला-कानन
अणु-अणु में अनु-प्रतिनादित मन
संहार-सृजन चेतना ध्वनित
अति गूढ़ ज्ञान आर्यान्वेषित
ऋषि दृष्टि अर्पित
द्युति-ज्योति गर्वित

तादात्म-सिद्धि अक्षम सम्भव
अनिवार्य स्वत तन्द्रिल अनुभव
निष्काम योग अत्यन्त जटिल
अस्मिल विभूति ही द्युति प्रेमिल
जब मन हुसिल
जीवन प मि ल

मेरा यौवन अस्थिर अधीर
प्राणों में मत्सर-कला-पीर
मान्यता में भी लगा न मन
भाया न शून्य को गरिम बन
म ईश्वर धन
विद्युतमय तन

उठ सका न मुझसे समग्रय
आकांक्षित सात्त्विक कला-पथ
उड़ने को आकुल मुक्त विहग
अन्तर विशाल भारत-अभ्यग

जगमग जगमग
साहित्यिक पथ

श्री शीलभद्र कुलपति उदार
प्रज्ञा-प्रसन्न मन निर्विकार
भ्राता उडुपति-सम उज्ज्वमान
ज्यों अश्वघोष-शिल्पाभ प्राण

मानव महान
नित तत्त्व-ध्यान

भ्रातानुकरण दुस्तर अतीव
हिल गई कलाकुल दीप्ति-नींव
न नाट्यार्जुन न हवन-द्रोण
न सात्त्विक न तात्त्विक त्रिकोण

वे सिन्धु मौन
न मात्र क्षोभ

मुझ पर विदेह का अतुल स्नेह
रक्षित रंगोचित गीति-गेह
उडु जनक-तुल्य जाज्वल्यमान
अरुणाभासित करुणा-निधान
गुरु ज्ञानदान-
रत महाप्राण

नाट्याभियान-हित मैं प्रस्तुत
उत्कंठा-मग्न यवनिकायुत
पात्रों का पूर्वाभ्यास प्रखर
सम्प्रहित सकल साधन सुन्दर
हर मित्र निडर
हर कर पर कर

मेरा नवयौवन रंगमंच
रसमय रस-रंजित स्वर प्रपंच
श्वासित अभिनय-उत्थान-पतन
स्थिति-अवलम्बित गति-उत्कर्षण
नयनों में घन
घन में गगन

यौवन जीवन का मधु-वसन्त
गल्पोन्मत्त दाड़िमी दन्त
देहाङ्ग दीप्ति में कम्र-फूल
श्वासों में एच्छिक मध-भूल
क्षत दृग-दुकूल
प्रिय पथ शूल

सुख-दुख सामासिक प्रच्छदपट
अनुप्रास-कल्प-गुम्फित मन-तट
स्मृति-वास्तुकला चिरव्याधि-सजला
तृष्णा-तरंग तत्क्षण अबला
अमला कमला
हिम हिय धवला

प्रतिपल उत्कंठित कला-काम
ज्यों तड़ित-तरंगित तिमिर-ताम
सक्षीण शिरा में रक्त ज्वार
गिरि-ग्रीवा में ज्यों हेमहार
निःशब्द धार
झंकार भार

अन्तर्निनाद तारुण्य-तरल
स्वच्छन्द कंठ में दाव गरल
उत्तेजित समक्ष सम न विषम
सन्तुलित वासना का संयम
सौन्दर्य सुगम
निष्फल मृग भ्रम

तिमिरासुर-सम्मुख स्वत्व-बोध
अर्पित प्राणात्मा निर्विरोध
हिम-हंसोत्पल-शोभित अताप
गर्वित सारस्वत प्रदेश
निष्पन्द द्वीप
मन प्राण-मृगेश

फिरता जब-जब कामाकार
खुल जाता अन्तःकरण-द्वार
सौन्दर्य-प्रलय-मनु निरांकित—
करता ज्योतिर्वीणा झंकृत
सरसा संस्कृत—
मंगीतामृत

तम में प्रकाश का शक्तिपुंज
कोमलता में कवि-कलाकुंज
कोलाहल में भी शान्ति-किरण
सपनों में स्वर-शब्द-चरण
उर अलंकरण
सुर संवेदन

रण में ज्यों जन-करुणा-निवास
क्रन्दित प्रहार से पूर्णाकाश
सर्वानुभूति रस रत्नाकर
पीयूषी पृथ्वी छवि-सागर
कवि-कर्म प्रखर
शब्दों में स्वर

अज्ञानी प्रतिभा अर्थहीन
ज्यों अपढ़ यौवना ख्याति-क्षीण
विदुषी रस रहित नहीं कोमल
सौरभमय सुन्दर प्रमोत्पल
गति मन्द चपल
'शासित पग-तल

उस दिन अति चिन्तित रुग्ण आप
आसनासीन जनकवि इसान
योजनारूढ़ यात्रा-विमर्श
अंतिम निर्णय सम्बल-समर्थ
अ क्ष य ह र्ष
स्व अतुल अर्थ

वेणी को विद्रुम रसाभास
वदी, लोचन में घनाकाश
अव्यक्त आह में ममित नाद
अवगुंठित असमंजस-विषाद
प्रभु पू ज्य पा द
यह नि र्वि वा द

अभासी कम्पित कमलकली
पखुड़ी प्राण की जली-जली
संताप-सुगंध-गति शिथिल-शिथिल
अनुमय सान्ध्य आभा झिलमिल
तम-पथ फेनिल
निशि-दिशि सर्पिल

उत्कल-कपाट-सा मुखमण्डल
गंभीर पार पाताल अतल
पुष्करावर्त अम्बु नेमित
सभाग्य सफलता सस्याकिञ्चन—
विरहोत्पीड़ित
अकम्प पीड़ित

प्रगणा-प्रादव में मनस्तत्त्व
म्लान प्रभ प्रतनु प्रालेय म्लान
शून्याकुल म्लान नि:शब्द शान्त
आत्माविन लाषित प्राण प्रान्त
मृत भस्म भ्रान्त
ज्यों तन-समान्त

पतन-रहस्य रति गोपनीय
मार्मिक माया-ध्वनि मानवीय
दाम्पत्य-कला शिव-गंध-स्नात
उदयाचल पर मंगल प्रभात
मन-स्वर्ण गात
जलजात वात

अनभिज्ञ प्राण में नव विकास
श्री-स्नेह-निरूपित स्वराकाश
आक्षेपहीन इच्छा अगीत
विधि-विष्णु-वीथि पर विरह-नीति
जय स्खलन-जीत
अक्षय प्रतीति

रोको रुको! दार्शनिक दृष्टि
मृदुता से होती करुण-सृष्टि
बनी उर में भी विषम-पीर
नयनाम्बु-सिन्धु-सीमा अधीर
अति नील नीर
सौरभ शरीर

मथित गगनाङ्गन अरुण-अरुण
उड्डीन विहगम तरुण-तरुण
तिमिराभासित दिशि करुण-करुण संध्यानिल
कर मथित स्वर्णाभा समस्त
अस्ताचल पर रवि अर्द्ध अस्त
नापाय किरण निस्तब्ध व्यस्त पथ झिलमिल

तरु-श्रेणी-क्षिति पर रक्त राग
मकर-तप-हित ज्यों सती-त्याग
क्रमशः प्रगाढ़ निशि-तम-तड़ाग मग निष्प्रभ
खिल नीलपत्र पर ज्योति-स्फोट
हुलसा अदृश्य आनन्द लोक
वन-वन में नव सवेग-झोंक जगमग नभ

सद्य पूर्वाम्बर सरस-सरस
निकला निशीथ का काव्य-कलश
फैला ज्योत्स्ना-संगीत अलस दिग्-दिग् श्री
लहराया रूप-रहस्याचल
उत्फुल्ल कुमुद-दलदल चंचल
लख चारु चन्द्र निश्छल निर्मल जय-यात्री

पंचम सर्ग

राकेश-वेश में मर्ममयी
आई रेखा मुस्काई-२
ज्यों शरद्-चन्द्रिका रस-रजनी
गालों पर कुछ सकुचाई-२

पग-ध्वनि वेणी पहचान गई
तड़िदाकुल वर्षारानी-२
उमड़ी घुमड़ी अन्तर्मना
अपिहृत करुणा कल्याणी-२

प्रत्यालिंगित परिणीता को
मकरन्द-स्वर-परिधान मिले
ममता की प्यारी छाया में
सामीप्य-सजग प्रतिदान मिले

ज्यों एक वृन्त पर दो कलियाँ
पालती प्राण-परिमल-प्रकाश
अव्यक्त गूँज से सुप्ति-मुखरित
निभ्रान्त कान्ति का कथाकाश

सुधि-पृष्ठों पर वाल्मीकि-विभा
उर्मिला-कला निधि-विकला-सी
असमय जलदीय स्खलन-क्रम में
नियताभिधापिता चपला-सी

सिर में सुहाग-सिन्दूर नयन में
नव-वसन्त की तरुणाई
अंगों की तरल तरंगों पर
उत्सव-उमंग की अरुणाई

अनुराग-मग्न-अंकित सलज्ज
हिम-हर्षित कुमुद-कपोलों पर
झूमती हुई कामना-निशा
सुर-सिक्त श्याम-हिन्दोलों पर

अमृताक्षर-धार संग्रहित अधर
परिरम्भ-प्यास प्रतिभा कठिन
कनकाभ्र-मंजरी मधु-पथ में
उड़ती-फिरती-सी उर-कोकिल

पूर्णेन्दु प्रभा-सा रूप-कलश
सौन्दर्य-सलिल छलकाता-सा
साकेत-स्वर्ग दीपलता में
सुख-मणि का दीप जलाता-सा

अल्पित कर में कापाय कली
मधु-अगुरुगंध बिखरती-सी
नवस्वत मसृणित श्वासों में
वासन्ती षट्पद गुनानी-सी

कुंचित कुन्तल पर कुसुम-गुच्छ
अलि का आवाहन करता-सा
नूपुरित पद्म-पग-आकृति में
रागानुराग-स्वर भरता-सा

किंकिणित मेखलावृत मृदु कटि
स्तमुनित गरिम-रस अयनी-सी
उन्नत ग्रीवा पर इन्द्र-दृष्टि
अभिनन्दित प्रथम प्रणयिनी-सी

सर्वस्व त्याग कर भ्राता-सँग
        प्रासाद-मार्ग से जाता-सा—
देखा वेणी ने लक्ष्मण को
        सागर-समान लहराता-सा

वातायन पर नव मग्न वधू
        पति-चरणचिह्न-लिपि पढ़ती-सी
मसृण भविष्य की मिलन-मूर्ति
        प्रस्तरावरण में गढ़ती-सी

निर्वाक स्वामिनी अश्रु-सुधा
        भीतर ही भीतर पीती-सी
उर की गगरी सरयू-तट पर
        र रीती रीती रीती सी

मेरी भी कुछ ऐसी ही स्थिति
        रेखे। मैं भी अकुलाती-सी
उमक आने क पहले ही
        बुझती-बुझती मैं बाती-सी

य कला-कर्म रामाभ-मग
आत्मातुर भौतिक भ्रमण-हेतु
निर्मित होगा अत नभो में
विम्बाम्बर का सुरचाप-सेतु

रवि रजनी सीता-प्रभा-प्रसून
बिखरेगी तू गति-छाया सी
एकाकी म स्मृति-द्युतिमना
छिटकूँगी सस्मित माया-सा

रोगान्ध नयन अश्रु-सगोपित
प्रिय-पथ पहचान गई हूँ मैं
रगों की रमण-तरगों पर
यौवन को जान गई हूँ मैं

अधाक्षि कालिमा-कैकेयी
प्रेरणा-ज्योति बिखराएगी
ज्योतिष वचना-चित्रलता में
मन-तन-सुगम पर गाएगी

विद्युत-प्रसून की मालाएँ
गूँथूँगी मजल प्रतीक्षा का
आई है मग जीवन में
समिर पावन-प्रदा परीक्षा की

हर्षित हो उनका उन्नत मन
छन्दायित गति-छवि गढ़ता-सा
कालार्पित हो कल्पनापुरुष
पथ चन्द्र-शृंग पर चढ़ता-सा

प्राक्तन पलाश-प्रतिभारुण दृग
वासन्ती यश-परिधान बने
भावों में अरुण प्रभूत राग
आस्त्राशुक-स्वप्न-वितान बने

काव्यर्षि बृहस्पति विभापूर्ण
चमकें शिव-सिद्ध हिमालय-सा
भाषा-स्थापत्य प्रखरतर हो
युग-बाहु-रचित देवालय-सा

द्युति-सौमनस्य दृग स दर्पं
सुर-कीर्ति-स्तम्भ कल्पोत्सव पर
पूजे पग कलासक्त मानव
निर्भर दृष्टि से चिर नव पर

म धन न सकी कविता कोमल
चितवन में फूल खिलाती-सी
धमाम्बु-पंखुड़ी पर मौक्तिक
सौरभ की सुधा पिलाती-सी

मैं बन न सकी कविता चंचल
उर्वशी-सदृश अँगराती-सी
फेनांशुक रूप तरंगों पर
नयनों से नयन मिलाती-सी

मैं बन न सकी कविता निर्मल
यौवन-ज्योत्स्ना फैलाती-सी
कामायन-सिन्धु पर चन्द्रार्पित
चुम्बन-तरंग बिखराती-सी

मैं बन न सकी कविता उज्ज्वल
अपवर्जित ज्योति जलाती-सी
नित चलित अनिल में काव्य-कान्ति
तारक-पट से छिटकाती-सी

मैं बन न सकी कविता निश्छल
स्मित मलयमरुत में गाती-सी
उड्डीन हंस-शशि-पंखों पर
तारस्वर-ताल सुनाती-सी

मैं बन न सकी कविता दुर्बल
वासना-सुरा छलकाती-सी
बुन इन्द्रजाल भ्रम-लहरों का
उत्तोलित गति में आती-सी

मैं बनी एक कविता कज्जल
घन-घटा-छटा झिलमाती-सी
प्रतिपल नयनों के नभ-पट पर
विद्युत के चित्र बनाती-सी

मैं बनी एक कविता सलज्ज
श्यामलता में सकुचाती-सी
भावलावरण में वृत्तहीन
शशिवर्मा छवि मुस्काती-सी

मैं बनी एक कविता अधीर
पीड़ा में पुष्प सजाती-सी
करुणामृत-मौक्तिकमाया में
मन को सदैव नहलाती-सी

रेखे! तू मुखर प्रवीणा-सी
मैं मूक बाँसुरी-माया हूँ
तू सृजनमयी अभिलाषा है
मैं अभी उज्ज्वल आशा हूँ

मारी हूँ विरह में मह मचली
मधी हूँ फिर भी मारी हूँ
कुछ भी हूँ नहीं परन्तु तब
यौवन की जीवित प्यारी हूँ

कुछ अश्रुबिन्दु सम्बल समस्त
कुछ प्रणय-फूल ही प्राणकोश
सखि बता आज तू ही मुझको
इन नयनों का तो नहीं दाप ?

सच कहती हूँ अधरोत्सव में
थी खिली अमित मृदु-कलिकाएँ
जब-जब अँगराइ सुमन-वायु
हिल गईं हृदय की छतिकाएँ

सखि असहनीय मधी-तृष्णा
नारी हूँ नेह लगाती हूँ
छूकर दयोत्तम पग पावन
पूजा के पुष्प चढ़ाती हूँ

सस्वर प्रणाम-वंचिता हाय
किसम संताप करूँगी मै ?
जिनका स्नेहोत्तर सुन-सुन कर
नित निद्रित पीर हरूँगी मै ?

मैं शुभ-स्नाता भार्या प्रसन्न
शारद् शुभ मुकुलित कमला-सी
यौवन-जल पर तैरती हुई
मंजुल मरालिका मृदुला-सी

विरहिणी यक्षिणी अलका में
रह-रह कर नित अकुलाएगी
क्या पता रामगिरि से फिर भी
आषाढ़-पक्ष पर आएगी?

हे महाकाल! समय यह क्या?
प्रेमी में इतनी क्षमता है?
प्रत्येक पुरुष को क्या अपनी
पत्नी से ऐसी ममता है?

मैं प्रीतिकूट की अब वधू
मन-ही-मन मन्थन करती हूँ
विश्वासुक विरह-दीपिका में
चुम्बित अतृप्ति-घट भरती हूँ

वेणी-विलाप-विह्वला विभा
　　　खोजने लगी सघातों को
देखा दूरस्थ द्रवित दिशि में
　　　रोती-चिल्लाती रातों को

उग आए उर-पत्रों पर द्रुत
　　　कुम्भायु-काव्य के नयनाक्षर
नारीत्व-कन्दरा से निकला
　　　भीतर ही भीतर निर्झर-स्वर

घूमने लगी वह भव्य भाल
　　　तत्क्षण आलिंगन करती-सी
वर्तिका स्नेह की जली एक
　　　अव्यक्त पीर-तम हरती-सी

छू लिया तप्त विरहात्मा को
　　　शाश्वत संगीत-कुमारी ने
लिख दिया प्राण पर प्रथम छन्द
　　　करुणामयि अभी नागी ने

गुंथित गति का ज्यों महत् मिलन
　　　आकुल रहस्य-उच्छ्वासों में
छाया में छाया लिपट गई
　　　चिर परिचित चन्द्रिल पाशों में

वन-गज-दन्तों पर ज्योति-किरण
जागरण-श्लोक ज्यों रचती-सी
वेणी - सुपुप्त - दुखयणी को
द्युति-कर से रेखा सजती-सी

अनुकूल काल में बाणभट्ट
रे चले गए गृह से अपने
वेणी कहती है धरती से
व छोड़ गए कुछ सुधि-सपन

कह गए कि बारह वर्षों पर
होगा जीवन का पुनर्मिलन
प्रियतम ! स्मरण करना मेरा
जब-जब उमड़ें अम्बर में घन

मन से मम मिलता रह सदा
इतनी ही कह कर जाता हूँ
हे जन्मभूमि! यात्रा-वेला
तेरी ही धूल लगाता हूँ

भर दे कि बाण के प्राणों में
'भारत' का चित्र उतर आए
भारती किसी दिन साँसों में
अमरत्व-रागिनी भर पाए

अपराध क्षमा करना मेरा
हे प्रीतिकूट! मैं चलता हूँ
तेरा ही पुत्र अभागा मैं
जो कला-ज्योति में जलता हूँ

दे आशीर्वाद मुझे जननी!
जाने फिर लौटूँ या कि नहीं
मर भी जाऊँ तो कह उठना
था बाण किसी दिन यहीं कहीं

भूलना मुझे मत गाणभद्र!
लिख देना नाम किनारा पर
यदि कर न सकूँ मैं हस्ताक्षर
नीरव निशीथ के तारा पर

रघु नहीं आज पर उनके पग
नयनों के सम्मुख चमक रहे
दुख यही कि घर से जाता हूँ
अपने गृहपति को बिना कहे

संगी-साथी सब चले गए
रह गई अकेली वह केवल
यमुना में मिल कर हुआ मौन
बहती गंगा का उज्ज्वल जल

वह कौन ? वही रेखा सुविम्ब
तम में प्रकाश बिखराती-सी
अपनी वेणी के सुख-दुख में
स्मृति-वन्दनवार बनाती-सी

आरती उतारी उसने ही
चलने की बेला राहों में
भर लिया प्राण को सीमा पर
आलिंगित विह्वल बाँहों में

रस सिक्त दृष्टि से देख-देख
क्षण में ही सब कुछ कहती-सी—
आइ वह उपा लिए गृह तक
निज दृग-तरग पर बहती-सी

कह गए कि बारह वर्षों पर
होगा प्राणों का पुनर्मिलन
प्रियतमे! स्मरण करना मेरा
जब-जब उमड़े अम्बर में घन

षष्ठ सर्ग

मानसी-आकाश में ज्यों उर्मिला की रात
कमल-कम्पित गात में नित विकल बिम्बाघात
अश्रुनिपात

दृष्टि की अभी किरण जब दमकती उस पार
गूँजती सम्पृक्त नीरव मन की झंकार
बारम्बार

अधिर अनन्तासीम आहत पूर्णिमा के प्राण —
तनु-तरंगायित तटों पर किया करते गान
कुछ अनजान

[illegible] शशि रस पान कर जब उषा भोर-विभोर—
मौन-मन पर पद्म-अजिन-छवि-छोर
झकोर—

तम-कलम कीलित नयन तब तर कर चुपचाप
सान्ध्य-तट के निकट करते शोणिमा-सलाप
अपने आप

प्रणय-गान्धारी विकलता कांपती असहाय
अथ मृग शर-विद्ध ज्यों गिरि-शिखर पर निरुपाय
हिम में हाय

प्रिय प्रवासी को उदासी व्याप्त चारों ओर
मरुस्थल में छटपटाता ज्यों अगन से मोर
तप्त हिलोर

लालसा के सभा-गृह में विरह-वह्नि-विलास
दृग-भुजा-आबद्ध तारों से भरा आकाश
स्वप्न-समास

चन्द्र-किरणों से बुई जय-यूथिका को मथ
गूँथती मन-प्राण-मन से नयन भ्रमरी अथ
उग्र प्रबध

मातृहीना बालिका-सी मधुरता को पीर—
घूम माया-म्लान अकेली पी रही ज्यों क्षीर,
हृदय अधीर

षष्ठ सर्ग

माण्डवी-आकाश में क्यों उर्मिला की रात
पवन-कम्पित गात में मित विकल विद्युत्पात
अश्रुनिपात

दृष्टि की अमी किरण पथ पखारती उस पार
गूँजती सम्पृक्त मौन मन की झंकार
बारम्बार

अचिर अकालीन आहत पूर्णिमा के प्राण —
अश्रु-तरंगायित तटी पर लिखा करते गान
कुछ अनजान

पीत शशि-रस पान कर अब उषा भोर विभोर–
फेंक रही शोण-रस पर घन-मलिन-छवि-छोर
भानु-झकोर—

तम-कलुष मोहित नयन तव तैर कर चुपचाप
आत्म-तट के निकट करते याचिका-समाप
अपने आप

प्रणय-गान्धारी विकलता काँपती असहाय
अब मृग शर-विद्ध ज्यों गिरि-शिखर पर निरुपाय
हिम में हाय

प्रिय प्रवासी का उदासी व्याप्त चारों ओर
मरुस्थल में छटपटाता ज्यों अघन में मोर
तप्त हिल्लोर

लालसा के स्नेह-गृह में विरह-वह्नि-विलास
दृग-भुजा-आबद्ध तारों से भरा आकाश
स्वप्न-समाप्त

चन्द्र-किरणों से चुई जल-यूथिका की गंध
गूँथती मन प्राण-वन से नयन-भ्रमरी अंध
ऊर्ध्व प्रबंध

मातृहीना बालिका-सी मधुरता की पीर—
चूस आशा-स्तन मरुमा पी रही ज्यों क्षीर
हृदय अधीर

पदाघात प्रसून-शोभित काम-सन्ध्या दृष्टि
मन्द मंजुल सुरभि सिंचित विकल मधुल-सृष्टि
सुधि की वृष्टि

रूप-वसुमति ऋतु निरावृत बधिर वायु प्रवाह
अमिट उर की भित्तियों पर प्राण-चित्रित चाह
रंग अथाह

श्वास में मृदु वक्र-पावक-स्वर प्रगल्भ-मरिच
गीति-गर्जित उदधि-गृह में कम्बु-धावित वीचि
पद्म प्रतीचि

पीर के अव्यक्त वारिद व्योमहीन प्रशान्त
मिलन-वाष्पित विरह जीवन-भय-निहित अश्रान्त
कुन्दन-कान्त

मदन की मुद्रिका में चिर तिमिर ऋषि-दुर्वास
शाप-शीकर-तप्त पथ में प्रखर पावन प्यास
विफ-परिहास

गाधिसुत से कुपित सख्या-सी अबाध उमंग
भीष्म-मन के समर में सुधि-स्वर प्रतिज्ञा भंग
अचल अनंग

मित्र! जीवन की लहर उद्दाम है
थमो चलना ही हमारा काम है
प्रथम यात्रा में विजय का याम रे
मथ-घन में ही शरद्-आकाश रे

कौन कहता है कि म निष्प्राण हूँ
काल हूँ! म ही मगध का बाण हूँ
बाण हूँ म बाण पथ-अभियान हूँ
लक्ष्य पर आया हुआ तूफान हूँ

रम रहा ह हृदय राग-विराग में
कला का अनुराग ही गृह-त्याग में
मित्र! हम आए प्रसिद्ध प्रयाग में
स्नान संगम का लिखा ह भाग में

कृष्ण क्रीड़ाभूमि देखी थी वहाँ
भरद्वाज-सुपुष्प-वन आश्रम यहाँ
सिद्ध काशी में रहूँगा कुछ समय
प्राप्त होगी वहीं शास्त्रों की विजय

हाय रे मन बाण भूखा सो गया
आज मेरे भाग्य को क्या हो गया
शिवपुरी में नींद क्यों आती नहीं?
क्षुधित साँसें स्वप्न बिसराती नहीं

लोक-कवि ईशान गृह की ओर अब
घिर रही दुख की घटाएँ घोर अब
तिमिर में नूतन किरण कैसे भरूँ
कहो मेरे प्राण अब म क्या करूँ?

रुग्णता से छटपटाता हूँ यहाँ
दलता हूँ किसी परिजन को यहाँ
तन प्रखर ज्वर-ग्रस्त मन अकुला रहा
मर्म-ढागी नहीं कोई आ रहा

वत्सवली बाण की अब यह दशा
प्राण पर भी घिर रही दुख की निशा
कहाँ आऊँ, क्या करूँ म मौन हूँ
रात्रि में किससे कहूँ म कौन हूँ

कौन यह स यासिनी-सी आ रही ?
भरित भिक्षापात्र स्वय भरा रही
देवि ! विचित गगा-जल-हित म विकल
कठ में प्रज्वलित ह ज्वर का गरल

इस कृपा स भर गए मर नयन
अन्यथा होता यही पर तन-निधन
देवि ! तुमको बार-बार प्रणाम ह
मगधवासी बाण मरा नाम ह

कौन ? तुम ? रस ? कला की निर्झरी ?
बौद्ध युग भारती वदिक किन्नरी ?
आत्म-ज्योतिमयी जीवन रागिनी ?
धूप में लिपटी कुहु-सी चाँदनी ?

आज तू स यासिनी मरी सुम ?
जन्म भू का तज दिया तूने किस ?
किसलिए ?

प्राण-कविते ! उर-रसे ! मन-माहते !
विजयिनी वरदायिनी स्वप्नामृत !
पूर्णिमे शृंगार की हे तरुणिमे !
आत्म के आकाश की हे अरुणिमे ! —

बाण में नव गान भर व प्राण हृ
तिमिर को दे किरण की मुस्कान है
क्या कहा? वेणी विसर्जित हो गई?
काश के स्वर-स्रोत में बह लो गई?

अब अधिक मत कह प्रभे ! निष्प्राण हूँ
हाय रे, कितना अभागा बाम हूँ
आह मेरा भाग्य कितना क्रूर है
दूर है सुख-स्वप्न मुझ से दूर है

तिमिर में नूतन किरण कैसे भरूँ
कहो मेर प्राण अब म क्या करूँ?
आज वाराणसी में मै मौन हूँ
कह नहीं सकता कि मै अब कौन हूँ

अष्टम सर्ग

जीवन-अम्बुधि-तल-अतल-गर्भ से मानव
मुक्ता निकालता नित अभेद अनुभव का
भाषा-प्रसून में भाव-सुरभि भर भरकर
रचता सशक्त सकेत स्वप्न समय का

रे समय-शिला पर अमिट अजन्ता रचना
सम्भव है कालपुरुष के कोमल कर से
अमरत्व प्राप्त होता केवल उस कवि को
जो शब्द-स्वर्ग गढ़ रचता शाश्वत स्वर से

जीवन ही उद्गम कला चेतना-अणु का
नयनानुभूमि में ही रगों की वाणी
तपती वसुन्धरा जब अविरल ज्वाला से
तब उमड़-घुमड़ उठते बादल बरदानी

जीवन-सागर में उच्छल लहरें उठतीं
चेतना-विचुम्बित ज्योत्स्ना-प्लावित निशि में
अन्तर प्रभात-उदयाचल से उड़-उड़ कर
कल्पना-किरण आती-जाती दिशि-दिशि में

केवल सुख से सम्भव न स्वप्न सर्गों का
कठिनाई में भी कला चपला मिलती
दयनीय परिस्थिति की भीषण आँधी में
दर्शन की कलियाँ प्राण-वृन्त पर खिलतीं

अति कठिन शिल्प के वन में काव्य-तपस्या
अंगारों का आसव पीना पड़ता है
तम-किरण-गहन मंथन के बाद युगों से
कल्पना-सुमन घन इन्दु-बिन्दु भरता है

साहित्य काल का दर्पण जिसमें जीवन—
चेतना-तरंगों को करता प्रतिबिम्बित
अनुभूत सत्य के हर्षिल हिमशिखरों पर
सौन्दर्य-रश्मि होती शाश्वत शिव चुम्बित

शब्दों में स्पन्दन भरती जो भावोर्मिल
जीवित प्रलम्ब यह उक्ति-कला मानव की
सन्तुलित ज्वार की प्राण-परिष्कृत भाषा
गाती उफनाती इच्छाएँ अनुभव की

उठ-उठ विचार रश्मियाँ मन्त्र-मुक्तादल
बिखराती तन्द्रिल बाणभट्ट के उर में
क्यों पद-रचना भरती प्रमाण-वीणा पर
सम्राट् हर्ष के स्वर्णिम अन्तःपुर में

काशी के गंगा-तट पर प्रस्तर-गृह में
करता भविष्य-चिन्ता एकाकी यौवन
सुन-सुन अतीत क्रन्दन स्मृति-लोचन-पथ से
मानस-शतदल में भरता नव अलि गुंजन

तिमिर-टंकित टिमटिम उडु-चाप
मलिन गति पिंग चन्द्रिका-गीत
अनिल में मन्द मध्यम की मध
निशा की हार, उषा की जीत

किरण में रेखा का आभास
क्षितिज पर सखी की कुछ बात
नीलिमा के सागर पर एक
मौक्तिका-सा आपाढ़ प्रभात

तीर पर स्नानार्थी-समुदाय
अम्बर पर अमृत-मन्त्र-आह्वान
धार पर नीर भरथी-ख्याति
तरणियों पर नाविक-अभिमान

सदा से काशी विद्या-केन्द्र
ज्ञानियों का वांछित आवास
प्रात होते ही उठता गूँज
विभा की वाणी से आकाश

विचारों का आदान प्रदान
यहीं करता भारत सोत्साह
असत् के होते विविध प्रहार
किन्तु रुकता न नृसिंह प्रवाह

मुझ को मिला तत्त्व-सम्मान
कथा सुनते दास जन विद्वान
खोल कर पद्म-पराग प्रकोष्ठ
बाँटता हूँ मैं पद्म दान

मृदुस्वप्न-निराश्वस्त सन्दर्भ
पृष्ठ मन पर न विस्मय प्रमाण
दीनता की निधि-मग्न मिठास—
नहीं करती स्थिति-मिथ दुराव

पूछती वनिताएँ स्वर भरण
नाम से झुक जाता मैं मौन
अपरिचित-सा अब तक हूँ यहाँ
बताता नहीं कि मैं हूँ कौन

कथा कर दूँगा शीघ्र समाप्त
लिखूँगा पुस्तक एक नवीन
चुन चुका शीर्षक कादम्बरी
कल्पना भूमि भाव-तल्लीन

मिली थी उज्जयिनी में लहर
खिल गये कुछ प्रयाग में फूल
किन्तु यह वाराणसी महान
कि उड़ती यहाँ किरण की धूल

उतरने को आकुल अनिमेष
नयन के कोमल अगणित चित्र
भ्रमण-वन के समस्त तरु-पुष्प
लग रहे अब मेरे मम-मित्र

रच अभिनेय सुकाव्य अनेक
किन्तु वे रहे न मेरे पास
नाट्य-भूतल में भर रस-बिन्दु
स्वयं उर रिक्ताकाश उदास

घिर रहे फिर अम्बर में जलद
आ रही अब गंगा में बाढ़
उमड़ता आता है चुपचाप
सजल श्यामलता का आषाढ़

स्वप्न-श्रावण में शाणोर्मणी
झिलमिलाती नित बारम्बार
झनझनाती माया-मंजरी
मनमनाती श्वासिल झंकार

साध्य घन-नभ में विहग-कुमार
सुनाते जब कूजित कल्लास
निखर मात छम्मिल छवि-मग
गूँजतीं साँसों के कुछ बोल

व्योम के मयपत्र पर अचिर—
प्रभाक्षर लिखता सत्वर कौन
विरह-वाक्यों को पढ़ कर हृदय
न जान क्यों हो जाता मौन

घुमाती विधु की स्मित वदना
किन्तु हो जात मूर्च्छित प्राण
ढूँढता मैं जब विस्मृति ज्योति
काँपन लगते स्मृति के गान

भुलाता हूँ मन को चुपचाप
किन्तु जग उठती पीर-तरंग
मिला जब से दुखमय संवाद
न उठती उर में रंग-उमंग

सिहरते सुमन-स्वप्न-सभग
दृगों से झरती गधित आह
प्राण में भर भर आती व्यथा
शोक की पीड़ा हाय अथाह

कहाँ जाऊँ अब मैं क्या करूँ
समझ में आता कुछ भी नहीं
कुसुम-कोलाहल मन में व्याप्त
शान्ति मिलती न हृदय को कहीं

चपला कुटिल कटाक्षान्योक्ति
मेघ-गर्जन पावस-रस-रोध
चमत्कृत यमक अभंग हिलोर
सलिल-संकुल सामासिक कोश

स्वत्व-रूप से अन्तस्-सौन्दर्य
सृजन करता शिवत्व-संगीत
खेलता नयनों में निस्तब्ध
इन्द्रधनुषी सुधि-स्नात अतीत

कल्पना का भी वासस्थान
भ्रान्त विस्मृति में होता कहीं
अन्तरामंत्रित स्मृति रुचि-राग
दृष्टि-निष्ठा-अनभिज्ञ नहीं

सघन श्रावण की कज्जल रात
फूटन को अब जलद प्रपात
मघ से चाँद चाँद से मघ
कर रहे लुक-छुप विद्युत-वास

देखती अवनी श्याम-विलास
पवन-घन-वन में ज्योत्स्ना-हास
मनाता तिमिर तरल उल्लास
घटा के घन में चन्द्राकाश

क्वणित गंगा पर नभ प्रतिबिम्ब
देखते बाणभट्ट सुकुमार
दृगों में वणी के संस्मरण—
पिरोते मणि-मुक्ता के हार

प्रणय की प्रथम अलक्ष्य निशा
दिशाओं में हो जाती व्याप्त
अब नयनों के प्रेमालाप
कर रहे अब ज्योतिर्घन प्राप्त

मदना की विधि-मूर्ति सजीव
दे रही थी अनन्य उपहार
देख कर मौन शरद-श्री-रूप
प्राण में उठती थी झंकार

पिता ने देखा था जब उस
लोल लोचन में थे संगीत
पढ़ रही थी गुरुकुल में शास्त्र
प्राण में उसके प्रखर पुनीत

विप्र-कन्या वह थी अति दिव्य
दृगों से झरते थे संस्कार
कंठ में था लालित्य-विलास
रूप पर था राका-विस्तार

चकित थे पिता देख कर ज्योति
बनाती थी वह अनुनय-चित्र
रंग से भरती थी वह भाव
हृदय था उसका सदय पवित्र

किन्तु जब रोग-ग्रस्त वह हुई
नयन से हुआ प्रकाश विलीन
स्वर्ग से उतरी-सी उर्वशी
अचानक हुई विभा से हीन

चिकित्सा से न हुआ कुछ लाभ
रूप पर जमा तिमिर ज्यों दीप
थक गए कुसुमपुरी के वैद्य
न खुल पाए नयनों के सीप

पिता थे घटना से अज्ञात
मिला कुछ भी न कभी संवाद
हो गया पाणि-ग्रहण सोल्लास
मौन ही रहा वसन्ताकाश

वधू आई अब गृह में हाय
हो गया तुरत पिता का अन्त
शोक से प्रीतिकूट संतप्त
प्रकम्पित दूर-दूर के सन्त

किन्तु मैं अब पूर्णिमा रम्य
लगा करने ज्योत्स्ना में स्नान
भर लिया बाहुपाश में उसे
न होने दिया चन्द्रमुख म्लान

तरंगें उठने लगीं अनेक
हृदय में उठा अमिय-हिलकोर
रूप के उसी क्षितिज पर हुआ
कला-जीवन का उज्ज्वल भार

अब दृग के दर्पण को देख
हो गया मैं ही द्रुत प्रमान्ध
कूकने लगी प्राण-पिक मुग्ध
फैलने लगी वसन्त-सुगन्ध

किन्तु वेणी विह्वल ही रही
न टूटा उसका दृग-संगीत
समझ पाई न स्यात् वह कभी
कि उसकी हार कि उसकी जीत

वस्तुतः विजय-पराजय त्याग
हृदय में गूँज रहे थे प्राण
उठे जो उठे रहे अम्लान
वेदना के हर्षित तूफान

प्रात में साँझ दिवस में रात
देखती थी आँखें चुपचाप
विहँस कर करती थी वह हास
मगर अन्तर का तिमिर विलाप

एक दिन कहा उसीने— 'स्वामि!
स्यात् म शाश्वत काम्यार्चना
तिमिर में करती हू रागात्म
ज्योति-मज्जित अन्तर्वेदना

'रम्य रंगा हो मेरी दृगी
पूर्णता वह मेरी स्वच्छन्द
पूर्ण होऊँगी जब म कभी
मृगी-गति हो जाएगी मन्द

दृष्टि में होगी व्याप्त विरक्ति
क्षीण होगा न किन्तु संकेत
उगाएगा कल्पना-प्रसून
कोण का सिकता-गोभित रस

प्रेरणा के उत्कलित वसन्त
भ्रमर गर्वित होंगे हे प्राण
मिलेगा विपुल काव्य-वरदान
हृदय में करती हूँ नित ध्यान'

मनन करता जब उर-मंथन
काँप उठता हूँ बारम्बार
कौंधने लगती विद्युत एक
मेघ उठने लगते उस पार

लिया रेखा ने क्यों सन्यास?
सत्य है मणी-मानी भास
चुराऊँगा मैं भी क्या कभी
कला के प्राण का कम्पित श्वास?

उमड़ती मत नयनों में घटा
छटा में कोमल अप्सरा-गान
लिख रही विद्युत जीवन-कथा
न जाने कब बरसेंगे प्राण

गगनचुम्बी अलकोत्सव आज
छन्द-माया-शिव-सुर सब ओर
निरख मणि-पुष्पवाटिका विपुल
उठ रही मन में शिल्प-हिलोर

हिमालय-गृह में कादम्बरी—
सुन रही कल्प-पार्वती-गीत
स्वर्ग-सरिता में करती स्नान
मानवी-सी पृथ्वी की प्रीत

श्याम व दक्षराट पर मुक्त
उषा आभासित त प्रकाश
प्रतीची-पथ पर स्मृति-अस्तमित
पिंग शशि का गिरि-धूप प्रकाश

हो रहा विरह-मिलन-समाप
अस्मित अग्निरथ स्वप्नाकार
गूँजती-सी सोनाली सिद्धि
पा रही प्रमित निष्ट सिंगार

आत्म-ताण्डव में जीवन लीन
डमरू पर प्राण-चरण-झंकार
झूल रहे सुमन-त्रिभंगी नेत्र
कल्पना-काम स्वयं साकार

उमड़ती मत्त नयनों में घटा
छटा में कोमल अनुराग-गान
लिख रही विद्युत जीवन-कथा
न जाने कब बरसेंगे प्राण

गगनचुम्बी अभ्रोत्सव आज
छन्द-माया-शिव-सुर सब ओर
निरत मणि-पुष्पवाटिका विपुल
उठ रही मन में शिल्प-हिलोर

हिमालय-गृह में 'कादम्बरी'—
सुन रही कला-पार्वती-गीत
स्वर्ण-सरिता में करती स्नान
नाचती-सी पृथ्वी की प्रीत

श्याम के देवदारु पर मुक्त
उषा आभासित तन्द्राभास
प्रतीची-पथ पर स्मृति-अस्तमित
पिंग रवि का गिरि-शृंग प्रकाश

हो रहा विरह-मिलन-सम्पात
अमिट अभिनय स्वनगान
गूँजती-सी सोमाली सिद्धि
पा रही अमिय मिष्ट मिस

आत्म-ताण्डव में जीवन लीन
कमल पर प्राण-चरण-झंकार
सुप्त रह सृजन-त्रिभंगी मेन
कल्पना-काम स्वयं साकार

नवम सर्ग

तिमिर-तरंगित रात्रि-सिन्धु पर
भय की वायु विचरती
वट-अश्वत्थ-विशाल दुर्ग में
शंकित देह सिहरती

जीर्ण-शीर्ण देवी-मन्दिर में
एक दीप जलता-सा
मानो महाप्रलय-अम्बर में
मृत्यु-सूर्य ढलता-सा

दिग्दिगन्त दुर्गन्धपूर्ण
क्रन्दन-विहीन कोलाहल
लगता जैसे अंधकार
पी रहा स्वयं हालाहल

कापालिक-सम्मुख मूर्च्छित-सी
सुप्त अचेतन तरुणी
ज्यों प्रचण्ड ज्वाला में आती
मूक ग्राम-पुष्करिणी

अरुण वस्त्र-आवृत शरीर
मन्त्रोच्चाटन में तन्मय
ग्रीवा में रुद्राक्ष माल
मुख-व्याघ्र भस्ममय निर्भय

भृकुटि-मध्य शोणित चन्दन
ऊपर त्रिपुंड समुन्नत
सुरा-पात्र सम्मुख गुग्गुल की—
गन्ध अनिल से अवगत

बाज चंचु में ज्यों विहगी
समा-पथ में फँस जाती
कापालिक के निकट चेतना
शून्य नारि अकुलाती

भौंक रहे कुछ श्वान उलूकों—
के विचित्र रव कूजित
कहीं-कहीं शृगाल विलम्बित
सुर में रह-रह मुखरित

मरमर-मर्मर तरु-पत्रावलि
साँय-साँय घन झोंके
इस भयकर रात्रि-दृश्य यह
किसका हृदय न काँपे

बाणभट्ट रुक गए इधर ही
बूढ़ा उधर खड़ी-सी
विस्फारित क्रोधित अपलक
आँखें अनजान डरी-सी

मघाच्छादित श्याम पुष्प
तम में तड़ितों के कौतुक
वक्र ज्योति में विस्मय-दृग से
ताक-झाँक वेगोत्सुक

सबल हस्त में मोटा सोंटा
मन में लोहित भाषा
छद्म सिंह-सा नरपिशाच के
भक्षण की अभिलाषा

ओजस्वित संकल्प चेतना
श्वासों में रण-गर्जन
प्राणों में अग्नि-रुधिर-ज्वाल
दीपान्वित व्याकुल यौवन

बाण कृपाण लिए मन में
गाम्भीर्य-ढाल भी कर में
काव्य-बाँसुरी त्याग कृष्ण-सा
पाञ्चजन्य नव स्वर में

"ओ अधमाधम बन सिद्धियों—
में मत आग लगाओ
मानवता को शान्तिदायिनी
सात्विक सुधा पिलाओ

नारी का अपहरण कभी भी
करो नहीं छल-बल से
सीखो जीवन-मंत्र मग्न
करुणा के निर्मल जल में

सिद्ध-पथ में ही प्रसिद्ध —
मानव की तांत्रिक माया
ज्यों प्रकाश के बाद मात्र
रह जाती निष्प्रभ छाया

'सप्त वर्ष में देखो निन्दित
घृणित क्रूर लीलाएँ
तन्त्र-साधकों के फेरे में
पड़ जाती ललनाएँ

ओ जघन्य पापी अपराधी!
आज न रहने दूँगा
इस श्मशान में बल से
दूषित मन्त्र न पढ़ने दूँगा

" लपका वीर भूपग्र युवक
पंजा से थप्पड़ मारा
खड्ग निकाला उसने तो
हठ का लिया सहारा

सम्मुख-युद्ध-पश्चात् कपालिक
ध्वस्त हुआ धरती पर
रहा गूँजता प्राण-वायु में
मूर्च्छित-सा मर्दित स्वर

विजयी कर में अमुध अबला
तन को स्वयं उठाकर
चले बाण वृद्धा के संग-संग
लक्षित पथ पर सत्वर

सुरसरि-तट पर नारी-मुख पर
जल-मुक्ता बरसाया
मिली न दृग चलना उसे तब
तन को पुनः उठाया

वृद्धा हुई अधीर दिशाएँ
ध्वनित हुई क्रन्दन से
बोले बाण अभी आता हूँ
डरो न निर्जन वन से

घाट अभी कुछ दूर, चलूँ—
धीवर को स्वयं जगाऊँ
तुरत वध के यहाँ तुम्हारी
पुत्री को पहुँचाऊँ"

फेनिल उजरी नदी धार पर
सर-सर नौका जाती
मन्द अनिल-शीतल-स्पदन से
दृग में झपकी आती

घन-अरण्य में उषा-भारती
रश्मि राग बिखराती
दूर एक भोली बाला प्राकृत
में प्रथम प्रभाती

थी पल्लव ही मग्न तरणियाँ
तिरन लगी लहर पर
जाल फेंकन लग मत्स्य-हित
मछुए प्रखर भँवर पर

धाम-स्तम्भ पर श्वेत विहग
पंखों को लग हिलाने
काशी-तट म स्नान-मन्त्र-ध्वनि
लगी यहाँ तब आने

जगमग उज्ज्वल भवन-श्रेणियाँ
अट्टालिका पुरातन
मणिकर्णिका घाट पर धन-धान
छत्र-सुसज्जित जनगण

उतर थे जब तीर-तरंगों पर
स्वर्णाभा उतरी
सहसा किरणमयी कुछ साँसें
अभी अचानक सिहरी

संध्या में माता के संग-संग
मन्द मधुर मुस्काती—
आई वह मेरे सम्मुख
नयनों में नीर सजाती

रूप रंग लावण्य-स्निग्धता
सब कुछ है नारी में
दिन में भी चाँदनी चहकती
पाटल की क्यारी में

अरी कौन तुम स्वप्नमोहिनी
द्युति शृंगार-सफलता
बँधी हुई गांभीर्य-वृन्त से
कलिका-सी चंचलता

सुधा-यामिनी मृदुल अधर पर
नयनों में रस राका
केश राशि पर शुभ्र कुसुम ज्यों
अलका-पथ बलाका।

मुखमण्डल पर ज्योति कि जैसे
पूनम पर दृग-बाती
भुज-मृणाल ज्यों काम-लता
कुसुमित ऋतु में लहराती

भ्रू-विलास ज्यों मन्मथ-चाप
यूथिका-दस्त मन-माला
अगम सिन्ध तन मूर्ति स्वप्नकी
काव्य-कामिनी बाला

पपनी पर कमनीय निशा की
आमन्त्रण अभिलाषा
मौन पड़ मृदु नयन-नीड़ की
उड़न बासी भाषा

प्राण-पत्र पर लिखित श्लोक को
श्वास गा रही मन में
उत्सुकता की हिरण विचरती
हरित हृदय के वन में

कच-वक्ष के अन्तःपुर में
रत्न-रेणु उड़ती सी
गड़ती ज्यों कामना सुरभि-
छाया में क्या किसी की

कटि पर क्वणित किंकिणी ज्यों
गाती कविता कुछ कहती
नूपुर-गुंजित पग ज्यों हिम-
मग में निर्झरिणी बहती

द्राक्षालता - वसन - आच्छादित
तन-तरु नव वासन्ती
सुन्दरता कर रही स्वयं
निज दर्पण से विधि-विनती

मन-मुग्धा मल्लिका सुमुग्धा
कवि मयूर की कोमल
महामहिम सम्राट् हर्ष को
देते जो छन्दोत्पल

पति-वियोग में चिन्तित माता
सब रही शिव-नगरी
सुता मल्लिका संग रहती
ज्यों ग्रीष्म-ताप में लहरी

फिर कृतज्ञ मुग्धा विदुषी
पूछती बाण से परिचय
स्नेहार्पित मुस्कान लिए
करती मन में कुछ संचय

वात्सल्य के मातृ-मुख का
कृत सगर्व अभिमान
पुलक मल्लिका रम गई
कुन्तल का शीतल चुम्बन

अरुण कपोलों को नयनों की
पलक छू रही झुक कर
ज्यों कपाल पीड़ा पाई
दमकता रहा छुप-छुप कर

सज्जित चारों नयन किन्तु
आवरण ज्योति का बचरज
श्वास-वायु स लहरा उठता
दोरंगी दृग अचरज

मन को रोक रहा दृढ़ जीवन
ज्यों समीर को कानन
किन्तु दीख पड़ता रहस्य
ज्यों घन-ओझल चन्द्रानन

बाणभट्ट गंभीर कि जैसे
रुठ हुए, प्रिया से
चुप सुशील मल्लिका कि जैसे
ज्ञात न कुसुम-क्रिया से

किन्तु छली-सी सन्ध्या देख—
रही जलती-सी बत्ती
स्वर्णकार ज्यों भस्म-पात्र में
अन्वेषित मणि-रत्ती

चली गई दोनों ज्यों तट से
उन्मीलित हिलकोरें—
दूर-दूर जाकर भी लेती—
रहती पवन-हिलोरें

कुछ उमंग भर गई हृदय में
कुछ तरंग-सी आई
ज्यों मधुऋतु के हरित राग से
तरु पर फिर तरुणाई

बार-बार वे मिले परस्पर
प्राण प्राण को भाए
इंगित स्पष्ट हुए नयनों के
ऐसे भी दिन आए

लताकुंज में ज्यों दो पंछी
चंचु मिला कर गाते
वैसे ही कुछ गीत हृदय में
उमड़ अधर पर आते

कल्मी आम-फाँक-सी आँखें
कुछ ऐसी मुस्काईं
मानो पावस-उषा दामिनी
के सँग बाहर आई

विमल मल्लिका की किंकिणि
हो उठी ध्वनित-सी चुपके
ग्राम-वधू आती ज्यों रुक-छुप
पति-गृह में रुक-रुक के

मधुर मल्लिका चरणांगुलि स
सुधि शब्दांकित करती
रजत रात में हिम-कणिका ज्यों
पद्म-पत्र पर झरती

प्रखर बाण की कला देख कर
चकित हुई वह तरुणा
रवि चरणों पर झुक विलीन–
हो जाती ज्यों नित अरुणा

वह अतीत का स्वप्न देखती
वर्तमान के दृग से
कस्तूरी-सी गंध बिखरती
रूप-राशि-मन-मृग से

खो-खो कर कल्पना-कुसुम पर
रखती थी स्वर-राका
उड़ती थी घन के निकुंज में
चपलाबद्ध बलाका

कहते थे भाई मयूर—'तू
कवि-गृह में जाएगी
निश्चय ही मल्लिका कला का
कानन तू पाएगी'

एक ज्योतिषी ने भी कुछ
ऐसा आभास दिया था
उस दिन मन गृह-दर्पण को
हँस कर चूम लिया था

वह दी थी वाटिका-वीथि पर
सगि स बाग रसीली
बिखर गई थी स्वर-वृन्तों से
चन्द्र चमली भीनी

होगी क्या चरितार्थ वधु के—
मुख से निकली वाणी ?
प्रीतिकूट की हूँगी क्या मैं
प्राण-वधू कल्याणी ?

माता तो संकल्प कर चुकी
तात स्वीकृति देंगे ?
निज भविष्य-घोषणापत्र में
सत्य-स्वप्न भर लेंगे ?

लंका से लौटी सीता-सी
मैं पवित्र नारी हूँ
अग्नि-ताप से खिली [illegible]
गर्वित कलिका-क्यारी हूँ

काशी-तट पर बाणभट्ट की
कथा हो रही शेष
मन को बुला रहा रह-रह कर
मातृ मागधी देश

निष्फल-सी साधना हृदय में
करती हाहाकार
कादम्बरी किन्तु प्राणों में
भरती नव संचार

दृग में नव मल्लिका अमल
साँसों में स्वप्न-समीर
जन्मभूमि के लिए किन्तु
अन्तस्तल अधिक अधीर

आज उदासी व्याप्त मधुरतर
विकल मल्लिका-मन में
डूब रहीं दोनों आँखें
उमड़े घुमड़े से घन में

तरणी पर आ रहा कौन
लहरों में कुछ कहता-सा
प्रेम-पुष्प आ रहा एक
उर-गंगा पर बहता-सा

कौन कह रही—'नहीं भूलना
नहीं भूलना राही
बिसरा मत देना प्रमिल
आत्माओं की गलबाँही

"परदेशी भूलना नहीं
आशा में वास करूँगी
साँझ-सबेर मन के घट में
लोचन-नीर भरूँगी'

चली जा रही है नौका
लहरों पर पंख पसार
विहगों में ज्यों मुग्ध उतरते
आते नदी-किनार

विन्ध्याचल की शिखर-श्रेणियाँ
छूती मुक्त गगन को
विविध पुष्प की गंध रागिनी
भर रही मृग-मन को

नाविक ! तीव्र तरी को अब
धीरे धीरे जाने दो
अनुपम सुषमाओं को दृग के
दर्पण में आने दो

नक्षत्रों की भाँति स्वत—
फूलों से शाल सुशोभित
पुलकित मधु-मादक-सुरभि से
सघन वन्य-पथ कुसुमित

विविध फलों से लद वृक्ष पर
उच्छल चपल वानर
घन प्रत्याशित खग-कलापिनी
गूँजती गिरि निर्झर-स्वर

बँधा रुचिर चरणाद्रि-युग
गत्यात्मक गंग-सलिल में
रजत ऊर्मि-अप्सरी उमगित
पुलकित हिरण्यानिल से

जिज्ञासा उस पार कौन ?
द्रुतगति से चलो पुलिन पर
स्यात् व्यथित नारी-कंठों से
ध्वनित क्षुब्ध कम्पित स्वर

क्रूर-दस्यु उत्पात प्रबल
पथी अतिशय दुख पाता
सीमित सबल भी वन-पथ में
जहाँ-तहाँ लुट जाता

श्रीपथ पर ललकार था
निर्मम व्याधित बल का
सदा सताता जो संध्या में
शोषित दुर्बल दल को

महाप्रबल सम्राट् हुए जब
करते शान्त उपद्रव
मरहुत शासन-संचालन में
सर्वोन्नति-गति सम्भव

दशम सर्ग

—

सप्त वर्ष पर साहित्यिक बापन्दु-आगमन
नम्र नयन में अश्रु-कुसुम-अन्तर्हित स्पन्दन
श्वास-चकित सस्वरा सारिका उच्छ्वस तत्क्षण
स्वजन-मिलन में मुग्ध-चित्रोर्मिल भृ गिल यौवन

प्रियापाश-परि-त्याग मित्रमण्डल-सब आए
रोम रन्ध्र में चन्द्र-गन्ध-गति-गुंजन छाए
प्रिय-दर्शन-हित दृष्टि-शिखर पर प्राण-पिपासा
मध्य रात्रि तक मुखरित मधुर मोह की भाषा

प्रातिकूट के निकट उर-अम कुसुम-तरंगित
तिमिरित नौका ज्यों सागर पर ध्रुव-दिशि-बिम्बित
आत्म-प्रतीक्षित उडुपति का प्रिय अनुआलिंगन
मीरित नयना में सम्मोहित मोहित मज्जन

आगत गुरु-चरणा की धूमिल किरण भाल पर
विरह-विसम्मित व्यथा वरण करती सम का स्तर
निद्राहीन निशीथ-मिलन कुछ करुणिम-अरुणिम
सस्मरभिन पथ-चयाभूमि पर प्राची स्वर्णिम

दैनिक हवन-कुण्ड पर वैदिक मंत्र बिखरते
अर्चिष्मान बाण के संयत प्राण सिहरते
वनिता के दल मधु-मांगलिक पूजा करते—
अक्षत-चन्दन-पुष्प पाद-पीठों पर धरते

चित्रकूट का प्रखर प्रभात तपोवन-सुन्दर
सिकता-शोभित शोण-धार पर जल हिलोर-स्वर
भाग रहीं हिरणियाँ इधर से उधर पुलिन पर
द्रुमदल पर विहगियाँ चहकतीं पंख खोल कर

अरुणोदित अम्बर का रक्तिम उर धरती पर
झरता ज्योतिर्नद नीलाद्रि-शिखर से झर झर
तुहिन-बिन्दु पर रत्न-स्वधा का मसृण किरण-घन
स्थलापत्र से टपकित मिणा प्रमुदित रस-कण

क्षौमांशुक आवृत कटि पर ताम्रोज्ज्वल कसती
वाष्पित जल-प्रवाह पर बजती मोहक वंशी
उषा-काल में अरुण पाश रचता शिल्पी रवि
छवि-गृह में छन्दायित होता करुणामय कवि

बाणभट्ट की स्वप्न-विभा फैली दिगन्त तक
आँखें उड़न लगीं अंकुरित नव वसन्त तक
प्राण-पद्म-पंखुड़ियों पर उतरी अरुणाई
सुरभि-छन्न कल्पनामयी साँसों पर छाई

भीगे भोजपत्र कुहियों से सुधियाँ उतरी
खुले कुसुम-कुन्तल स्निग्ध-स्निग्ध मादकता बिखरी
राका-रंजन-सिन्धु में डूबी मन की तरणी
कुमुदमयी हो गई चन्द्र-मन की पुष्करिणी

भाषा की भामिनी-यामिनी सम्मुख आई
मधुहासस्मित कलिका विधु-गृह में सकुचाई
भ्रू-विलास की प्यास तरंगित हुई नयन में
उठी गीत की लहर सपूरी चन्द्र-वदन में

भाव-कमल-कुच कस्तूरी चन्दन से चित्रित
उर-दुपट्टा प्रच्छदपट कल्पित कर से विस्तृत
स्वप्न-सरोवर में शशि-स्नान परागित प्रमुदित
मन-कैलासपुरी में हर्षित कुसुम वर्षित

एक रात की बात कि घटा घिरी अकुला कर
भाग गई बिजली सुदूर सकुचा-सकुचा कर
प्राण-गगन में धनी-सुधि-विहाग की वाणी
अभिलाषा की सुगम-सौगंध-कहानी

रेखा की स्वर-गाथा सीमित हरित हृदय में
मधुर माधवी की छाया सी उच्छल लय में
मुग्ध मल्लिका प्रणय प्रसून हिलानेवाली
श्याम राग में स्वप्निल सुधा पिलानेवाली

धन-मन-इच्छा अब न रहे सूना गृह-कानन
आँगन में चमक नूतन तारा-चन्द्रानन
कवि मयूर-आगमन-सुमिश्रित शीत वायु में
मगन परिणय सम्भावित पुष्पित प्रवास में

प्रयसि-प्रथित छन्द-पत्रिका रस ऋतुवाली
तृण-तरंग पर चन्द्र-चुम्बिता ज्यों शेफाली
मदिर मोहिनी शब्द-शोभिनी शचि की राका
श्याम-कुंज पर उतरी-सी आषाढ़-बलाका

नभ वृन्त की छुई कली स्मृति-हिमकण पीती
आशा-किरण सँजो कर नित भाषा पर जीती
आत्म-सुरभि भरी साँसों में मिली हुई है
कली अधखिली नहीं नयन में खिली हुई है

उत्तर क्या दूँ तुम्हें? रूप की रात घुमाती
प्रणय-चन्द्रिका-लहर प्राण पर कुसुम चढ़ाती
मृगयालुब्ध किरात-कामना-सी सुधि-पाला
सदा टूटती नील नभ की तारका-माला

भाव-भित्ति में बिम्बित दर्पण टँगा हुआ-सा
मेरा बँधा हुआ मन अब तक बँधा हुआ-सा
शय्या-सम्मुख सुधि-वातायन बन्द नहीं है
ऐसा मत समझो कि प्राण में छन्द नहीं है

कान्तिमती स्मृति-पक्षिणि अदिति में उड़ती-फिरती
विद्युत-लहरी अन्तरिक्ष तक उठती-गिरती
प्राण-प्रियतमे! फिर अमित स्थिर बाण तुम्हारा
देखोगी तुम सत्वर कूजित द्रोण-किनारा

छूट गई जो छाँह बाँह की आएगी ही
देखा हुई चाँदनी फिर न छाएगी ही
गोल गूँथनी रग-रग से मेरी प्रतीक्षा
माँग रहा हूँ नित्य प्रिये में सुधि की भिक्षा

अद्रासि-निनादित पवन-घटा शशि राग दे गई
पुष्पक पवनो को रस भीनी बात दे गई
रसमीमया हरसृंगारित प्राण दे गई
बाल-किरण उर-हिल्लोलित आभास दे गई

प्रीतिकूट में कवि मयूर प्रभु प्रेरित आए
कृपा-वायु से पुष्पासव विपिन लहराए
मद-मृग-कुण्डली निराकरण में प्रमथ मन
धार्म्योचित सम्यम-विधियाँ सम्पन्न सनातन

झूमे मुग्ध मयूर बसन्ती घन के नीचे
ज्यों राधा का नृत्य कृष्ण के मन के नीचे
बजी बाँसुरी वन में मगन गगन के नीचे
ज्यों किशोर हिलकोर सुहाग-नमन के नीचे

मुरली मुरज मृदंग उमंग तरंग प्रसंगी
रस-बिरंगी भाव भंगिमा विद्युत्-संगी
कल्पित कल्पना का झकोर-उल्लास अभंगी
हर्षाकुल वर्षा-विह्वल ज्यों लता लवंगी

स्वागत हर्ष-सभा के प्रिय कवि गीत प्रीत से —
प्यार-फुहार सुधा-सिंचित नव हार-जीत से
हे बन्धन के फूल! समारोह हे हिलोर के
मंगलमय तारा नवीन सम्बन्ध भोर के—

लोक-लगी का अभिनन्दन लो कवि मयूर हे
प्रीतिकूट के प्राणों में अब तुम न दूर हे
हे प्रभात! शशिमुखी रात में रमित निकेतन
देव-तुल्य हो आत्मनिष्ठ शुभ परिणय-बन्धन

आएगी नव वधू स्वप्न-सज्जित डोली पर
फूल झरेंगे प्रिय पथ में पिक की बोली पर
नाद-विजृम्भित श्याम व्योम में गान भरेगा
प्रखर प्रेम प्राणों में नूतन प्राण भरेगा

प्रीतिकूट में मौनाकुल मल्लिका आ गई
नयन-नयन में तृप्तिदायिनी विभा छा गई
शत-शत कोयल वसन्त-द्वार पर स्वयं आ गई
आँखें ढहनेवाली पाँखें तुरत पा गई

चपल चुम्बन-किरण कपोल-कली पर झरती
स्निग्ध चपलता-मृगी दृगी-दूर्वादल चरती
पुष्प-बाण से रूप रजत रजनी कुछ डरती
सद्य श्वास-सौरभ-स्नाता मल्लिका सिहरती

लज्जित दृग में द्वन्द्व छन्द साँसों के मन में
उगा चाँद धीरे-धीरे उभरे यौवन में
बाहुपाश में प्यास—हृदय-आकाश बँधा है
है असीम आनन्द मलय-उच्छ्वास बँधा है

उष ! न आँखें खोल चाँदनी बहक रही है
देह-स्नेह की सुरा अभी तक छलक रही है
ऋतु वसन्त-शय्या पर जीवित स्वप्न-स्वर्ग है
प्राण ! अभी यह महानाट्य का प्रणय-सर्ग है

खटका देता कौन द्वार में ? दिवस हो गया ?
अरे हृदय का चोर हृदय में तुरत खो गया ?
कौन मारुती भाभी ? यह कैसी निठुराई
स्मरण करो आर्ये ! अपनी भी वह अँगराई

प्रथम मिलन की रात बात सुनती न किसी की
गूँज रही पंचमी अभी तक प्राण पिकी की
पूज्या निर्मोहिनी सम्हालो नूतन तन को
प्रीणित दिवस दिखा दो सरस निदीपित मन को

रुक-रुक कर आनेवाली सुम-सिम कर आती
फुल्ल मल्लिका अब न अधिक मुझसे सकुचाती
दीपशिखा जलती सुषमा में रात-रात भर
उठती तरल तरंग विहँसती बात-बात पर

मन्द-मन्द मुस्कान नींद पर पहरा देती
परी स्वप्न की तरी स्वर्ग सरिता में खेती
छुपी छाँह में आशा-अंकित उगती माला—
जोड़ रही अब प्राण-पुरी से पावन नाता

स्वप्नाभा चम्पक-मुख-मुद्रा पर छाई-सी
कज्जल आँखें अमृतमयी कुछ अलसाई सी
सहज सरलता स्नेह भार से झुकी हुई-सी
तरणी जन्म-पुलिन पर आकर रुकी हुई-सी

प्रसव-पीर संगीत हृदय का हार दे गया
कोमलतम बालेन्दु रश्मि-झंकार दे गया
मिलन आत्म-सिंचित मूर्तिमय उपहार दे गया
अधर-विचुम्बित चितोत्थित शृंगार दे गया

हर्षोत्सव में मूर्त प्रेम पुलकित रे कितना
हिम-शोभित हेमन्त-मुकुल-सम कोमल जितना
छाती पर उमगवाली पीयूषी थाती—
दम-देम कर, प्राणदेवता ! म अँगराती

मिला स्वप्न-सपन्न मातृ-श्री अग अग में
प्राण किस म रहूँ कि मैं हूँ किस तरग में
लहर उठ रही मधुर-मधुर प्रिय अन्तरतर में
अमृत रागिनी नृत्य कर रही सौरभ-स्वर में

कमल-कमल में ज्वार कहाँ रम तू यह पानी
गूँज रही मगी वीणा में शिशु की वाणी
हृदय-वृन्त म भिन्न नहीं रक्तिम पुत्रोत्पल
नर-नारी सौबिम्बल का प्रतिबिम्बित मबल

सतति-सुख क लिए उरोजों में आकर्षण
रमी सिद्धि-हित सृजनमयी दारा में यौवन
पुत्र-प्यास क लिए कामना पल हिलाती—
अग अंग पर दुग्धजाल-परिमल बिखराती

मेर प्यार-दुलार! हार में जीत तुम्हीं हो
प्राणपुंज की गुंजित जीवन प्रीत तुम्ही हो
क्षीर सिन्धु मे निकली छवि-नवनीत तुम्ही हो
इच्छाओं म उदित प्रभात पुनीत तुम्ही हो

बीत अनगिन वर्ष प्राण-मन किंचित चिन्तित
दृष्टि प्रबल सम्राट-द्वार पर अन्तर-द्रोहित
वधू-बन्धु नविवार मयूर न पत्नी दी है
किसी दुष्ट ने नृप से भरी चुगली की है

भला कृष्णमर्दन ने कुछ भी लिखा नहीं क्यों ?
बोली राजमुकुट से मन्त्री-शिक्षा नहीं क्यों ?
सच है सोने में सुगन्ध होती न कभी भी
मणि-मण्डित आँखें पर हित रोती न कभी भी

पाषाणी प्रासाद पर्ण-गृह को न समझता
क्षीण सीकरा पर ज्यों पारावार विहँसता
कनक-कमल पर रेणु भारती कब गाएगी ?
हे मनुष्यते ! मातृ-चन्द्रिका कब छाएगी ?

पर, सम्राट् हर्षवर्द्धन प्रमुख कृपालु भी
राजनीति-साहित्य-समन्वित भू-पालक भी
युग-विचार-स्वर-अभिव्यक्त कर के हस्ताक्षर
मालवीय सामाजिक छन्दों के मित्राक्षर

फिर क्यों ईर्ष्या की आँधी उठ रही गगन में ?
कौन क्रूर वायस विष-कुंचित मुकुटित मन में ?
काव्य-बन्धु ! बाधारूप में भी ज्योति-नाद है
शब्दकोश में स्वयं भारती का प्रसाद है

ऐसा मत समझो कि घोष में ज्वार नहीं है—
गीता के कर में कौरव-कटार नहीं है
देखा है हरिद्रत ऐरावत वज्राघात भी
मान-शृंग पर भर अनर्थों तम प्रपात भी

सावधान अप्रकट कीर्ति-मम ! उरग न बनना
अग्नि और विद्युत्-परिपूरित मित्र की रचना
अतुल साधना का निर्णायक काल अबला
आएगी विश्वाभिषेक की मंगल बेला

चिन्तन की साहित्य चेतना मानों वश में
छुपा हुआ है वन भी उज्ज्वल हम बन में
शुभ्र चमकते क्या मोती भी हो सकता है ?
प्रतिमा-विभा तिमिर में भी क्या सो सकती है ?

सहज न शाश्वत काव्य आत्म-पीड़ा से संभव
नवदृष्टि की सूक्ष्म सृष्टि में संस्कृति अभिनव
कठिन प्राण-अनुप्राणित अनुभव बने सु-भाषा
कविता सुप्त-असुप्त चेतना की जिज्ञासा

उत्फुल्लित मल्लिका-माधुरी-गंधहास पर—
उड़ता चारों ओर ग्रीष्म-रवि का ज्वालाम्बर
धूल-धूसरित रुद्रकाल का ताण्डव प्रतिपल
लू से झुलसित तप्त धूप की धारा फेनिल

पनघट-निकट आम्र-छाया में पथिक पिपासित—
स्नेह प्रदर्शित ग्रामवधू से नीर-निवेदित
सम्मुख लाल पलाश पीत तरु अमलतास है
भीषण है आताप विहग। वैशाख मास है

पर, सम्राट हृदयजन मधुप कृपालु भी
राजनीति-साहित्य-समन्वित सु-सागर भी
युग-विचार-स्वर-यति-पथ के वे हस्ताक्षर
मालवीय सामाजिक छ दों के मिश्राक्षर

फिर क्या ईर्ष्या की आँधी उठ रही गगन में ?
कौन क्रूर वायस विष-कुंचित मुकुटित मन में ?
काव्य-शत्रु ! साम्राज्य में भी ज्योति-नाद है
शब्दकोश में स्वयं भारती का प्रसाद है

ऐसा मत समझो कि भोग में प्यार नहीं है—
योगों के कर में कामना-कटार नहीं है
देखा है इतिहास ऐरावण चक्रवात भी
आत्म-ऋण पर भरे अनर्थों तम प्रपात भी

सावधान अमरत्व कीर्ति-धन ! उरग न बनना
अग्नि और विद्युत्-परिपूरित शिव की रचना
अतुल साधना का निर्णायक काल अकस्मात
आएगी विश्वाभिषेक की मंगल बेला

विक्रम की साहित्य चेतना यहाँ देश में
छिपा हुआ है अब भी उज्ज्वल हम वेश में
शुभ्र कल्पना क्या सोनी भी हो सकती है ?
प्रतिमा-विभा तिमिर में भी क्या खो सकती है ?

सहृदय में शाश्वत काव्य आत्म-पीड़ा से सम्भव
सद्दृष्टि की सूक्ष्म सृष्टि में प्रकृति अभिनव
कठिन प्राण-अनुप्राणित अनुभव की भू-भाषा
कविता सुप्त-असुप्त चेतना की जिज्ञासा

उत्फुल्लित मल्लिका-माधुरी-मधुहास पर—
बहता चारों ओर ग्रीष्म रवि का ज्वालाम्बर
धूम्र-धूसरित रुद्रवात का ताण्डव अखिल
लू से लुण्ठित तप्त धूप की धारा फेनिल

पनघट-निकट आम्र-छाया में पथिक पिपासित—
स्नेह प्रदर्शित ग्राम वधू से नीर-निवेदित
सम्मुख लाल पलाश पीत तरु अमलतास है
भीषण है वातास विहग! उदास ग्राम है

अश्व धेनु अजिका महिषी विश्रामित निद्रित
शाखास्थमस नीम पीपल वट जम्बू दोलित
सेमल-फल फटन से रुइ विधि-विधि बिखरित
खर्जूरों के पक्व फलों पर वायस विहरित

उष्ण दुपहरी में भोजन-उपरान्त सदन में
बाणभट्ट-अनिमष नयन चिन्ताकुल रण में
शयनित गृहिणी अनिन्दित शिशु को दूध पिलाती
पिंजरबद्ध सारिकाएँ शुचि मूक सुलातीं

सुहृद पारशव भ्राता चन्द्रसेन जब आया
वत्सभिन्ना इतिहास बाण न उसे सुनाया
विविध जनपदों की भी रोचक कथा सुनाइ
कहत-कहत अलस अक्षि में झपकी आइ

कहा भृत्य ने— 'स्वामि ! खड़े हैं दूत द्वार पर
दीर्घाध्वग है नाम सुगृह उनका स्थाण्वीश्वर,
नृपति हर्ष के अनुज कृष्ण की पत्री शिर पर—
थकी हुई है चकित तरुण तन स्वेदित सुन्दर'

बोले बाण— उस सत्वर गृह में ले आओ
सभा-दूत के सम्मुख सादर शीश झुकाओ'
चन्द्रसेन! आहार-योजना करो यथोचित
सर्व प्रथम तुम करो कष्ट-आभार प्रदर्शित

उत्सुक बाणभट्ट ने पूछा कृष्ण कुशल तो?
सम्प्रति व सुखमय स्थाण्वीश्वर में अविरल तो?
झुक कर 'हाँ' कह दीर्घाध्वग सन्निकट विराजित
निपुण भृत्य ने किया तभी क्षण मधुजल अर्पित

पत्री-बन्धन खोल कृष्ण-पत्री द्रुत अर्पित
आकुल दृग-मुख से भर-भर-भर हास्य उच्चरित
मौखिक वार्ता-श्रवण-पूर्व कोई न भवन में
केवल भट्ट और वाहक सम्वादित क्षण में

प्राण-मित्र प्रतिरूपित दूत निवेदित सत्वर—
बाण किसी ने फेंक दिया अपयश का कंकड़
दुर्जन मिथ्या भाषण से भूपति आशंकित
वशित दृष्टिकोण से तेरी प्रतिभा निन्दित

'गुणभूषित सम्राट् प्रतीक्षा करते तेरी
व्याप्त अभी तक रुष्ट प्राण पर रात अँधेरी
मैंने कहा कि सबका नव यौवन कुछ चंचल
नयनों से झरता रहता आकर्षण-परिमल

अधिक कहूँ क्या अब तू स्वयं सुपण्डित ज्ञानी
रखता नित आनन्द-पत्र पर कुसुम-कहानी
बुद्धिमान के लिए आत्म-संकेत बहुत है
और बाणा! तू तो अनुपम वात्स्यायन-सुत है

निशिगन्धाकुल मन्द्र-यामिनी हँसती आई
तरुण-टिकोरित आम्र-शिखर पर ज्योत्स्ना छाई
मल्लाकुल पिक-राग तिरोहित चन्द्र-गगन में
सुमन हिलोरें उठती तीर-तरंगित मन में

बाणभट्ट! इस समय दूत को क्या उत्तर दूँ
चिन्तित भीरुता को अपनी कौन लहर दूँ
एक ओर है शान्ति दूसरी ओर भारती
एक ओर है कृष्ण दूसरी ओर भारती

और मध्य में प्राण-मित्रता विकल खड़ी है
बाणभट्ट[1] अनुशीलन की यह कौन घड़ी है?
मैं न हर्ष का सेवक जो भय से अकुलाऊँ
क्यों जाऊँ मैं क्यों जाऊँ मैं क्या क्यों जाऊँ?

चाटुकार मैं नहीं न कुछ भी लोभ कहीं है
जो स्वतन्त्रता यहाँ मुझे वह वहाँ नहीं है
मेरे गृह ने राजभवन को कभी न देखा
अभिन्न कभी न रही किसी दिन जीवन रेखा

मैं एकान्त विपिन का कोकिल गानेवाला
गरज-बरस कर स्वात जलद में छानेवाला
राजकृपा ने मेरा क्या उपकार किया है?
स्थाण्वीश्वरपति ने न कभी सत्कार किया है

फिर किसका भय करूँ? भुवन में कला-पुजारी
बाणभट्ट-सा का मैं भी सम्राट् भिखारी
वाणी का सिंहासन करता अपने घर में
स्वर्ग-निसर्ग छुपा है मेरे गुंजित स्वर में

वात्स्यायन-वंशी न राज्य-छाया में रहता
आत्म-मान तज अन्न-भिक्षा पर कभी न बहता
अपने का सम्मान कलंकित हो जाता है
ज्यों गुण अवगुण में मिल सब कुछ खो जाता है

बाणभट्ट! पहचानो अपनी ज्योति-धार को
हवन-धूम-शोभित देखो निज ज्वलित द्वार को
तप है यहाँ यहाँ केवल आनन्द-लहर है
पहचानो तुम! दो डगरों में कौन डगर है?

दोषारोपण के कलंक को भी न मिटाऊँ?
मधुर मित्र-आमंत्रण को भी मैं ठुकराऊँ?
नहीं नहीं मेरी मैथिली परीक्षा देगी
ज्योतिर्मय मस्तक पर कनककिरीट धरेगी

शंकर हे! प्राणों में अब प्रलयंकर-स्वर दो
भर दो भर दो स्वर में सागर-गर्जन भर दो
प्रिय मल्लिका! मैं कल ही प्रस्थान करूँगा
व्यथाकुल सम्राट् प्राण में किरण भरूँगा

मंगल मलयवायु-बला में सुनी बोलती—
'उठो बाण ऊषा प्राची-गृह-द्वार खोलती
स्वामी निद्रावरण कक्ष से निकले बाहर
ग्राम-युवतियाँ निकल चलीं ले-लेकर गागर

होकर निवृत्त स्नान-पूजा से बाण प्रफुल्लित
मुकुर-अमल वपु के संग सस्मित मुख बिम्बित
धवल दुकूल वस्त्रधारी कवि राजायित-सा
हृदलोचना-शान्त प्रतनु कुछ आत्म-चकित-सा

प्रात्यानिक सूर्यो-प्रभा में मिलकर चन्द्र था
अश्वमेध-आरम्भ-काल थी रघु का मन मन क्यों
कर प्रदक्षिणा प्राङ्मुखी नैचिकी धनु को
झुक कर पूजा की कवि ने उडु-चरण रघु की

आशीर्वाद लिए आगत गुरुजन-परिजन से
किया ध्यान नक्षत्र-देवताओं का मन में
गोबर-लिम्पित पवित्राङ्गन-लक्ष्मी-दर्शन कर
बार-बार सुन विजय-घोष का अति उच्चस्वर—

प्रीतिकूट से निकले कवि सबको प्रणाम कर
गूँज रहे ब्राह्मण-गण-मुख पर मंगल मृदु स्वर
मधुर मल्लिका उठा रही पति चरण-धूल को
शिशु-कपोल पर सँजो रही निज नयन-फूल को

दीर्घाध्वग के संग आ रहे बाप विहँसत
जाने-पहचाने जन कहते—भटट ! नमस्ते
धूप लगी तो बाहु तान कर छत्र पथिक यों
माघ-दुपहरी में विहग घन-छाया में ज्यों

मल्लकूट लघु गाँव वणिका-वन के पास
दूत ! समीरण-संग-संग हम सत्वर भागें
ठहरो देवीस्थान यहीं है वंदन कर लूँ
धूमाङ्कित शुचि मूर्ति नमित नयनों में भर लूँ

शोण और गंगा का सुन्दर सलिल-मिलन है
दो नदियों के मध्य भाग में वणी-वन है
झुक-झुक करता सूर्य पल्लवों के वितान से
सन्ध्या उतर रही स्वर्णिम दिनमणि-विमान से

मरुस्थल में मेरा मित्र जगत्पति रहता
पौराणिक सुर-कथा नाट्य-स्वर में वह कहता
वहीं आज विश्राम करेंगे सखा-सदन में
दूत! अनगिनत मित्र मिले मेरे जीवन में

सुना मृदंगाश्रित वन-जन के सहगायन-स्वर
बुद्ध-पूर्णिमा-पर्व मनाएँगे सब मिलकर
देखो सम्मुख उसी गाँव का जगत निवासी
शैशव से ही भ्रमणशील वह काव्य-विलासी

कृषि कीलित परिवार चिर सुखी सब प्रकार है
देखो वहीं जगत्पति का पाषाण-द्वार है
मौसम्मी-चन्दन-अशोक-तरुपंक्ति खड़ी है
लता-वल्लरी खिली फूली-सी हरी भरी है

डूब रहा दिनकर, गंगा की झिलमिल धारा
गगन पर है अब संध्या का परिचित तारा
श्यामारुण, पीताभ चमचमाती नौकाएँ
महाशून्य में स्तब्ध विहगमय सभी दिशाएँ

मुग्ध वनस्पति निमीलित आनन्द प्रदर्शित
प्राणों की पूर्णिमा फूट कर हर्षित-चर्चित
अब रात्रि तम वसन कथा प्रभा बिखराइ
कोयल एक उड़ी कि दूसरी-स्वर पर आइ

स्वत प्रात में पथिकों ने निज चरण बढ़ाए
मन के घन नयनों के नभ म आए छाए
यान-यात में रवि पूरब स पश्चिम आया
सुरसरि-शुभ्र धार पर सन्ध्यानिल लहराया

पक्षिबहक वन-नीड़ आज का रैन-बसेरा
जागी धरती ज्योंही आया स्वर्ण सवेरा
उठा एक तूफान अचानक दोपहरी में
मचा महाभारत भूतल पर सान्ध्य घड़ी में

काल-प्रभंजन न विनाश के बाण चलाए
जीर्ण-शीर्ण मतिधाम वृक्ष के सिर चकराए
हुए धराशायी दुर्बल तरु घात प्रहार स
धीरे-धीरे निकल हम विकराल हार से

अचिरवती-तट पर मणितारा ग्राम यही है
इस यात्रा का लक्षित पूर्णविराम यही है
दूत ! कहाँ मैं चलूँ ? कुमार कहाँ है मेरा
सपनों का बिछड़ा शृंगार कहाँ है मेरा ?

प्रिय-दर्शन हित दोनों दृग में आकुलताएँ
भाव-भुजाओं में आह्लादित विह्वलताएँ
सौम्यता से आवृत अन्तर मांगलिक-सा
श्वास-समीरण से अभिनन्दित प्राण-पताका

एकादश सर्ग

प्रत्युत्कण्ठित अपलक लोचन निद्रा-विहीन
अन्तर-प्रवाह पर तिरित भाव-तारुण्य-मीन
शयनीय मयूराङ्कित चन्द्रांशुक सेज-तरी
तारकित दृष्टि में द्वन्द्वित अधमि प्रभा बिखरी

दुविधाङ्कुर सुविधा-सुख-समुद्र-गर्जित तरंग
फेनिल उर-तट पर हिल्लोरित शङ्कित उमंग
ज्वारों पर यौवन-आकांक्षित अभियान सबल
लक्षित विरोध से कम्पित अनस्थिर अतल-वितल

कमनीय कक्ष से लुप्त हुई रमणीय रात
जिज्ञासित वय में रुकी अभय अज्ञात बात
आकालिक ध्वनि से उठी प्रतिध्वनि बार-बार
था प्रश्न एक पर उर्मिल प्राणोत्तर अपार

गूँजे निशान्त के उषा प्रान्त में किरण चरण
चन्दन-समीर में व्याप्त विहग-वादन नूतन
अरुणाभ अवधि से पूर्व प्रतनु का शयन-त्याग
नयनों में किंचित् रात्रि-अभिहित अलस राग

मणितारा-स्कन्धावार-स्वप्न पर ग्रीष्म प्रात
प्रासाद-शिखर पर क्षरित ज्योति का जलप्रपात
वीणा से यौगिक रागालिम्ब रंजित अमन्द
बिखरे किन्नर कंठों से तन्द्रिल मन्त्र-छन्द

आलोक-पथ पद-पद सौगन्धिक शुभ्र स्नान
देवालय में भावाकुल हृदय से इष्ट-ध्यान
विधि-वास्तुकला-अवलोकन से उत्फुल्ल प्राण
पाषाणों में साकार विश्वकर्मा महान

लौटा दीर्घाध्वग-सम मदन में न विभोर
देखता रहा अलंकारित शोभा सभी ओर
प्रिय उपाहार-पश्चात् कृष्णार्द्रम-सुमिस्न
लोचन-स्पर्श में प्रतिबिम्बित चुम्बित चितवन

मित्रालिंगन से स्नेहोत्पल्लित विमुग्ध बदन
पुष्पायु-मन्दिर में प्रक्षालित स्मित नयनाञ्जन
पुष्पाकुल बाहु-कन्दरों में तन-तरु प्रमग्न
परितोष-प्राप्त मनीय प्राण-मय स्वराच्छन्न

बोले कुमार! "हे भक्ति-प्रतीक्षित बन्धु विमल
करना नृपेन्द्र-वार्ता सुमधुर, सविनय अचपल
बन धीर, वीर, गंभीर, सुहृद संयमी सफल
तजोज्ज्वल महापुरुष-सम्मुख होना न विकल

झुकना नहीं सम्राट् निपुणतम नीतिवान
लोहित कृपाण में कृपा अकृपण यजनमान
मृदुता-कठोरता-संगम पर आरूढ़ शौर्य
विक्रमादित्य में आलोकित ज्यों महामौर्य

कल्याण-कल्पनामयी सदा भूपाल-दृष्टि
रचती प्रबुद्ध प्रतिभा अन्तर-संकल्प-सृष्टि
पर यदा-कदा जलदाम्बर में उठती विद्युत्
झरते तुषार-कण तब चन्द्रिका चमकती द्रुत

"चौंकना नहीं यदि अग्नि उठे चन्द्रानन में
करता न दीर्घ गर्जन मृगेन्द्र वापी-वन में
तुम समर-भूमि के नहीं कला-भू के वासी
रखना सदैव संतुलित शब्द-संकुल-काशी

श्री हर्षदेव भूमिपाल हृदय के अधिनायक
उद्दाम ऊर्मियों के अभिराम मधुर गायक
विश्वास मुझे उनका प्रसाद तुम पाओगे
पूजित होकर ही प्रीतिकूट अब जाओगे

'सम्प्रति ये किंचित खिन्न दस्यु-उत्पातों से
कुछ चिन्तित सीमा के अरि-संघातों से
पर रत्नदीप को देख मुदित होंगे लोचन
छाएँगे प्राण-कुंज में किरणों के गुंजन

"दीर्घाध्वग! प्राण-सखा-संग मण्डप तक जाना
नियमाचित सन्ध्या-गोष्ठी-स्वीकृति में आना
मैं आज गुप्त मन्त्रणा-कुक्षि में जाऊँगा
अवकाश प्राप्त कर सत्वर स्वयं पधारूँगा

"मगधानुकूल हो अशन प्रबन्ध मित्रवर-हित
साहित्यातिथि का शुचि स्वभाव प्राय लज्जित
निशि में प्रमोद-गृह में प्रस्तुत हो गीतिपाश
वीणा-वाणी का हो विलासमय स्वरोल्लास

'इच्छित प्रिय यदि, तो अभी कला-मन्दिर जाओ
अभिनव आजन्तिक भित्ति-चित्र-पट दिखलाओ
यदि रुचे इन्हें तो ग्रंथागार दिखा देना
अनुकूल पोथियाँ अवलोकन-हित ला देना

"ताम्बूलिक रुचि-परिपूरित प्रिय-श्री भट्ट बाण
रचना समास मण्डित अविरल सूक्ष्म ध्यान
वात्स्यायन-वंशपुत्र का सामन्तिक स्वभाव
उत्तराखण्ड तक अवगत सारस्वत प्रभाव"

मन्त्रादेश कर व्यक्त कृष्ण द्रुत प्रस्थानित
मैं मग्न दोलती-सा सस्मित दृग-सकोचित
कोमल कुमार व्यवहार-कुशल ब्राह्मण-समान
मिथ्या आदर्श रहित यौवन सद्गुण प्रधान

मैं मग्न कृष्ण के मोहक मैत्री-बन्धन से
उठती सुगन्ध-सी आह्लादित चन्दन-तन से
आकर्षित करती स्निग्ध सरसता जीवन को
भर लेता प्राणपाश में प्रेम मधुर मन को

ग्रीष्मित शरीर निद्रामातुर अध्ययनोपरान्त
निशि-निद्रित अलसित नयन अकिंचन शयन-भ्रान्त
अधमुँदी दृष्टि में हर्ष-मिलन की जिज्ञासा
सुधि-हंस-पंख पर उड़ती-सी अस्फुट भाषा

सन्निकट सुनिश्चित अवधि हुई ज्योंही अवगत
अनुकूल आवरण-चयन-निमित्त हुए दृग रत
मधुपेय और ताम्बूल-पान से मिली स्फूर्ति
राज्योचित वस्त्रावृत तन दर्पण-सुरुचि-मूर्ति

दौवारिक-संग में चला महानृप से मिलन
उत्सुकित वृन्त की कली लगी खुलन खिलन
सघन-श्वास-लास्यों का प्रकृत आरोहण
ऊर्मिल उमग-शृंगों पर उदित आत्म-यौवन

अनुशासित प्रतिहारी ने नमन किया झुक कर
सांकेतिक आशीर्वाद दिया मन्द स्मित कर
फिर बढ़ा देखता बाह्य वस्तु सज्जित समस्त
दर्शन-परिचयन में भावुक दृग हुए व्यस्त

दौवारिक पारियात्र के संग दीर्घा' आया
प्रतिहारि प्रमुख ने भरा प्रिय परिचय पाया
हस्तावाहन से बढ़ मन्द निर्भीक चरण
गजराज दर्पदाप को निरख अति चकित नयन

मुक्ताउज्ज्वलमण्डप-सम्मुख हर्षित हिलोर
मणिमुक्तामय सुर-सदन छवि लोचन विभोर
ग्रीष्मानुकूल चन्द्रोपल शीतलित स्फटिकासन
अलसित विनोद-मुद्रा में विमल नरेन्द्रानन

निर्वात अगरवन तमालतरु के समान
दिशि-दिशि स्वर्णासन पर नृप-दल सोमासमान
पाटलोद्यान में ज्यों अनेक द्रुमपुष्प नमित
स्थाण्वीश्वरपति-सन्निकट विशिष्ट अतिथि प्रमुदित

चामर-सुग्राहिणी प्रतिहारिणियाँ धनिलक्ष्मी
सर्वत्र भाव-भंगिमा शान्त सौम्या विनयी
मालवकुमार के संग सरस वादन-विलास
दाड़िम-दन्तों पर मद-मोह-सम शिष्ट हास

मणिपादपीठ पर हर्ष-वाम शुचि चरण दीप्त
ज्यों पद्मपत्र पर सद्य-भक्त नव सुमन-लिप्त
फेनिल कटि-वसन, सुप्रच्छदपट-धारी नरेश
ज्यों पूर्ण चन्द्र-सम्मुख सुहृम-हिमहास-देश

चौरित वक्षस्थल पर शोभित मुक्तिणेपहार
ज्यों मध्य मघवी नभ में शत तारक-प्रसार
केयूर-जटित आजानु बाहु रत्नाभ-स्नात
ज्यों शशिवसना एकान्त वीथिका-रजनगात

चिकुरित मस्तक पर मान्य मुकुट स्पन्दित मणित
कर्णों में कुण्डल तडितवृत्त-सम चलु चकित
सम्राट हर्षवर्द्धन-धृति-दर्शन प्रथम बार
शोभाप्य नयन सीमित समस्त सुध-बुध बिसार

उत्कम्पित तरंगों पर आती ज्यों अप्सरियाँ
नाचती हुई निकली द्रुत वारविलासिनियाँ
स्वनकस्ता-मणियाँ हिलीं वासन-गति-गुंजन म
चितवन की कलियाँ खिलीं स्नेहमता-सम्पन स

भारत इन्द्रासन पर बिखरी कामिनी-कला
मणिमुकुट-मुकुर में कौंधी मृण्मयी चपला
तन के तरु पर मन की अनन्त आशा संयम
मुखमुद्रा पर प्राणनिष्पादित-भाव रहित काम

कोमल कर में निपुणांगुलि-निर्मित आत्म-रूप
मानो दृग से अवलोकन करते भव्य भूप
हिल्लोलित उर-पथ वाद्यवृन्द से क्रमिक ध्वनित
उत्फुल्ल कण में नूपुर-किंकिणि-क्वणा क्वणित

श्रीकंठ-विष्णु श्रीहर्ष मत्त मुस्कान-युक्त
देहात्म धूम्र कम्पको सकल चिन्तनामुक्त
एकाग्र चित्त की दृष्टि कला-अलकापुर में
उर-स्वर उद्घाटित किरणोर्मिल उर्वशि-सुर में

चुप हुईं इन्द्रधनु-सी परियाँ वितरण कर सुख
तब पहुँचा मैं मन्थरगति से नृप के सम्मुख
श्रुत मधुर कंठ से मन सहसा 'स्वस्ति' कहा
गजपरिचारक ने अपरवक्त्र नव श्लोक पढ़ा

नृप ने पूछा दौवारिक से—"क्या यही बाण ?'
बोला वह झुक कर, 'देव ! सत्य कथनानुमान'
अमुदित दृग से देखा मरन्द ने मुझे तनिक
कुछ मुरझाया-सा लगा मुझे मुख श्री-अमित

सम्राट् पुनः बोले कि मिलन-कामना नहीं
उन्मत्त बाण के हित उदात्त भावना नहीं
कह दो इससे, अब प्राप्त कर मेरा प्रसाद
तब दूँगा मैं उचितासन का गौरवास्वाद'

भूपति-सुदृष्टि फिर गई उधर इतना कह कर
मालवकुमार से बोले फिर कुछ चुप रह कर—
'वात्स्यायनवंशी युवा बाण भारी भुजग
कलुषित कर्मों में केवल दूषित राग-रंग

सम्राट्-वचन से स्तब्ध सभासद्-मुखमण्डल
मेरे शोणित में कौंध उठे द्रुत विद्युत्-दल
यौवन-समुद्र में मचा आन्तरिक कोलाहल
मर्यादित चित्त भी पग हुई चपल-चंचल

मेरा स्वतन्त्र ब्राह्मण जागा सुन जयनाद
हर्षित उमंग में छाया अब क्षोभित विषाद
गर्जी अपमानित आत्मा—कर दो सदन-त्याग
साहित्यिक क्यों लगा दमित लोभित प्रसाद ?

आकाशपुष्प अवनी को देता आत्म-दान
सांस्कृतिक कामनाएँ करता वह नित महान
बाँटता अमृत जीवन भर कर धारणा-ध्यान
सक्षम शिव-सा करता पग-पग पर गरलपान'

मैं बोल उठा हे देव ! अशोभन बात न हो
नर-स्वाभिमान पर निराधार आघात न हो
आरोप-पूर्ण अनिवार्य सत्य का अनुशीलन
मिथ्या भी होते प्रायः जन-मन-प्रवण-कथन

'मैं व्यक्ति नहीं साधारण वात्स्यायन रवि हूँ
दर्शन ज्ञाता कोमलता का कुसुमित कवि हूँ
शास्त्रानुरक्त मैं सामवेद-पाठक प्रमुख
तपसी-गौरव-गर्वित शोभित शुद्धातिशुद्ध

"वैदिक श्री-कुल में जन्म हुआ मेरा राजन्!
नियमित गृहस्थ कर्मोष्ठ सोमपायी ब्राह्मण
सच कहता हूँ सम्राट् कि मैं हूँ निष्कलंक
मेरे प्राणों में नहीं कहीं भी पाप-पंक

"नूतन वय में किसमें न चपलताएँ होतीं?
नव यौवन में किसकी न दृगी मृग-मद होतीं?
सुकुमार श्याम को सुरभि हिला ही देती है
चन्द्रिका मुकुल को सुधा पिला ही देती है

'सौन्दर्य-शक्ति से ही होता रस का विकास
विस्मृता प्राप्त करता छवि में लोचनाकाश
शशिकिरण-वृष्टि से बुझती रहती दृष्टि-प्यास
सुन्दरता के स्वर्गागमन पर ही कालिदास

देखा है भारत को मन भी है भरता!
नयनों में चित्रित स्वप्न-सगमित मन्मथ-रथ
कल्पना-किरण में गूँथूँगा प्रतिबिम्ब-हार
खोलूँगा संचित स्वर में लक्षित कीर्ति-द्वार"

विप्राषित स्पष्टीकरण व्यक्त कर क्षार-स्वर से
पूछने लगा कुछ प्रश्न स्वयं अन्तरतर से
मुख स्वेद-वारि को पोंछ पीत प्रच्छदपट से
लोचन को मुक्त किया कुंचित कुन्तल-लट से

स्नेहिल दृग से सम्राट देखने लगे रूप
मैं खड़ा रहा सम्मुख बनकर आश्चर्य-स्तूप
बोले वे—'हमने ऐसा ही तो सुना तथा
वात्स्यायन-आन-गमन के शुभ इत्वर-सभा'

उत्तर में मैंने कहा—"देव! दिन आएगा
मिथ्या भ्रम-निधि का भेद स्वयं खुल जाएगा
लौटूँगा अब मैं प्रीतिकूट लेकर प्रसाद
साधना कभी करती न व्यर्थ वाणी-विवाद'

सम्राट् मौन हो गए और मैं रहा खड़ा
गर्वित किरीट-आलोक नहीं मुझ पर बिखरा
वैभव व बल ने किया हृदय का तिरस्कार
नृप प्रथम मिलन में मिला व्यथा का पुरस्कार

समापण आसन-धाम आग्नि मे मैं वंचित
सामान्य शिष्टता भी न राज-गृह में किंचित्
हो रही स्मरण पाटलीपुत्र-कौटिल्य-कथा
सम्राट् मन्द प्रासाद-विमूच्छित मर्म-व्यथा

पर मैं तो काव्य-कलाम्बर का रस रागारुण
पद्मिल प्राणों की प्रतिमा में प्रम तरङ्ग तरुण
अपमान-तिमिर-विष सुधा-सदृश पी गया आज
कुछ भी न हुए सम्राट् हुए जो लोक-राज

सन्ध्या-गोष्ठी हो गई विसर्जित प्रभाहीन
भूपालाकृति दिव-दीपशिखा-सी लगी क्षीण
सकरुण तम-दर्पण में भरा भी मुख मलीन
निस्तब्ध पादप में मन्द-मुखर परिताप-लीन

सभा-पथ से लौटा खग-सा मैं विकल व्यस्त
नग में निशान्त-चित्रांजलि-पथ मकरन्द-न्यस्त
मर्माकुल मन में आशा की माया अथाह
अवलोकित भूषन-कोकिला शिशिरित स्वत्व-दाह

धीरे-धीरे बुन-बुन कर दृढ़ कल्पना-जाल
अपमान प्रतिध्वनि को मन-ही-मन टाल-टाल
सौरभ भविष्य श्रीहीन-श्वास-वृन्तों पर भर
लौटा मैं लज्जित गृह में ज्यों सन्ध्या-दिनकर

अब नृप-निवास में रहने की इच्छा न तनिक
विप-वार्ता का कथनीय नहीं अभ्यास अधिक
अंगार-वृष्टि में आत्म-विहंगम चुप न रहा
अनुचित प्रहार निर्भय यौवन ने नहीं सहा

नृप-दोष नहीं दोषारोपित गत कला-क्रम
अज्ञात अभी तक शिल्प-सिद्धि का मधुर मर्म
अन्यथा कलंकित मुझे न करते धी-धरेश
पूर्वार्जित चारु चपलता से ही हुआ क्लेश

सम्राट्-गिरावर से नूतन चेतना मिली
जीवन में जय करने की नव प्रेरणा मिली
स्थाण्वीश्वर में साहित्यिक तप करना होगा
संदिग्ध पात्र में प्राणामृत भरना होगा

अभिशापों को यौवन वरदान बना सकता
श्रम को सुगम मैं अनुभव गान बना सकता
निर्झरी बहेगी स्वयं तिरस्कृत गिरि-पथ में
निकलेगा रवि घनान्धकार भेदित रथ में

साहित्य-द्वार पर सुरपति को आना होगा
भारती-अर्घ्य पूजार्थ कभी लाना होगा
झुकना होगा साधना-सत्य पर जन-मन को
ढलना पड़ेगा दारु-तपस्या-कानन को

कवि होकर भी कवि का न रूप न पहचाना
शासन के अस्थायी गौरव को ही जाना
सभ्यता सुसंस्कृत होती हृदय-मधुरता से
मनुजत्व दिव्य होता मस्तिष्क-प्रखरता से

मैं भिक्षाटन के लिए कदापि न आया था
नृप-स्वजन-हित भी नहीं कभी अकुलाया था
प्रिय प्राण-सखा ने मुझे बुलाया साधिकार
आमंत्रण पाकर ही आया मैं प्रथम बार

मणि-मुकुटाम्बर में उगा कि गुण हो गया अस्त
सभी दुराव में डूबी आकांक्षा समस्त
अस्तित्व गरजता रहा घृणा के मरु-वन में
मौन अकुलाते रहे अनल-नगाङ्गम में

राज्यासन पर खिलते न मदाधित काम्य-कमल
हीरक-मणिशृंगों पर दुर्लभ द्युति वाणी-जल
कंचन-घाटी में मुक्त मेघ का चिर अभाव
प्रभुता-मद-नद में तिर न सकेगी हृदय-नाव

लोहित प्राणों को बना सका यदि मृदुल मोम
मूरत में यदि मिल सका सुधा से सिक्त सोम
होगा जीवन चरितार्थ बाण का पृथ्वी पर
विजयी होगा कल्पना-कला-ज्योत्स्ना-निर्झर

नव द्वन्द्व-राशि में कुण्ठित कृष्ण मिलन आए
संतप्त श्वास के पवन प्राण में अकुलाए
पर अट्टहास न चीर दिया चिन्ता-वितान
उड़ चला गगन में वाणी का पुष्पक विमान

पर कैसे समझूँ प्राण-नयन में पीर नहीं
उर-शतदल पर सम्राट हृप-तूणीर नहीं
मित्रता-अश्रु ने मूक-क्षमा मुझ से माँगी
श्रद्धानुरक्त मानवता की करुणा जागी

ऐसे गृह का मैं अतिथि जहाँ अपमान स्नेह
संगम पर स्थिर मधु-कटु-मिश्रित दृढ़ तरुण देह
शशि की शीतलता इधर, उधर मार्तण्ड-ज्वाल
आनन्द और दुखपूर्ण आज का कठिन काल

पतझर में भी मैं और वसन्त-दुकूलों में
शूलों में भी मैं और स्वप्न के फूलों में
मैं यहाँ रहूँ या वहाँ रहूँ मैं कहीं रहूँ
अस्तित्व न भूलूँ अपना चाहे जहाँ रहूँ

मन कुमार से कहा 'मित्र! मत हो उदास
हो सका न अब तक कहीं किसी दिन मैं निराश
सौभाग्य एक दिन चरण चूमने आएगा
यश शिल्प-शिखर पर वज्र-केतु लहराएगा

'मत जाओ मेरे मित्र बन्धु से कुछ कहने
तुम मुझे स्वत्व-उन्मुक्त धार पर दो बहने
साधना देवता को भी स्वयं झुका लेती—
पाषाण-पुरुष को भी चुपचाप रुला देती

'मेरे कुटुम्ब भी रहते हैं स्थाण्वीश्वर में
मैं वास करूँगा कुछ दिन उनके ही घर में
दिव्यता एक दिन उतरेगी अभिशापा पर
सम्राट् झुकेंगे बाणभट्ट की भाषा पर

'कल ही प्रात प्रस्थान यहाँ से कर दूँगा
सकुम स्वप्नों को अविरल अभिनव स्वर दूँगा
साकार स्वर्ग का सृजन करूँगा सर्वप्रथम
मम काव्य-यज्ञ सम्पन्न कर रहा सृष्टि-नियम'

आषाढ़ उमड़ आया बादल-दल सभी ओर
विद्युत्-द्युति-सज्जित सुखद सरस पावस हिलोर
साधना-सोम मेरी तन्मय सदा नवीन
उड्डीन कल्पनाएँ मानस-भूमि के अधीन

सन्ध्या-गोष्ठी में सिद्ध रसिक-सम्मिलन-पर्व
'कादम्बरि' के चित्रों पर किसको नहीं गर्व ?
सम्राट् चमत्कृत हुए किसी के इंगित से
विस्मय-विभोर थे स्यात् भावना विस्तृत से

श्यामल श्रावण में राज्य-सचिव मिलने आए
विदत् न दोनों में थे किंचित् सकुचाए—
'आएगा वह भी समय एक दिन आएगा
जब राजमुकुट से काव्य श्रेष्ठ कहलाएगा

झञ्झा-गर्जन बादल की वेला बीत गई
मेरी कविता साहित्य-समर में जीत गई
वार्षिक परदुम्मन आज सरस्वति के तट पर
आए कुमार ही आमन्त्रण देने घर पर

द्वादश सर्ग

एक दिन आकाश-अश्व-तुरग पर
सूर्य-सेनापति कहीं था जा रहा
घटा-रथ से उतर कर द्युति-देवता
नव बलाका-हार था पहना रहा

बाण उस आषाढ़ के प्रासाद पर
बादलों को छू रहे थे हाथ से
कह रहे थे कृष्णवर्द्धन पथ-कथा
महातेजस्वी सफल सम्राट् की

हर्ष की दिग्विजय की आख्यायिका
गूँजती थी साँस की झंकार में
नयन-पट पर चित्र बनकर थी खड़ी
काव्य की करुणा अशनि-कल्लोलिनी

कल्पना उतरी उसी क्षण प्राण पर
ध्यान में इतिहास आकर रुक गया
बाण ने देखा कि युग खिसका रहा
शब्द-भिक्षा के लिए श्रीकंठ में

किन्तु दुविधा में पड़ी थी चेतना
मुक्ति का साहित्य था कुछ कह रहा
वत्सवधी-रक्त में कुछ हवन का
उठा रहा धुआँ मन के मंत्र से

बाण बोले कृष्ण तुम कर दो क्षमा
लिख सकूँगा प्रिय न हर्ष-चरित्र मैं
पूर्ण करने दो अभी कादम्बरी
साँस चलती है इसी में कला की

मुक्त पंछी हूँ विचरने दो मुझे
पंख को बाँधो न बन्धन-डोर में
केलि करने दो मुझे आनन्द में
अन्यथा मैं छोड़ दूँगा स्वर्ग को

द्रव्य के हित मैं यहाँ आया नहीं
बाण भूखा भी नहीं सम्मान का
सृष्टि यदि इच्छित कला की कर सका
स्वयं लोटेगी अमरता चरण पर

तुम असाधारण मित्र हो मेरे रसिक
और, प्रिय सम्राट् भी कवि-हृदय हैं
इस मधुर संयोग में मैं मुग्ध हूँ
रुका हूँ इस [illegible] ही प्रासाद में

प्रथम श्रोता सृजन का वह मधु है
जो बढ़ाता कल्पना-संवेग को
फूल को यदि वायु सहलाए नहीं
क्यों खिले वह मधुर गंध निकाल कर?

विहग तो अनगिनत सौम्य निसर्ग में
देखता शशि को परन्तु चकोर ही
लिख रहा हूँ जो कथा में काव्य की
हर्ष-श्रवणानन्द उसको प्राप्त है

पूर्ण श्रोता बहुत कम मिलते सब
जो उठा ले नयन से उर-चित्र को
रस ले कादम्बरी की छवि-छटा
रसिक ऐसे यहाँ कितने लोग हैं?

लोक-कवि मैं नहीं शिल्पी प्रखर हूँ
भाव-भाषा-रंग-मय अभिव्यक्ति का
रस कर सब कुछ विलक्षण दृष्टि से
रच रहा साहित्य शाश्वत विश्व का

हो गए चुप कृष्ण सुन कर बाण का—
आत्म-सभाषण उदात्त सुकंठ से
किन्तु वह तो आनत थे हृदय को
जो कि चिर विजयी सुकवि के पास था

एक दिन आकाश-जलद-समुद्र पर
चाँद की नौका भँवर में फँस गई
पर, पवन-पतवार के अस्तित्व से
चाँदनी छिटकी अनन्त दिगन्त तक

स्वयं कवि-सम्राट् को कहना पड़ा
काव्य में इतिहास का भी स्थान है
डर रहे यदि तुम मुकुट-आघात से
जोड़ दो अपनी कथा भी गद्य से

और, तब आषाढ़ के प्रासाद पर
हुआ स्वर्ण प्रभात नव इतिहास का
हर्षवर्द्धन ने कहा कवि बाण से
हो गया मैं भी अमर साहित्य में

प्रथम दो उच्छ्वास में अंकित हुई
अवतरण-ताप-कथा कवि के वंश की
आत्म-इंगित भी किया मृदु भाव मे
किन्तु अन्तर-पथ ओझल ही रहा

एक दिन पर्यन्त-भास्कर-रत पर
चन्द्रदीपक जल रहा था व्योम में
रास-वन में कलकलस्वना शरद्-सी
पढ़ रही थी हर्ष की आख्यायिका—

पौरुष-अम्बुधि में निरत एकट-मुद्रा का दाव
पश्चिमाकाश में हूण-गृध्रदल उतरे नव
उत्तरापथ में यवनाक्रमण हुए जब-जब
भारत-कृपाण से रुधिर-धार निकली तब-तब

वही न हिमालय हुआ शिव-शिखर गिरा नहीं
अच्छोद-सरोवर में विपदा-विष गिरा नहीं
भारती पहनती रही अनवरत हम-हार
भू-मानस में अवतीर्ण ओजवर्षी विचार

गान्धार-धरा पर पुनः प्रबल रिपु रण-गर्जन
भूपेश प्रभाकरवर्द्धन-तन में क्षोभित मन
यह हूणहरिणकेसरी विपुल सभा-समक्ष—
देखन लगे निज ज्येष्ठ पुत्र का लौह-वक्ष

युवराज राज्यवर्द्धन का आज कवच-धारण
पद-चतुर चतुर्गिक वारण का रण-उच्चारण
जयमन्त्र-सिक्त उन्नत ललाट पर आम-तिलक
रक्ताभ नयन में भद्रभाव का विप्र-चमक

अरि-दमन-हेतु सेना-प्रयाण का प्रखर काल
सद्यवर्धित सूर्यांशों पर घन-तिमिर-श्याम
उमा-पार्वती विलीन दीप्त शिव में तुरन्त
क्रमश: गुंजित उत्ताल रुद्र रव से दिगन्त

मित्र युग्म पुत्र के मध्य प्रभाकर महाराज
भू-स्खलस्थल पर पाण्डुवर्ण कृपण-काज
पाषाण-पाणि रख राज्य-स्कंध पर, यही कहा
गान्धार-सिन्धुनद आर्या-भूमि पर सदा बहा

—पहनाना महाकाल को प्रिय नर-मुण्डमाल
करना शोणित से भीम-हस्तगत लाल-लाल
कर यवन-मन्त्र-विध्वंस क्षिप्र विद्युत्-धार से
जाने मत देना जीवित शत्रु को पार से

—तुम सिंहपुरुष भारत के रखना सदा ध्यान
सीमा-स्वतन्त्रता रक्षा-हित कर में कृपाण
अनुभवी मन्त्रिगण स्वामि-भक्त सामन्त वीर—
आ रहे संग होना मत विचलित कभी धीर!

सुन गत गीतात्मक समर-पृष्ठ के क्रम-सूत्र
अभिमन्यु-सदृश रण-लिप्त नरेश-कनिष्ट पुत्र
पन्द्रह वर्षों का मात्र हर्षवर्द्धन अभीत
आरक्त श्वास में शिंजित अग्निस्फुलिंग-गीत

—रिपु रात्रि-गयन्दा के मद-मस्तक पर चढ़ कर
मैं व्याघ्र-नखों से नयन फोड़ दूँगा सत्वर
भर दूँगा सिंधु प्रतीची में भास्कर-प्रकाश
हिन्दूकुश पर होगा अवश्य नरसिंह-हास

केसरीतनय-हुंकार धनुष-टंकार द्वार
सम्राट चमत्कृत हुए हर्ष से प्रथम बार
बोले तत्क्षण तुम अभी अभय आखेट करो
भीषण वन-पथ में सिंह-शावकों को पकड़ो

चल पड़े हर्ष मृगया-हित भ्राता-संग-संग
आगे-आगे गति-तालबद्ध शोभा तुरंग
पार्श्व से सहस्रों अश्वारोही ठुमुक-ठुमुक
अगणित गज-उष्ट्र-वृषभ-घंटी-ध्वनि टिनिक-टुमुक

थककर सुदूर पथ-भिन्न हुए दोनों भाइ
धब्बे-धब्बे गिरि-शिखरों पर सन्ध्या आइ
सैनिक-समूह ने विविध शिविर कर दिए खड़े
सन्निकट एक निर्झरी शालतरु बड़-बड़

सूखी लकड़ी सूखे पत्ते ले आए जन
निशि-अंधकार में धधकी इधर-उधर ईंधन
शौचादि-कार्य से हुए निवृत्त हर्षवर्धन
वर्तिका-समक्ष किया दैनिक सन्ध्या-वंदन

हिनहिना उठे घोड़े चर-चर कर हरित घास
तोड़ने लगा गजदल द्रुम शाखा आसपास
रुक्ष अग्नि-लपट लोभे एकाधिक वन-शृगाल
भौंके कुत्ते चौंके समस्त गिरि शृंग भास

पढ़ते सुकाव्य श्रीहर्ष शयन-वेला अनुपम
सोचते सदा चरितार्थ महाकवि का मृदु श्रम
यह दीन दशा है यहाँ न अपि कवि कलाकार
भावों का जन-सम्राट् खोलता काव्य-द्वार

कम्पित प्रभात में इस पड़ाव से बस दूर
देखते रहे वन-वृक्षों को शर-निपुण शूर
रजताभ्र हिमालय शशि-कपास-सा दृग-विस्तृत
स्वर्गीय गन्धमादन नटेश-ताण्डव-अनुकृत

चित्रित कुमारसम्भव हिम-हर्षित शिखरों पर
कवि कालिदास मुखरित लोचन की लहरों पर
गुञ्जित तुषार के श्वेत श्लोक छवि-छन्दों में
आनन्द-मग्न शिव-संग विशुभ्र अलिन्दों में

भारत के स्वर्ग-किरीट! शैलपति! नमस्कार
अर्पित सुदक्षिणी सिन्धुमन्द्र ध्वनि ऊर्मि हार
गौरव-गिरि! चिर गर्वित तुमसे भारतवासी
सुर-सरित-शरण के हे हिमेश! तुम नभ-काशी

निर्जन अरण्य में रुके सभी अश्वारोही
सुन अश्व-घोष भागी मृग-श्रेणी दृग-मोही
आखेट-कुशल श्वानों के सुन स्वर भौंव-भौंव
कौए करने लग गए द्रुमों पर कांव-कांव

उड़-उड़ कर आए वन-कपोत शुक पिक मयूर
भालू-बन्दर-वाराह-व्याघ्र-शिशु दूर-दूर
चूं-चूं-चूं-चूं चीं-चीं-चीं-चीं चिन-चिन कलरव
बैठते फूल-फल-लदे वृक्ष पर खग नव-नव

वन इतना सघन कि व्याप्त चतुर्दिक अंधकार
पल्लव-वितान पर मन्द दिवाकर-बिम्ब-द्वार
दूरागत स्यात् किरात-पुत्र-सम कोलाहल
सागर-तीरों पर ज्यों निषाद का कल-कल-छल

नूतन दिन में मृगयार्थ सबल निकले कुमार
तूणीर-तीर में चूमी सफलता प्रथम बार
नित एक पक्ष तक हुए लक्ष्य पर शर-प्रहार
मृग-मांस भूनते भक्षण-हित नित घुड़सवार

हड्डियाँ चबाते माँस मूँद कर क्षुधित श्वान
देखते निरामिष अश्व-हस्ति बल-वीर्यवान
कुछ प्रौढ़ युवक तित्तिर-बटेर पर भी टूट
रसमयी प्रकृति का असुर-स्वाद कैसे छूट!

सौहृद प्राण में श्रमण-अहिंसा की हिल्लोर
मन की सहिष्णु भावना-सभ्यता का झकोर
दृग में प्रांजल मानवता की निर्मल भाषा
बिम्बित कलिंग क्रन्दित अशोक-निष्ठा-आशा

फिर तुरत घोर घटना सन्तुलित धम्म-द्रोह
था मौर्य-पतन का कारण भी वैराग्य-मोह
फिर भी न धर्म से रहे निरंकुश नृप-जनपद
कर्मों में बिखरे विष्णु-बुद्धि की प्रखर शरद्

अन्तिम निशीथ में अशुभ स्वप्न देखा उस दिन
दावानल में जल गया बाघ झुलसी बाघिन
दो शावक-मुख दमक रहे बन अग्नि-ग्रह
मन-ही-मन करते रहे विमूर्च्छित ओह-आह

चिन्तित प्रभात-मृगया में किंचित लगा न मन
गज के आसन पर करुण दृश्य का हुआ स्मरण
—चढ़ गया वृक्ष पर सर-सर-सर मांसल व्याधा
फल-भक्षित वानर-दल ने दी उच्छल बाधा

—फिर भी फुनगी के निकट नीड़ तक पहुँचा वह
कुछ करुण-करुण दारुण मन सुन चूँ-चूँ-चह-चह
दो दिन के पक्ष-हीन शावक कुछ ही अचल-विकल
अधफूटे नयन अंकुरित अरुण रोए कोमल

श्रीहर्ष शिविर में शीघ्र लौट आए उदास
शीतलपाटी पर बैठ त्रिफला-विटप-पास
उपधानाश्रित शिर पर दुपहर की धूप-छाँह
दोनों लोचन से मिली मुड़ी मखमली बाँह

अलसित अधखुली दृष्टि पपनी से अधिक दूर
उस शिला-खण्ड पर बारहसिंहा-संग मयूर
झरते कुछ लाल-पत्र नीरवता के तन पर
टपके जैसे हिमकण तपसी ऋषि के मन पर

ज्यों दो पर्वत के बीच उमड़ आते बादल
दिखलाई पड़ा कुरंगक दीर्घाध्वग श्यामल
सम्राट्-लेखहारक वह पहुँचा नृप-निकट
पहले प्रणाम तब प्रेषित सकरुण पत्री झट

पढ़ के पूछा कि कुरंगक! पितु को व्याधि कौन?
कह 'महा विषम ज्वर' आगन्तुक हो गया मौन
तब दुखित नृप-आज्ञा से द्रुत सैनिक-प्रयाण
मग में अनेक अपशकुन देख कुछ मलिन प्राण

भोजन-रहित सविनय मंत्रि-प्रार्थना हुई व्यर्थ
सोहर्ष सतत यात्रा-पथ में सक्षम समर्थ
चलते-चलते चलते-चलते छुप गई रात
शिथिलित गति-गर्वित अश्व-सिन्धु पर हुआ प्रात

अंगांग-उपांग निरन्तरता से अति क्लान्त
हाँफती श्वास हि हि हि हु हु हु रंधित
गतिशील टाप त्रा त्रा त्रा त्रा फिर ताक ताक
पथी-समूह शिशु ग्रामवधू वृद्ध अवाक

आते-जाते आए समस्त जन स्वाम्बीश्वर
करुणा-कुहरी में कुहक-हीन निस्तब्ध नगर
ज्यों शिशिर-घन-पवन से विषम-वन में ठिठुरन
त्यों रुद्ध राजपथ पर प्रहरी-स्वर में कम्पन

अकुलाए हुए अधीर देखकर दुर्ग-द्वार
क्षत-विक्षत वातावरण कि क्यों दिवसान्धकार
पूछा आर्त बंधु-गण से अस्व स उत्तर
उत्तर से आकुल प्राण अग्रसर पग सत्वर

निस्तब्ध नगवाहन प्रहरी-निःशब्द नमन
आरम्भ दान-दक्षिणा यज्ञाहुति होमायन
संयमी विप्र संहितामंत्र-जप में तन्मय
मंदिर में रुद्र-महामायूरी-पाठ अभय

प्रांगण में नृपगण पूछ रहे क्षण-क्षण सक्षम
चुप-चुप कानों में कह बात अधिकारी जन
अति दुखित हृदय में धर्म-द्रोह-विक्षोभ-लहर
सन्तुलन-हीन नराश्म दार्शनिकता के स्वर

सम्राट्-निकट चिंतित सुतका सकरुण प्रत्यक्ष
कम्पित प्रदीप-सा धैर्य-ध्वस्त मणि-मुख प्रदग्ध
कलि-काल-आगमन-पूर्व परीक्षित ज्यों क्षपित
त्यों तमा मृण में निधि-अनित्य-पण अवगुंठित

शर-शय्या पर ज्यों महाभीष्म-आदेश सबल
अस्तमित प्रभाकर-सजल नयन में स्नेहोत्पल
भारत के अधिकृत भार-सवहन की पुकार
संक्षिप्त प्राक्कथन में विलीन ज्यों सूत्रधार

आज्ञा से अनशन भग अवनिपति-पथ्य-ग्रहण
सेवा में तत्पर हर्ष हस्त में जनक-चरण
दाहज्वर किंचित कम क्रमश औषधि प्रभाव
फिर मध्यरात्रि में रम्य रसायन स दुराव

स्वरभ्रान्त व्याधि भ्रूक्षेप निरत स्तम्भित कुमार
दयनीय भाल पर विकल पाणि-द्वय बार-बार
बीती घुघुआती-सी अटपटी असर्म-निशा
उतरे ऊपर से हर्ष मुड़ गए पूर्व दिशा

मूर्च्छित लक्ष्मण लख ज्यों कपिदल त्यों चक्र-व्यूह
चिन्ताग्नि-ज्वलित श्री रहित राज-नारी-समूह
सम्राज्ञी यशोमती-तन पर अब सती-वसन
अन्तःपुर में परि-व्याप्त मौन मारुत क्रन्दन

मन्दिर-पथ में ही हुए हृष शिशु-सा विह्वल
सरसग उठ उमड़े नयनों के नीरद-दल
चरणों पर गिर कर कहा कि मा ! म भाग्यहीन
ममता-विहीन मत करो पुत्र म दुखी दीन

शोकित माता न किया ग्राम-वनिता-विलाप
आँसू में व्यक्त अधीर अविधवा-मन प्रलाप
सुत-पग पर झुक बोली मत कर इच्छा-विरोध
मेरे प्राणों में स्वामि-भक्ति का भस्म-बोध

निष्प्राण विटप-सा हुए अचल नृप दुखाक्रान्त
ज्यों मृत्यु-दण्ड से पूर्व निरपराधी प्रशान्त
दारुण कोलाहल एक बिन्दु दृग-जल में स्थिर
मंथर गति से वे मन्द-मन्द आए मन्दिर

पूछा कि देव ! तुम शिलामात्र या प्राणवान ?
धर्मास्था से सम्भव मानव-दुख-समाधान?
रुक गई धूप में आग चन्द्रिका धधक रही
डूबना चाहती विपद-प्रलय में बुद्धि-मही

एकाकी आकुल हर्ष कर रहे आर्तनाद
अत्यन्त करुण अत्यन्त जटिल भीषण विषाद
जिसकी भावुकता सती-प्रथा में धर्म-व्याप्त ?
बस नाम से ही कैसे होगी मुक्ति प्राप्त ?

फैलती सकल भारत में अनुचित अथ रीति
नारी ही सब प्रथम करती मिथ्या-प्रतीति
अज्ञान जन्म देता सदैव आडम्बर का
नश्वरता-दशाम स भय-कम्पित कमठता

यदि जीर्ण चीर-सा फटे न भ्रामक प्रथा-ध्वजा
दुख भोगेगी धार्मिक कुतथ्य स रुग्ण प्रजा
है धर्म वही जो रोके तममय अनाचार
जैसा युग वैसा ही जीवन-मथित विचार

ज्यों शिथिल शिराओं में उच्छ्वसित उष्ण रक्त
उत्सर्ग-ज्वाल में क्षण भर शोभित स्वर सशक्त
फिर मन अशान्त फिर मन अशान्त फिर मन अशान्त
आग्नेय नयन संतप्त शोक से घनाक्रान्त

ज्यों कुटिल बाण का असमय निर्मम अभिनिपात
त्यों मांस-भस्म से थर-थर-थर-थर हस्त गात
जननी-ज्वाला म मर्माहत अवमान-पीर
कच्छप-गतिमें छप-छप-छप-छप-छप अम्ब-समीर

निर्धूम ग्रस्त निस्तेज नयन कंटकाकीर्ण
क्षत रुद्ध कंठ ग्रीवा मुमूर्ष मुख म्लान शीर्ण
प्रालेय प्राण में मातृमूर्ति की ध्वस्त धूल
धाकांजलि में केवल रे केवल अस्थि-फूल !

मन कदलि-पात-सम झिर्र झिर्र मर्मर-मर्मर
पीले पत्ता म कान्तिहीन ज्यों शिशिरस्वर
निःशब्द हुए परिजन के सँग लौट अधीर
माता-मृणाल से भिन्न पीर-पंकज-शरीर

आए वे मरणासन्न पिता-नृप के सम्मुख
नयनों से निकल पड़ा गलकार हिम-संचित दुख
निर्झर-निनाद से चौंक उठे मृत-प्राय नृप
निष्प्राण चक्षु में अन्तिम-अंतिम स्वप्न-स्तूप

मर्मर स्वर से निकला कि पुत्र ! तुम महासत्व
स्वीकारो अब भू भार लोक-शासन-सुतत्व
सम्मान सुरक्षा सुख से करो प्रजा-पालन
समय सम-मातृ-दृष्टि स ही शुचि सचासन

सम्राट् प्रभाकरवर्धन के सो गए प्राण
सम्पूर्ण नगर पर महाशोक का तम-वितान
क्रन्दन-कोलाहल में सद्गुण-सम्मरण करुण
अनगिन, असंख्य निष्कपट नयनदल सजल अरुण

मरणोपरान्त ही मानव-अतुल मूल्याङ्कन
सद्भाव प्रेम सदा का युग-युग तक गुंजन
वेदना-ज्वार में जन-अर्णव आकृष्ट अरुद्ध
गर्दभ-पथ पर भौंकत मदुषित स्वान क्षुद्र

दुष्काल-मृत्यु के रुद्र कोप से स्तब्ध भूप
तरता तिमिर में विपद-ग्रस्त पौरुष-विमग्न
मतिमोह-मत्स्य को निगल रहा स्वामित्व-ग्राह
पर पितृशोक से अन्तर में पीड़ा अथाह

अरथी कंधे पर रख आकुल-व्याकुल कुमार
सामन्त पुरोहित पौर अधिकरण जन अपार
पहुँच गए सरस्वती-तट, रानी जली जहाँ
सुनता सतीत्व-समीप विधुर-वट-वृक्ष वहाँ

हिन्दू-विधि से शव-शिबिका अगरु-चिता पर स्थिर
दुग्ध-द्रवित हुए कर से प्रज्ज्वलित अग्नि-मन्दिर
मिलना दुर्लभ मानव-कुसुम-सदृश शरीर
मिट जाने पर भी महापुण्य-हित नयन-नीर

सन्ध्या का झुका-झुका सूरज झुक गया और
चमचमा उठी आभा-हिलोर से नदी गौर
झुटपुट-झकोर में यशोमती-निशिवधू सुप्त
था दिव्य प्रभाकर करस्पर्श निद्रा-विलुप्त

अंगार-काष्ठ में पार्थिव तन अब रज-ढेर
राजोचित दाह-कर्म में भी होता अबेर
मिट्टी में मिलता जिस दिन मानव-अहंकार
रो-रो उठती प्रभुता की करुणा बार-बार

शोकान्धकार में डूबा स्कन्धावार सकल
भययुक्त भयंकर कालरात्रि निस्तब्ध विकल
नंगी धरती पर हर्ष बन्धु-चिन्ता में रत
ज्यों श्रेष्ठ राम-हित विनय-विभोर भरत आगत

कैकेयी-निशा समस्त दिशाओं में प्रस्थित
भारत-मंथरा अनीति-तिमिर भ्रू सचालित
सद्भाव-सुमित्रा करुणा-कौसल्या-बिम्बित
शत्रुघ्न-स्नेह में लक्ष्मण-मन भ्रातृत्व विदित

सात्विकता-सीता कनक-मृगी से क्षणिक भ्रान्त
माया-वन में ही मोह-दशानन-ग्रह प्रान्त
द्युत ज्योति-हरण से सत्ता असत् महत्तामय
क्षण भर अशोक-श्री-छाया में अविवेक-विजय

फिर क्षुब्ध हृदय में रामचन्द्र रवि रमण भ्रमण
रज-तम-मन में ही सत्गुण-पावन परिवर्तन
स्वासों में अंगद अनिलपुत्र दक्षिणी पवन
तम-सिंधु-सेतु कर पार क्रोध-लंकेश-दमन

तब शुद्ध स्वत्व-सीता-आभा का अग्नि-पर्व
निष्काम शक्ति-अनुरक्ति सिद्धि पर आत्म-गर्व
शुचि मन विमान म घुमागमन सीमास्थल पर
भावना-भरत नतमस्तक निज सिंहासन तल पर

पौरुष-नयन में भारत-माता-काव्य-कथा
आलोक-तिमिर की विष-सुरा पी रही व्यथा
श्यामांकित सागर पर ज्यों निशि-मलिन छाँह
हिल उठती हस्ताकार शोक की तिमिर-बाँह

ताड़का-उपद्रव मे ज्यों विश्वामित्र खिन्न
झिनझिना रहा मन दग्ध बाल व असुर-चिन्ह
चिटचिटा रहे हों भय पिनाक ज्यों दीर्घ दन्त
उन्मत्त-सा उगल रहा दुर्गन्धित तम-दिगन्त

पीपल के पत्तों-सा डोला मन का शरीर
मोती के पानी से कुल-कुल-कुल अधर-तीर
खिलते कपोल व खिले नयन के नम्र फूल
श्वासों पर उड़ने लगा इन्द्रधनु-स्वर-दुकूल

बन पाँखी-सा आ गया कल्पवर्द्धन किशोर
देखा मयूर पर हर्ष-घटा घिर रही घोर
ज्यों ग्रीष्म-काल में ऊभचूभ करते शिशुदल
थपथपा रहे सब काव्य-केलि का यमुना-जल

सहसा प्राणों में घुस स्तब्ध मानस-मराल
हाँफता कलपता आया ज्योंही करुण काल
फाल्गुनी रात में ज्यों असमय ही अशनिवृष्टि
जल उठी बन्धु-पीड़ा स सब हरित सृष्टि

तज युध-अपूर्ण विजय झटपट लौटा वर्द्धन—
रणमय मन में सुन स्थाण्वीश्वर-मूर्च्छित क्रन्दन
अति शोक-शिथिल केहरि-तन पर अरि-वार-प्रहार
दारुण दुख में कुछ भी न ज्ञात क्या जीत हार

पागल के पीछे ज्यों बालक उन्मुक्त अधीर
छिटफुट-छिटफुट यान अश्वारोही प्रवीर
वर्द्धन-ग्रीवा-कपाट-व्रण पर पट्टिका श्वेत
असमय उतरे नभ से ज्यों मरु-मद-मध्य रेत

नक्षत्र-समर-शर-विद्ध रुद्र रवि ज्यों अदीप्त
दोलाम्बर में निर्जय शशाङ्क द्युत रुदन-लिप्त
मिलन हो फूट पड़े अटूट ये अनुज-तात
दुर्वह दुख से काँप उठे शाल-शाल्मली गात

अतिशय वर्षा में शस्य रोपते ज्यों किसान
पंकिल प्राणों में हुए अंकुरित बीज-ज्ञान
करुणाग्रह से रुचि-रहित स्नान-उपरान्त ध्यान
भोजन-वेला सुधि-नभ में पितु-मातावसान

मन-मलिन प्रात में हर्ष विविध नृप के समक्ष
फिर हूण-दमन-हित अवलोकित क्षम भुजा दक्ष
सामन्त सैन्यपति मन्त्रिगण से परामर्श
आमूल शत्रु-संहार-हेतु गौरव-विमर्श

सुविचारणीय प्रश्नों में यह भी प्रश्न एक
युवराज राज्यवर्द्धन का हो राज्याभिषेक
सन्ताप-सिन्धु पर तृप्ति-यान-उत्फुल्ल हृदय
दृग में दशदिक्-स्वप्नादयमय का विजय-पर्व

तत्क्षण ही नाट्य-पात्र-सा यवन का प्रवेश
ज्यों विष्णु-लोक में प्रकट सर्व-त्यागी महेश
बोले भर मन में अतीव दुख दुर्निवार
सिंहासन पर नैराश्य वन्दना-अपकार

गौतम-सम राज्यलक्ष्मी से हो रही घृणा
मेरे प्राणों में नहीं तनिक भी मणि-तृष्णा
हे हर्ष ! तुम्हीं अब करो राज्य-संभार-ग्रहण
वन-आश्रम में केन्द्रित मेरा शोकाकुल मन

इतना कह, किया सभा में प्रभुता-राग-त्याग
उत्पन्न पारदर्शी उर में वल्कल-विराग
अशरीरी इच्छा में आत्मा-अनुनय अघोष
काया में माया-रहित किरणमय कमल-कोष

करुणावतीर्ण से त्वरित हर्ष-अन्तर विदीर्ण
श्रीकण्ठ-कीर्ति-साम्राज्य-पथ कण्टकाकीर्ण
अव्यक्त शब्द-सागर पर झंझावात मौन
वैराग्य-विभा में धूम स्वयश-कामना गौण

इतने में राज्यश्री का विह्वल संवादक
अनुजा-पति-हत्या से उर-पीड़ा मर्मान्तक
ग्रह वर्मा का हत्यारा अरि मालवाधीश ?
वन-गमन-पूर्व काटूँगा उसका कपट-शीश

—बंदीगृह में अब बहन ? ओह अति अनाचार
सम्राट्-मृत्यु से कान्यकुब्ज-नृप पर प्रहार ?
आएगा मालवराज दुरात्मा स्थाण्वीश्वर ?
हे हर्ष ! उठ रही शोणित में प्रतिशोध-लहर

—तुम राज्य सम्हालो और करूँ मैं शत्रु-दमन
कैसी विडम्बना ? सिंह-निकट कूदता हिरण
क्या सलिल-सर्प टोपेगा सक्षम गरुड़-ग्रीव ?
भनभना सकेगा कबतक पथ में मशक-जीव ?

तत्क्षण आयुध-सेना प्रयाण-आदेश अटल
सुन और बन्धु का अंग-अंग श्रीहर्ष विकल
अभिमन्यु-अतुल समराग्रह पग पर सिर धर कर
भाई को भाई का समुचित सत्वर उत्तर—

मृग-वध निमित्त लज्जास्पद सिंहों का दल-बल
तृण-दाह-हेतु पर्याप्त मात्र अतिसूक्ष्म अनल
आ रहा पराक्रम-काल सबल भूतल-जय-हित
लाने दो अभी द्रौपदी-इच्छा को शोणित

ज्यों इन्द्रप्रस्थ पाण्डवमन-दानव-आधारित
सक्रोध हुए कृष्णीय चक्र-वज्र-सा दोलित
रवि पर ज्यों राहु झपटता मन पर तिमिर-रक्त
दृग-नभ में उल्कापात उग्र अन्धड़ सशक्त

भीषण निधि-वर्षा स जन-पथ ज्यों भ्रमाक्रान्त
दारुण उत्पात-प्रपात-स्वप्न स हर्ष क्लान्त
कारागृह-गर्भित माधव-सा सदहित मन
दूरागत लोहित ज्वाल-रथ स क्रोधित तन

साम्राज्यस्थापनमण्डप में रण-विचार विनिमय
सम्राट् युवक भी हर्ष रुद्र रघु-सा निर्भय
हिमगिरि स सागर तक भारत भौगोलिक मत
प्राचीन शास्त्र के दृढ़ प्रमाण स सब अवगत

उस क्षण ही ज्ञाता-कृपापात्र कुन्तलागमन
सवाद कि मालव-विजयी वीर कृष्णवर्धन
पर महाराज! अब किस मुँह से म कहूँ बात
पृथ्वी पर जीवित नहीं आपक पूज्य तात!

—जय के पश्चात् गौड़-भूपति से अभिनन्दन
एकान्त भवन में असि-प्रहार से खण्डित तन
निःशस्त्र हस्त से भी अरि-मुख से रुधिरपात
पर अन्य सैन्य तत्क्षण जघन्य राक्षसाघात

सम्राट् हर्ष-दीप्त-मुख पर भैरव क्रोध-ज्वाल
ज्यों प्रलय-पूर्व ताण्डव का डिम-डिम रुद्र ताल
आग्नेय विष्णु-अम्बुधि में ज्यों ब्रह्माण्ड-नाद
नरसिंह-हर्ष-अन्तर में विस्फोटित विषाद

मन्द्र नील कण्ठ में स्वर-निर्घूम-अनल-लपट-श्वास
तत्पर प्रण-परशुराम करने को गौड़-नाश
उर-अन्तराल में श्वासों का उत्थान-पतन
हुंकारपूर्ण प्रतिशोध शिखर पर स्वर-मोचन

शौर्यायु-युवक सेनापति सिंहनाद अनुस्मित
भीमाकृति-मुख पर रोषारुण दृग-पथ गर्जित
शून्यत अग्नि-धार में अमोघ प्रण-हस्ताक्षर
पर्वताकार उत्तुंग स्कन्ध में तेज प्रखर

सम्राट् भाल पर उदित सिंह का वीर भाव
कौरव-विनाश-हित यथा सारथी-स्वर-प्रभाव
श्रीहर्ष प्रतिज्ञा में समस्त भारत की जय
तबतक अविवाहित जबतक विजय नहीं संचय

तब महासंधि विग्रहाधिकृत को निर्देशन
प्रत्येक भूप को सत्वर राजपत्र-लेखन
स्वीकृत हो प्रभुसत्ताअस्तित्व या रण महान
स म्रा ट ह र्ष व र्ध न-घो ष ण-से ना-प्र या ण

युद्धोत्तेजित मन्त्रणा-सभा जब हुई भंग
पौरुष-समुद्र में उठी प्राण-शोणित तरंग
भूपति धवल-गृह ओर, पादुका खच-खच-खच
नयनों के सम्मुख समराभूषण लौह-कवच

द्वितीय दिवस श्रीस्कन्दगुप्त का आवाहन
प्रतिहार मेखलक-द्वारा राजाज्ञा अर्पण
वह महाहस्तिपति मन्दिर में स्थिर ध्यानमग्न
आवन-भाष्य से दैनिक पूजा हुई भग्न

रूपवाला महाविकार मुखाकृति स अजय
आजान लम्ब भुजदण्ड हिलाता अपरिमय
मांसल होठों पर लिए वर्णिका-मधाक्षर
आ रहा व्याघ्र-सा स्कन्दगुप्त पैदल पथ पर

सम्राट-गमन-पश्चात्   दिग्विजय-वार्ता क्रम
उद्धत अतीतकालीन कठिनतम विक्रम-श्रम
गौरवमय गजसभा-सम्पादन शीघ्र सफल
श्रीकण्ठ-महाजनपद-जय-हित प्रस्तुत जन-बल

कुछ ही दिन में संकल्प-स्वप्न प्रारूप मूर्त
ज्योतिषी-गणमात्रा-शुभोष्म-सक्षम मुहूर्त
मगध विधि से सम्पन्न समस्त शस्त्र-पूजन
अष्टादश दीपों पर प्रभुता-हित ईशार्चन

निकला विराट सेना-समुद्र घनघोष-पूर्ण
भू पर असंख्य पग-रथ-गज-आघात चूर्ण
नांदीक शंख गुंजा काहल पटहादि-नाद
भारत की अतुल सैन्य-यात्रा यह निर्विवाद

सम्राट् हर्ष ज्यों प्रलय-जलद-रवि ज्योतिर्मय
इन्द्रान्तरिक्ष-नक्षत्रलोक में अविरल जय
निर्बाधित गति से सरस्वती-तट पर पड़ाव
पद-महिमा के अनुकूल प्रदर्शित हाव भाव

प्राग्ज्योतिषपुर के दूत हंसवेग आए
शरणागत शत उपहार वश नृप मुसकाए
पूर्वज ज्यों कामरूप-श्री चित्राङ्गदा-विजित
श्री हर्ष-महासत्तान्तर्गत फिर भू भूपित

प्रारम्भ पुनः सेना-प्रयाण ज्यों झंझानिल
विश्राम-काल-संकेत निरत रवि-छवि झिलमिल
प्रान्तीय शूर पगतल में ध्वस्त हरित खेती
क्षति-ग्रस्त कृषक-वधुएँ दृग-अञ्चल मूँद रोतीं

मस्तिष्क-समयी-दृष्टि गौड रण क्षेत्र ओर
कौन्तेय हृदय में राज्यश्री-ममता-हिलोर
मन-संगम पर अन्तर्हित आभा आत्म घटित
दिग्-ज्योति-ज्वार पर सग-सग शशि-भानु उदित

वन-मध्य ग्राम में ही पड़ाव पथ सम्यागत
विन्ध्याचल पर अस्मागस्त्यारोहण-स्वागत
भारत की सधि भूमि पर आर्य-द्रविड़-झुरमुट
प्रति-ध्वनित कपोती-कंठ घुटुर-घुट-घुटुर-घुट्

कृषि-कर्मलीन जन-जन से पालित गाय-बैल
सींचते काम में सूखे का पर तरुण छैल
तीरों से करते थे सुपाच्य पशु का शिकार
चखती चंमली फल बटोर वामा उदार

बंजर धरती को कोड़ खाद मिट्टी में भर
जोतते खेत चुनते तृण बोते कण हलधर
काटते वृक्ष-शाखा चीरते नित्य लकड़ी
पालते आर्य-कृषकों-सा भैंस-भेड़-बकरी

सर-पात-मृत्ति-गृह-चहुँदिशि स्थिर कटक-टट्टी
फैली फल-फूलोंवाली हरीभरी बस्ती
श्यामा गृहिणी के गुँथे कच में श्वेत-फूल
अंजन-रंजनमय नम्र नयन में चरण-धूल

महुआसव-पीत धमनियों में माधुर्य-लहर
वन की राधाएँ सुनतीं माधव-वंशी-स्वर
कृष्णा किशोरियाँ वेणु-वनों में धनु-स्रग
यौवन-कदम्ब-बिम्बित मन-कालिन्दी तरंग

महिषावलियों पर बैठ छैल छेड़ते तान
अज-अजिका पर फेंकते बाल-दल बेंत-बाण
कंकड़-प्रहार से काग हाँकते डालों पर
उड़ जाता फुर-फुर चिड़िया शिशु-नट से डर

शबरी-कानन में स्नेह-सुजाता विन्ध्य-ग्राम
पुष्पों-फूलों से भरी भावना-छवि ललाम
निष्कपट आत्म-सखा की बीती हिरण रात
चढ़ता गिरि पर यम भेड़-सग भेड़िया प्रात

आई पुआल पर झंझा श्यामली कृष्ण छटा
मायूरी नभ में अंकित नव विकटाभ्र-घटा
फिर असुर-महिष के पीछे दौड़ा पवन-श्याम
कौंधी विद्युत ज्यों असुर-हतु दुर्गा-कृपाण

अनुजा-सुषिमुख-मणि ज्यों दिवस के वपन में
अश्वारोही के संग हर्ष निकले वन में
अनिमिष अदिति-लोचन में प्रामेयक ममता
आरण्यक स्नेहांजलि में जन-सहृदय-समता

थक गई असि थक गए अस्त्र पर मिली न श्री
सकरुण सन्ध्याएँ बोझल [illegible] ताम्रवर्णी
सूने पत्तों पर ज्यों दरिद्र-परिवार-शयन
अधिप-अन्तश्छद् में निशि-निद्रित तपित नयन

निर्झरी-नीर पी-पीकर पाण्डव-क्षुधा शान्त
पांचाली-प्राण-व्यथा म जीवन अध्व-भ्रान्त
सीता-अन्वेषण में ज्यों दशरथ-पुत्र विकल
भीषण अटवी में प्रतिपल दारुण चित्त चपल

पौराणिक कथा-सन्धि में ज्यों नारद-प्रसंग
नैराश्य-तिमिर रह सका न मन में निस्तरंग
आटविक युवक शिव-शबर-आगमन हुआ अचिर
वंदन-अभिनन्दन जन्मभूमि पर रख कर सिर

सुन शान्त हुए स स्त्री-शोषण की जिज्ञासा
निकली मुख से व्याकरणहीन उर की भाषा
द्रुत वीर शबर का द्रुम-पथ-स्पन्दन विनयशील
रविमण्डल के आगे-आगे ज्यों अरुण नील

कटफल पर ज्यों निष्पाप शुकों का सुरभि-पान
आशा-सुधि-सौरभ-लग-लग मन का प्रयाण
गिरि-शिखर ताल-अम्बुज-वन में ज्यों कमल-काम
भीतर ही भीतर मर्दित आशामय प्रकाश

पाषाण-खण्ड पर सिहर उठा शशि-बालवृन्द
मकरन्द-सुरभ मानस में मन-मानस-मिलिन्द
मनचाह गुनगुनी वृन्त-पोखरों में ज्यों धूप
तम-तनया सन्ध्या-सी उत्सुकता-थी सुखछुर

पीता ज्यों सौभाग्य-सिन्धु कोई मत्स्य-सम्मुख
नीलाब्ज मृग-सुख में संतोष-प्रीत पय-सुख
पृथ्वी से ज्यों सूकरी खोदती मुस्ति प्रचुर
लोचन निचोड़ते स्मृति-जम्बीरी रस सुमधुर

राज्यश्री-परिणय का संस्मरणोल्लास अमित
मौखरि-वर ग्रहवर्मा-शोभायात्रा मधुस्मित
भारती-सात्वती-आरभटी-कैशिकी नृत्य
ताम्बूल-पुष्प-पटवासपूर्ण मधुमुग्ध भृत्य

मंगल-विवाह-वेदी पर पितु का पुत्रि-दान
आर्योचित विप्र-पुरोहित को वैभव प्रदान
गुरुकुल को स्वामी द्रव्यराशि गोधन सुवसन
सत सौम्य याचकों में सुवर्ण-मुद्रा-वितरण

स्नेही नयनों में अनायास आँसू अधीर
पति-गृह प्रस्थान-अवधि में झर-झर नमित नीर
भाई से बहन सुदूर, हृदय कम्पित थर-थर
अब कहाँ मिलेगा एक आत्म का अपना स्वर

चरणों पर गिर कर रोई जब, फट गए प्राण
अब भी आँखों में उस अतीत का जल-वितान
जीवन से यदि छूट जाय मनुज का मधुर मोह
कैसा होगा संसार कुटिल उर-हीन मोह!

शिव-मुद्रा में आसनासीन मुनिश्रेष्ठ प्रवर
दोनों विधि हिंसाहीन सिंह-शावक सुन्दर
सम्मुख कपोत-शिशु करते अभाहार अभय
आए सहर्ष श्रीहर्ष यहाँ पर इसी समय

परिचय पाते ही हुए दिवाकर स्नेह सिक्त
करुणा से ओतप्रोत शुभ्र अन्तर अरिक्त
नयनों में राज्यश्री की अति अनुमेय व्यथा
प्राणों के चीवर पर चित्रित अज्ञात कथा

तत्क्षण ही भिक्षु पराशर का सवाद सजल
सरिता-तट अनुपम श्रिया एक अत्यन्त विकल
पितृ, पति भ्राता से हीन सुन्दरी मरणोन्मुख
आयोजित चिता-सेज-हित उत्सुक अन्तिम सुख

सहचरि-समेत करती विषमा करुण विलाप
चलिए हे श्रमणाचार्य वहाँ अब अचिर आप
अन्यथा आर्य! अवलोकित होगा भस्म राग
भर लेगी भुजापाश में सबको प्रबल आग

सम्राट् हुए न समझ लिया स्वर सांकेतिक
आशय निखारकर स द्रुत मन-मग्न नतिक
मृग-गति में सर्वप्रथम दौड़ा वह धावक श्याम
चल पड़े मानो मन्थर दीर्घाध्वग निर्विराम

अस्ताचल पर विभ्राट मृदु-भास्कर प्रकाश
कल्याण-कामना में उद्भासित दिगाकाश
कापिल कणादिक नैयायिक मीमांसक क्षिति
संध्या-संगम पर ज्योति-विहंगम-स्वर अन्विति

राजश्री के शृंगार चरण पर प्रखर शबर
लोचन में लिपटी हुई मधु प्रार्थना प्रखर
निष्कपट गूढ़ भारती कंठ में व्याप्त सहज
छू रही मनुजता मर्माहत जीवन-पद रज

दक्षिण का शिव हर रहा हृदय से विष्णु-पीर
बह रहा कपोलों पर साहित्यिक मधु-नीर
गान्धार प्राण में स्थापित भारत की त्रिमूर्ति
दिन दिन स नास्तिहित दीपित दार्शनिक पूर्ति

अनुजा भ्राता-सम्मिलन करुण-रस-सराबोर
उमड़ी चारों नयनों में संचित घटा घोर
अव्यक्त शोक के व्यक्त भाव निर्वाक सदा
आई न कभी ऐसी मंगलवेशी विपदा

नव तरुण कृष्णवर्द्धन वतन में आ चमका
मेघों में आकुल-व्याकुल एक वज्र चमका
तब महाश्रमण न किया अनिश उपदेश-दान
सन्ध्या में हुआ प्रविष्ट स्वर्ण शाश्विक विहान

नूतन जीवन से निकली सहसा दिव्य किरण
आशा से भासित आत्मा का काषाय वसन
मन-ही-मन भ्राता ने अनुजा का किया मनन
ममता राज्यश्री हुई आई आमरण श्रमण

कर अंजलिबद्ध प्रणाम मौन सम्राट् व्यथित
वैराग्य-वृन्त पर पुष्प-कली निस्तब्ध नमित
बस एक बूँद आँसू लेकर लौटे नरेश
भूले कैसे भाई अनुजा का अरुण वेश!

चैनाग्रम-सीमा पर ही शबर-बिछोह-मोह
उस तिमिरवर्ण मानव-मन में कुछ आह-ओह
पूछा तो कहा कि 'प्रभु ! मेरा निषाद' नाम
आए थे कभी इसी वन में भगवान राम

'सबसे पहले हम ऋषि अगस्त्य के लिए मुड़े
प्रेमाग्रह से वे भी जीवन भर यहीं रुके
अपलक दृग में लहराया जब अमिमी-ज्वार
खुल गए भारती के विराट् सांस्कृतिक द्वार

सस्नेह समर्पित हर्ष-हस्त में रत्नथाल
दाशराभिगम कर विदा हुए श्रीमन्तपाल
प्राणों के पल्लव पर स्मृति-पारद टलमलटल
नयनों में कभी-कभी कोमल करुणाम्बु-कमल

अनुजा भ्राता-सम्मिलन करुण-रस-सराबोर
उमड़ी चारों नयनों में संचित घटा घोर
अव्यक्त शोक के व्यक्त भाव निर्वाक सदा
आई न कभी ऐसी अराक्षणी विपदा

तब तरुण कृष्णवसन इतने में आ धमका
मेघों में आकुल-व्याकुल एक वज्र चमका
तब महाश्रमण ने किया अनिश उपदेश-दान
सन्ध्या में हुआ प्रविष्ट स्वर्ण धार्मिक विहान

नूतन जीवन से निकली सहसा दिव्य किरण
प्राणों से याचित आत्मा का काषाय वसन
मन-ही-मन भ्राता ने अनुजा का किया नमन
अबला राज्यश्री हुई आर्द्र आमरण श्रमण

कर अञ्जलिबद्ध प्रणाम मौन सम्राट् प्रथित
वैराग्य-वृन्त पर पुष्प-कली निस्तब्ध नमित
बस एक बूँद आँसू बनकर लौटे नरेश
भूले कैसे भाई अनुजा का अरुण दृग !

वैनाश्रम-सीमा पर ही शबर-विछोह-मोह
उस तिमिरवर्ण मानव-मन में कुछ आह-ओह
पूछा तो कहा कि प्रभु ! मेरा निषाद' नाम
आए थे कभी इसी वन में भगवान राम

'सबसे पहले तुम ऋषि अगस्त्य के लिए मुड़े
प्रेमाग्रह से वे भी जीवन भर यहीं रुके
अपलक दृग मे लहराया जब जैमिनी-ज्वार
खुल गए भारती के विराट सांस्कृतिक द्वार

सस्नेह समर्पित नृप-हस्त से रत्नमाल
शबरालिंगन कर लिया हुए श्रीकंठपाल
प्राणों के पल्लव पर स्मृति-पारद टलमलटल
नयनों में कभी-कभी कोमल करुणाश्रु-कमल

एक दिन आकाश-पट के लेख को
पढ़ रहे थे हर्ष तन्मय दृष्टि से
छू रही थी काव्य की शेफालिका
भूमि के इतिहास पर उस रात में

सुन रहे थे कृष्णवर्द्धन स्वर-कली
चाँदनी की उस मधुर बरसात में
हृदय की हरियालियों पर लिखी थी
अभ्र-किरणों से प्रखर रवि की कथा

हर्ष ने देखा कि दर्पण है वही
रूप में नव रंग स्थायी लग गया
वह चितेरा चतुर है जो सत्य को
खड़ा कर दे स्वप्न के सौन्दर्य पर

एक दिन आकाश के शशि-ग्रंथ को
पढ़ रहे थे प्राण केन्द्रित ध्यान से
पृष्ठ अन्तिम आ गया था सामने
किन्तु उनका नाम अंकित था वहाँ

और, तब कादम्बरी बोली वहाँ
अमरता मैं हूँ तुम्हारी ज्योति की
रम जाते रंगे जिस सौन्दर्य में
उसे मत रखना अधूरा कभी भी

शक्ति का उपयोग हो यदि ठीक से
व्यक्ति अपने शिखर पर चढ़ जायगा
गुणी वे ही जो गुणों को सींचते
स्नेह-जल से सहजता की भूमि पर

एक दिन आकाश-समाचार में
बुझ गया दीपक किसी के सूर्य का
किन्तु धरती जानती थी सत्य को
फिर बिना बिखरी गगन के प्राण पर

और तब से बाणभट्ट विक्रम नहीं
भोजपत्रों पर उतरती कल्पना
किन्तु भीतर एक ऐसा रोग है
जो न स्थिर रखता तपस्या-ध्यान को

कीट-गति में अब हिरण-सवेग है
मन्दगामिनि किरण मन से फूटती
हो रहा सन्देह भी कुछ प्राण में
क्या पूरी हो नहीं कादम्बरी !

शक्ति भी क्षय हो गई संघर्ष में
मन बादल व लिए सौहार्द को
अब प्रखर आकाश कुछ रोने लगा
क्योंकि इच्छा की नहीं भीगी मही

खा रहा औषधि परन्तु न लाभ कुछ
हूँ तक चिन्तित उदर के रोग से
बाग में कुछ फूल मेरे बस रहे
पर तरसता है अभी उद्यान में

लिख रहा कादम्बरी की मृदु कथा
पूछता हूँ मृत्यु से अमरत्व को
कल्पना मे गढ़ लिया यदि स्वप्न तो
जगमगाएगा सदा साहित्य में

त्रयोदश सर्ग

प्रियतमे !
सर्व प्रथम स्वीकार करो
कल्पना-मिलन-निशीथ की अधरामृतलता
भर लो, भुजापाश में मेरी लहलहाती स्मृति
सन्हृतमर्पिणी शुक-सारिकाओं से कह दो
कि सम्राट्-सम्मानित बाण का केवल स्थूल तन ही
निवास करता है राजनगर स्थाण्वीश्वर में

किन्तु
मन तो सदा हिरण्यबाहु शोण-तट पर स्थापित
प्रीतिकूट के वन-उपवन में ही विचरता है !

आज मैं महाकवि हूँ मल्लिके !
पर, कल तक तो वहीं का पृथ्वीपुत्र था
जन्मभूमि में जय करने पर भी नहीं मिलती विजय
वहाँ का मातृस्नेह ही मणिकिरीट है !

तुमने लिखा
कि एक दिन एक सुन्दरी संन्यासिनी आई
और कुसुमित कुन्तल चूम कर चली गई
सुनयने ! जानता हूँ वह कौन थी
तुमसे तो रहस्य की प्राण-कथा गुप्त नहीं
वह कथा कही होगी शुभ्र !
हूँ ढल गई थी (तुममें) स्वर्गीय वाणी का आत्माकाश ।

स्मरण रहे शुभे !
कि जीवन में अनेक सुकुमारात्माओं का
होता रहता है आदान प्रदान
बिछुड़ी हुई साँसों के पूर्व संगीत—
गूँजते हैं पंचभूत के कालप्रवाह में ।

जीवन बड़ा व्यापक है मंदाकिनि !
जल उठते हैं दीप से दीप
मिल जाती है साँस से साँस ।

कल्पना-कलि की परी ये दोनों सहचरियाँ
अव्यक्त आत्म-रूप की पृष्ठ-प्रभाएँ हैं
प्राणाकाश के नीलांशुक प्रच्छदपट पर उदित
सूर्य-चन्द्र-सी ये ज्योतिमयी कलियाँ
शुष्क इतिहास से
प्रतनु-याचना नहीं करेंगी !

कवि अपनी कृतियों में
भर ही देता है आत्म-गंध
पर कला का अन्तिम अस्तित्व
सदा ही ओझल रहता है वास्तविक स्वप्न-रूप की भाँति

निज-गामिनी प्रकृति में सर्वत्र छिपा है सृष्टि का विराट शिल्पी
पर किसी बिन्दु पर कहीं रुका है वह ?
ध्यान की धरती पर केवल उसका सात्त्विक प्रतिबिम्ब
दीख पड़ता है नयन की प्रगाढ़ ज्योति में।

सौन्दर्य के श्रेष्ठतम कलाकार—
कालिदास को किसी ने पहचाना कहाँ ?
दृष्टियाँ ढूँढती हैं अधिकतर स्थूल सत्य
पर सूक्ष्म प्रेरणा के अणु-परमाणु को
कितने लोग देखते हैं ?
बाण को कोई बाण ही पहचानेगा
ब्रह्मनिष्ठ ही जानता है ब्रह्म-सत्य।
काव्य-जीवन के मूल मर्मस्थल को
छूता है केवल वही कवि
जो कल्पना के सूक्ष्मोद्गम पर बैठ कर
तपस्या करता है प्राचीन ऋषि की भाँति।

अतल ज्ञान-महासागर में डुबकियाँ लगाकर
महर्षि व्यास ने प्राप्त किया था कृष्ण प्रतीक,
वाल्मीकि के राम में कवि की आत्म-निष्ठा व्याप्त थी।
जीवन-रूप से कला भिन्न नहीं मृदुल !
आचरण-चिन्तन की प्रतिध्वनि ही—
काव्य-सृजन की महिमा है।

भगवान बुद्ध न आत्म-अस्तित्व को स्वीकारा नहीं
किन्तु प्राण के उज्ज्वल निर्माण की कामनाएँ की।
लोग मानें या न मानें
मैं तो कहूँगा—कहता रहूँगा
कि तथागत आत्मा की साकार मूर्ति थे
क्योंकि
उनके व्यापक हृदय में
कल्याण करुणा और प्रेम का वास था।

कला-परिव्राजक के रूप में
समस्त उत्तरापथ में
वैदिक सत्ता की कथा कहीं भी मैंने
सम्राट हर्षदेव को भी यही सुना रहा हूँ।

कहाँ से कहाँ बह गया मैं
कुछ भी हूँ वात्स्यायन-कुल का ही दीप हूँ
मेरी श्वासों में दर्शन की शब्द-गंध है
मेरी माता वैदेही थी मल्लिके!
रक्त में वह न सही उसकी किरण तो है
प्राण पर वह न सही उसके चरण तो हैं!

आर्ये!
निरभिमान अधिकारी एषणाहीन द्विजाति
रोष-विहीन ऋषि मत्सर-रहित कवि
कामोचित वणिक् दम्भ-शून्य धनी
ब्राह्मण अद्वेषी परापकारी भिक्षु
भिक्षा-त्यागी परिव्राट अमात्य सत्यवादी
दुर्विनीत राजपुत्र मिलना कठिन है
परन्तु देवि!
धरती पर कुछ मनुष्य ऐसे हैं—
जो बिना शरीर धर रमते हैं भाषा पर।

नालन्दा-कीर्ति ध्वजा क्यों सुदूर द्वीपों में—
अबतक लहराती है बात तुम्हें?
कुलपति आचार्य शीलभद्र ज्योति-स्तंभ हैं
उनके निष्काम ज्ञान के वृहत साम्राज्य में
सिंहल कटाह मलय यव वारुण कमल सुवर्ण
वारपक पण्युर्यामन आदि आदि द्वीपों के—
छात्र ज्ञान-दान-ग्रहण करते हैं जीवन में—
कर्म-मन-वचन पर
अनुशासन रख कर निज चारित्रिक रश्मि से।

चीनी विद्वान शीह्वेनसांग
दिव्य बौद्ध भारत का ज्ञानामृत पीकर अब
करते अनुवाद-कार्य।

भारत तो दर्शन की स्वाभाविक भूमि है
दर्शन-अनुप्राणित है मेघदूत काव्य भी
बादल-जययात्रा में आत्म-विरह-सत्य हैं।

फिर कहाँ से कहाँ आ गया मैं
भाव-कल्पनाएँ होती ही हैं चंचला
नयनों के अंचल पर कोई प्रतिबन्ध नहीं।
उसमें भी मैं उदार प्राणी हूँ
तूलिका चलाता हूँ रसभरी भाषा की।
पढ़ना कादम्बरी
रसों में डूब रहे सभी पात्र
कृपण नहीं दृष्टि प्रिये!
रूप-रंग-बिम्ब का वर्णवान् कहता हूँ।

सम्भव है काल ध्वस्त कर दे अजन्ता का
किन्तु स्वप्न-स्कंधावार कैसे ढह सकता है—
जो कि बाण शब्दों से बना रहा ?

मेरी आत्म-प्रशंसा पर हँसना मत आर्ये
विदुषी विधु-वधू से सबकुछ कह सकता मैं।
तुम्हारे भ्रू-विलास को
अंकित कर दिया है आज एक रम्य रूप में
पतली-पतली सी अंगुलियों की कलियों को
गढ़ दिया है किसी के कमनीय अरुण हस्त में।
तुम्हारे कोमल कपोलों की नवनीती मृदुलता
रख दी है ज्यों की त्यों किसी की वासन्ती पूर्णिमा पर।

तुम्हारा घुँघराला काषाय-कुन्तल-कुंज
लहरा उठा है किसी के रस-कलश की राका पर
नीची ग्रीवा पक्षिणी-वक्ष सब कुछ
जो कश्मीर-कुमारी-सी पुलकित पद्मिनी—
गजगामिनी प्रणयिनी हिरणलोचने!
नव रंग-वायु में तुम्हें ही भर कर
मुखर कर दिया है काल-पृष्ठों को।

देख लेना अपना साहित्यिक दर्पण
मिला लेना होंठ से होंठ
छू लेना हाथ से हाथ
बात कर लेना अपनी अमर परछाईं से
सो जाना क्षण भर निज सौम्य-शय्या पर
और कहना मुझ—धन्य हो गई महाकवि!

और तब
प्राण-वल्लभ ! मान जाना मेरी छुपी-छिपी बात
निःशब्द रहूँगा मैं
जब निशान्त की मलयपवन-वेला में
चुप-सा रहता है मधुमत्त भ्रमर
प्रभाकुल चन्द्र चुम्बित पद्मांक पर !
उमगभरी चाँदनी रात की क्षुब्ध तरंग पर
कल्लोल मत करना तुम
केवल भाव-नृत्य की मूक मुद्रा में हो
लूटा देना स्वर्ग का पारिजात-पुष्प
पथ ही बिखराना स्वच्छन्द श्वास की
कामिनीलता खिली-हिली बोली नहीं
बोलती केवल हृदय के अश्रु मुद्रित नयन !

प्यार इतना प्यार करने पर भी
मेरे पत्र में प्रमाण आ जाता है प्रिय !
दिखाना मत किसी को यह काव्य-पत्र
अन्यथा कहेंगे लोग अभी भी आप ईश्वर हैं
भारत-कवि मर कर भी
उल्लास-पर्व मनाता है मन की इन्द्रपुरी में !

बात यह है सुभाषिनी !
कि कवि का कोमल-निश्छल हृदय मग्न ही तरल रहता है
किसी दिन किसी कारणवश
जब
हृदय की धमनी नसों में अत्यधिक दर्शन-चिन्तन की—
उठने लगती है आग
विराग उत्पन्न हो जाता है सहृदयता में !

अरी कविता स्निग्धता और कोमलता की ही सुधा है
कठिन दार्शनिकता का नर्मदा या गंगाजल नहीं
लालित्य और मधुरिमा को
बुद्धि के बन्दीगृह में बन्द करके
काव्य-साधना उस मरु के सदृश है
जहाँ भावना की चातकी
तरसती रहती है कला-स्वाति-बिन्दु के लिए!

कालिदास का मूल्यांकन केवल काव्य से ही नहीं
काव्य-पथ के शाश्वत निर्माण से भी है मल्लिक!
रस बनाने की कला यों तो आदिकाल से ही पनपी
ऋषियों ने समुद्र तक बना दिया
पर उसने रस-निर्माण की सीमा-रेखा खींच दी।
फिर भी कला की व्यापकता असीम है
सीमाएँ और भी निर्धारित होंगी
प्रत्येक युग में जीवन की कल्पनाएँ
बुनती रहेंगी संसार की स्वप्न-कलिकाएँ,
लहलहाती रहेंगी नित-नूतन कविता की लतिकाएँ
किन्तु,
काल के कर में जलेंगे बहुत कम शाश्वत काव्य के प्रदीप!
क्योंकि जीवन से ही होता है सरसता का अमर सृजन
और जीवन को
कला के महासागर में डुबाना सरल कार्य नहीं।

यह कैसे कहूँ मल्लिक!
कि देवासुर-संग्राम की भाँति
जब जीवन के कर्मक्षेत्र में
होता है परिस्थिति का तिमिर-किरण-कठिन समर,
सहज चेतना के भावात्मक प्रलय में
महाकवि किसी आत्म-शिखर पर बैठकर
लिखने लगता है शाश्वत छन्द!

ठीक यही स्थिति होती है अन्य महापुरुषों की,
बुद्ध के प्राणों में भी हुआ था प्रतिभा का महाप्रभव
तब तो उनकी कल्याणमयी वार्तों में
करता है वास मनुष्यता का प्रखर आलोक।

हे साहित्यमयी मदिरलोचन!
चित्रग्राहिणी बुद्धि से ही संचित होती है काव्य-निधि
इस समय भारत में
रागद्वेष से भरे हुए वाचाल
मनमाने ढंग से रचते हैं काव्य
जिन्हें अकवि कहा जा सकता है।
फिर भी
उदीच्य जनों में श्लेष प्रधान शैली
प्रतीची में अर्थपूर्ण कथा-वस्तु
दाक्षिणात्य में उत्प्रेक्षा या कल्पना की उड़ान
और
प्राची में शब्द-संघटन की विशेषताएँ हैं।

मेरी दृष्टि से
विषय की नवीनता
उत्तम स्वभावोक्ति और सहज श्लेष
सामासिक शब्द-योजना और स्फुट रस से हरे
उत्कलिका पूर्णक और आविद्ध शैली में
संभव है प्रणयन नव काव्य का।

अभिव्यक्ति की एक झलक देता हूँ तुम्हें
कि शोण चन्द्रपर्वत से निकला हुआ झरना है अमृत का।
कि चन्द्रकान्तमणियों का निचोड़ है विन्ध्याचल।
और दण्डकारण्य
कपूर वृक्षों का चूआ हुआ है प्रवाह!

सोचता हूँ यही पर कर दूँ समाप्त
यह गद्यगाथा-पत्रिका
किन्तु तुम कहोगी कि वर्णन कुछ किया नही
हर्ष राजभवन का।

तो देखो
स्कन्धावार के बाह्य सन्निवेश में
कोई आवश्यकता नही प्रवेश-अनुमति की
दर्शक देखते विविध विभाग-स्थान
साम्राज्यान्तर्गत नरेशों के भव्य शिविर,
पञ्चदश सहस्र हस्ति-सैन्य
पञ्चभद्र मल्लिकाक्ष कृत्तिकापिञ्जर आदि अश्वों की—
सुविशाल गठित सेना
समर-शिक्षा प्राप्त उष्ट्र-समूह
दानसामन्त-कक्ष आश्रित भूपाल-शिविर
सन्यासी धार्मिक भिक्षु आदि के निवासस्थान
सर्वसाधारण भवन
यवन पारसीक हूण शक पल्लव आदि म्लेच्छ जाति के—
विशिष्ट अभ्यागत-हित निर्मित अनेक कक्ष
और राजदूतों के भव्य भवन।

प्रतिबंधित अन्तर-सन्निवेश में
राजवल्लभ तुरंगों की मन्दुरा
आस्थानमण्डप के बाद भुक्तास्थानमण्डप
जहाँ
भोजनोपरान्त मिलते महावाहिनीपति—
सम्राट् हर्षदेव विशिष्ट व्यक्ति से।

राजकुल की सर्वोत्कृष्ट कक्षा है धवलगृह
वर्तमान भारत का महास्वर्ग!
जहाँ गृहोद्यान में लतामण्डप क्रीडागिरि, कमलवन।
फिर गृहदीर्घिका जहाँ गभोत्कपूर्ण क्रीडावापियाँ-सहित
कमलहंस-शोभित विहारकुञ्ज यौवनमय!
फिर, यन्त्रधारायुक्त स्नानागार
व्यायाम भूमि!

ऊपरी तल में अलका-जैसा शयनगृह
वहीं पार्श्व में मुक्त चन्द्रशालिका भी
जहाँ राजरमणी करती स्निग्ध ज्योत्स्ना-स्नान
पढ़ती नीलाकाश-ह्राम की समस्त पाण्डुलिपियाँ
देखती पावस में सघन-हिरण-घन
और,
पूछती विद्युत से कुछ भीग-भीग प्रश्न!

मल्लिके! यहीं पर एक प्रासाद-कुक्षि-स्वर्गीय
जहाँ अन्तःपुर की किन्नरियों का संगीत-नृत्य।
वाद्य-वातास से सम्मिलित
ताल-लयपूर्ण कण्ठ-विलास का उल्लास
काव्यानन्द-प्रमोद-विनोद भी।
सुगंधित ताम्बूल और पयरस से तन-मन सरस-सरस।

विजयोत्सव के दिन
दुन्दुभी और शंख पर जयोच्चार
द्वार-द्वार पर कलश वन्दनवार

पुरोहित के पावन कर में शान्ति-जल
मुख में मंत्र मंगल-मंगल
और,
सुसज्जित अन्तःपुर में
क्षौम बादर दुकूल नेत्र लालातन्तुज अंशुक—
विविध वसनशोभिनी वारविलासिनियों के—
रंग-बिरंगे श्लील-अश्लील संगीत।
वेणु, आलिंग्यक तंत्री पटह झल्लरी
अलाबु-वीणा और काहल का मिश्रित सुर-सलाप
दृगों में सुरचाप-सी शोभाएँ।
अभी इतना ही

लो स्नेह-दान
न यही तुम्हारा चपल बाण

—

माया के अन्तरंग कवि-मित्र ईशान !
मैं हूँ तुम्हारा वही दलपति भट्ट बाण
स्मरण है अभी भी यात्रा-पथ की एक-एक बात
कटे कैसे दिन कटी कैसे रात
हुए प्राणों पर कैसे-कैसे आघात
स्मरण है सबकुछ मित्र !

कभी-कभी स्वप्न में देखता हूँ
भूमच्छावत नाटक का उत्थान-पतन
भर-भर आते अतीत के नमन से ये तृषित-तप्त नयन !

निष्फल कोई भी प्रयास नहीं ईशान
सफलता कभी भी सम्पूर्ण नहीं
इस कष्ट समापन पर
देना बार-बार ध्यान।

भगीरथ की भाँति
अंधकारमय शिव की जटा से
नाट्य-कला-गंगा को निकाल कर
चले हम करने उद्धार असंख्य दुग-पुत्रों का।
शोण की स्पंदनशील दीपशिखा लेकर
हमने परिक्रमाएँ कीं प्राय सभी जनपदों की।

सत्य है हमारी मैत्री टूट गई
माधवी से सभी आँखें रूठ गई
हो गई समाप्त सारी सम्पत्ति भी
विपत्ति में रहे साथ-साथ हमदोनों
निझरों और नदियों का जल पी-पीकर—
कन्दमूल खा-खाकर लौटे वाराणसी।

स्मरण है मित्र एक-एक घटना
अजन्ता और उज्जयिनी की वे सुहावनी रातें
कितनी प्राणदायिनी थीं।
प्रयाग के सरित-संगम पर गीत-गुंजित नौका-विहार
कितना आनन्ददायक था मित्र!

वास्तुकलाओं के सूक्ष्म अवलोकन में
कितने तन्मय थे हमदोनों
गन्धर्व-सुन्दरियों के शास्त्रीय कंठ से
निकली थी जो तरंगित प्राण-धाराएँ,
तुम नहीं भूले होगे मित्र!
माधवी की उन्मत्तता के बंकिम कटाक्ष में
निकली थी जो वशीकरण की सम्मोहन दृष्टि-कणियाँ
उन्हें रख दी हैं कादम्बरी की चित्रशालिका में।

सुना है अब तुम दो से हो गए,
उस प्रणयालय में मुझे बुलाया नहीं क्यों?
क्या मैं आता नहीं?
मित्र! मेरे जीवन में
मित्रता का स्थान अत्युच्च है
मेरी अग्नि-परीक्षा हो जाती तुम्हारे आमन्त्रण से।

बाग क काम्योत्थान में
स्नेह-सहयोग ह उन महाय और सुहृद मित्रों का—
जो घर-द्वार छोड कर चल सग-सग कल्पातीर्थ में।
हृपचरित में मबका स्मरण किया ह मन
रेखा और वेणी को अंकित नही किया मित्र
कहोसुम्हो कैस उतारूँ मैं उन्हें?
अन्तरात्मा की व दोनों विहगियाँ
बठना नहीं चाहतीं प्राण-निझर पर
और, म भी
नयन से बाहर नही चाहता निकाल्ना।
कुछ तो छिपा हुआ रह मित्र!
जैस ललित काव्य का ध्वन्यात्मक अर्थ
निकल कर भी नही निकल्ता
बसे ही
उन्हें निकाल कर भी नही निकाल पाता।

ईशान! मरे दोनों ग्रथ अपूर ह अभी
एक-एक वाक्य को सुनते ह सम्राट
एक-एक उपमा पर करत हैं अगुलि-पूजन!

क्या कहूँ
एक दिन चूक-सा गया व्यवहार में।
उनक काव्य-ग्रय को देख कर
कह दिया कि यह मणुडियों का स्तूप ह!
सख! वे विचलित नहीं हुए तनिक भी
बोल "मैं कवि नहीं एक माघ-योद्धा हूँ"
तब मन कहा "नरदा! नाटक में नाकिन हैं"
लिखे कृष्णबदन यह सुनते ही
"ओ" मयूर भट्ट भी हुए विमुग्ध।

तुम तो जानते हो मित्र
कि मैं कितना मधुर स्पष्टवादी हूँ
अवसर पर उक्ति-तीर छोड़कर सुनता हूँ प्रतिध्वनि।
मेरा उद्देश्य नहीं
चाटुकार बनूँ स्वग-तुलि में!

मित्र! मेरी जन्मकुण्डली को देखकर
हुए हैं हर्षदेव कुछ चिन्तित!
ब्रह्मा ने मेरे जीवन की नदी लम्बी नहीं बनाई
वय की धारा सूख जानेवाली है शीघ्र ही!

सोचता हूँ अब—
एक-एक क्षण के उपयोग से
करूँ वाणी का अविरल शृंगार,
संसार को अर्पित कर दूँ सर्वस्व।
है ही क्या मेरे पास मित्र?
कुछ रंगीन भाषा और भाव की कथाएँ हैं
गूँथ रहा हूँ इन्हें रच-रच कर!

उदात्त काव्य का सृजन होता है उदात्त मन में
मैं तो अभी भी अबोध हूँ
कच काले हैं मित्र!
शुभ्रता आई कहाँ
(आनेवाली भी नहीं)
फिर भी कुछ नवीनताओं की अभिलाषा लेकर
खड़ा हूँ भारती के विराट द्वार पर।

अमर तो वे ही होंगे
प्रखरता है जिनके पास
शक्ति है जिनमें नौका खेने की—
काल के असीम सिन्धु पर!

छोटी अवस्था की सीमा में
मैं कितना क्या करूँ मित्र
अभी तो क्षमरता का ही कोश है
अमरता का संग्रह कहाँ किया है ईशान!

मेरी मृत्यु के बाद
शोण से क्षमा माँग लेना
कहना कि बाण क्षमा की तरह आया
और क्षमा की तरह चला गया
प्रदीप में तेल अधिक नहीं था
कुछ दिन जलकर बुझ गया!
इतना कह देना ईशान भूलना नहीं!

शोण की रेत पर ही लिखा था अनामिका से
श्वेत बालू का पहला श्लोक
और, लहर ने स्वीकार किया था उसे।
मेरा प्रथम गीत जल पर बह गया बह गया ईशान!
आऊँगा तो रचित एक-एक वाक्य
एक-एक शब्द सुनाऊँगा शोण को
प्रथम पूजा वहीं करूँगा मित्र!

स्मरण है शैशव के वे दिन
बाल यौवन की वह रात
वे खुली-मुँदी बातें शोण से छुपी नहीं।

अहा! मेरे पूर्वजों ने उसके तट पर—
की थीं कठिन तपस्याएँ
किन्तु मैंने उनके संचित पुण्य को लुटा दिया!
क्या कहेगा इतिहास?

ईशान! मैं प्रासाद में रह कर भी
दूर हूँ राग-रंग से
तुम्हें तो ज्ञात है मेरा आन्तरिक स्वभाव।
प्रतिभा ने पुरस्कृत किया मुझे
यहाँ की अर्जित सम्पत्ति
वितरण कर दूँगा सभी मित्रों में।
बाण पर सभी मित्रों का है समान अधिकार,
क्या इतना भी नहीं होगा मुझसे?

मेरे अभिन्न मित्रमण्डल से—
कहना यथायोग्य मेरा हार्दिक नमस्कार
कभी-कभी
तुम लोग आना-जाना भी
मित्र-मिलाप से बढ़कर दूसरा कौन आनन्द है ईशान?
फिर लिखूँगा कभी अभी इतना ही

तुम्हारा बाण

चतुर्दश सर्ग

मंजरित आम्रवन-अम्बर से
कपिशा सन्ध्याभा आती-सी
काषाय-कुन्तला नील वधू
उडु की वर्तिका जलाती-सी

अज्ञात यौवना बाला में
कनकाभ किरण-सी आती-सी
फेनोज्ज्वल प्रच्छदपटी
इन्दु-कंचुक-पथ पर लहराती-सी

नव इन्द्रनीलमणि-सी यामा
बाँहें पसार मुस्काती-सी
मंथर गति से कुछ रुक-रुक कर
आती-आती सकुचाती-सी

निशि की किरातकन्या चुपके
शशि-पक्षी एक उड़ाती-सा
पिंजर में शत उडु-खग भरकर
नीली लहरों पर आती-सी

भूषण के स्वप्न-समास्थल में
कल्पना बाण की थाती-सी
संस्कृत की कथा-लता नूतन
शाश्वत छवि-सी फहराती-सी

आकाश-हर्ष सम्राट्-भवन——
गृह में चन्द्रोत्सव होता-सा
कादम्बरि-मदिरा-तरल श्वास
उर-यौवन पर मन खोता-सा

सौन्दर्य-वक्ष पर झरती-सी
पाटल-पंखुड़ी चमकती-सी
हिममयी हिमालय-निधि-विटपी
विद्युत् से स्वयं दमकती-सी

हंसिनी-यामिनी कुमुद-कली
शिशि-शुभ्रांचल में भरती-सी
कमनीय कपोती एकाकी
झिलमिल नभ में कुछ झरती-सी

राका-रमणी अभिसारमयी
चंचल चितवन अकुलाई-सी
मोहिनी ममता निकल पड़ी
मधुर अलका-परछाईं-सी

सन्ध्या-सागर से अमृत-कलश
निकला ज्योत्स्ना छलकाता-सा
गगनेन्द्र चन्द्र-कवि रजत छन्द
रचता मन-ही-मन गाता-सा

साकार स्वर्ग-कामिनी चन्द्रिका—
सु रा समस्त पिलाती-सी —
रवि-दिवस-समर-उ प रा न्त
शान्ति का ज्योतिर्जल बरसाती-सी

नव सोममद्र में अनुराग
कुछ उठता-सा कुछ गिरता-सा
मल्लिका-नयन में इन्द्र-धनु
सजग-पवन पर तिरता-सा

ज्यों उडु-लोचन में सुधि-तरणी
प्रतिबिम्ब-सलिल में तिरती-सी
छवि-मिस-माधुरी की तितली
मन-वन में उड़ती-फिरती-सी

बालुका-शिखर पर ग्राम-गीत
ईशान-कंठ से झरता-सा
गुंजित तट पर नीराजाली
निशि-मुक्त हिरण-दल डरता-सा

झिमि-झिझिमि-झिमिक झिमि-झिमिझि झिमिझि
बजता सितार पर बोल-जाल
झिम-झिमिर-झिमिर मादक मृदंग
टिम टिम-टुन मुखरित अन्तराल

उल्लसित अन्तरा तीव्र-काल
स्वर-मत्त हस्त-अभ्यस्त ताल
भावानुकूल म ना नु भू ति
संगीत-स्पंद-परिपूर्ण भाल

ग्रामीण गीत-गोष्ठी-तरंग
तरणी निशीथ तक लहराती
पुरवी हिलोर के चुम्बन से
वर्तिका-शिखा भी झुम जाती

निर्विन्ध्या-द्रोण-तराई में
सरसों-यव-गेहूँ चना मटर
स्वर-प्रसार वायु-सवेगों से
श्यामाच्छादित क्षिति मर्मर्-स्वर्

पथ-पथ में पागल ऋतु-प्रलाप
दिशि-दिशि में पुष्पित अट्टहास
मदनीय मधुरता से मुखरित
विधुमय वासन्ती दिशाकाश

रसमयी रात में विदित बात
कोकिल रसाल-वन में विहरित
रूठी-सी मदिरलोचना सी
नतकुसुम-कली-सी अलि-कम्पित

गूँजती बाण की पूर्व कथा
अधुनानन्वित वन-पुष्पों में
उड़ती अतीत की सुधि-सुगन्ध
केसर-कुंकुम-सी धूलों में

गत सभा कंठ में सुयश-गान
उमग उत्तीर्ण तरंगों पर
विजयी सेनाएँ तूर्य-नाद—
करती ज्यों पवन-तुरंगों पर

बाणाह्वानित हर्षित सभी
मलयानिल-सी गज-गर्जित-सी
मरुयामिक-सी इच्छिता प्यास
ज्यों द्युतिवदना घन-घर्षित-सी

यश-अमृतवृष्टि स जीवन की
चापल्य-कालिमा धुलती-सी
सौभाग्य-सुचतु के करतल से
तम-ज्योति-मणियाँ खुलती-सी

अभियाचित सिद्धि-वर्तिका पर
अब आर्जुनेय स्वर-मन्त्राक्षत
साहित्य-यज्ञ पूर्णाहुति में
पञ्चायु-पुष्ट रूप भी गर्वोन्नत

युग-युग की दृष्टि तरंगायित
तेजस्वी प्रतिमा-दर्शन-हित
तत्परता-एकाग्रता स्वयं
सुप्रीत स्वस्ति-शोभा-संस्कृत

पग-पग पर पद-पंकज-पूजा
दुर्गुण भी गुण में परिवर्तित
गौरव-गिरिपरएकछत्रप्रभात—
करता तम मन को आकर्षित

केवल रह गए अशान्त मौन
बन्धन से अन्तःकरण दुखित
कुछ झुका-झुका-सा स्वाभिमान
स्वातन्त्र्य-नयन लज्जित-लज्जित

पाश्चात्य-स्वत्व-अपहरण दक्ष
शोणित में नित आग्नेय किरण
चलते-चलते रुक-रुक जाते
तप-तन्द्रिल मगधाधिप चरण

वात्स्यायन-कुल-अस्तित्व-तिलक
मिट गया स्वर्ण आकर्षण से
गीता अनुज हो गई स्यात्
सम्राट्-चरण के वन्दन से

झुक गई मुक्ति की मंत्र-ध्वजा
राज्यासन-सम्मुख प्रथम बार
करने लग गया सुवत्स-शीश
नृप-माता को नत नमस्कार

प्रतिमा को हर ले गया हाय
प्रभुता-पौरुष चन्दन-वन से
हे प्रीतिकूट की आत्म-धरा
कुछ पूछो तुम्हीं दशानन से !

लक्ष्मण रेखा मिट गई, कनक—
मृग-मन के ऐन्द्रिक छल-बल से
मैं कहूँ कहाँ तक शान्त हृदय
कलुषित करुणा के मृग-जल से

मन्दिर प्रदीप ले गया काल
देवता प्राण क रोते हैं
चढ़ते जो केवल आत्मा पर
ऐसे प्रसून भी होते हैं !

तन जहाँ वहीं पर मन बंदी
सीमा पर शस्त्र अड़ेंगे ही
जिस भू से उमड़ेंगे बादल
उस भू पर तो बरसेंगे ही

कैसे मैं मना करूँ मन को,
सब दिन से उसका स्नेही हूँ
सम्राट् जानते नहीं स्यात्
मैं वही मुक्त विदेही हूँ

वात्स्यायनकुल मन-मुक्तिदूत
सत्ता-पूजा से भिन्न सदा
काँपी न कभी इस अम्बर में
पद-लोलुपता की घन चपला

अकलुष उर की सरला वसुधा—
उन्मुक्त व्योम-वन्दनामयी
अरुणोज्ज्वल अन्तर्मुखी दृष्टि
आत्मानुराग-अर्चनामयी

मैं शान्त तपोवन का वासी
निष्काम कर्म में रत जीवन
पावन श्वासों की समिधा पर
करता हूँ प्रतिपल प्राण-हवन

अलि मैं नित जीवन-गुंजन भी
पर नित्य प्रखर मधु-ज्योति-पान
शतदल-कुटीर में रह कर भी
सतत सत्य का बिन्दु-ध्यान

मैं कर न सकूँगा व्यक्त कभी
अन्तर्वेदना प्राण-सम्मुख
कोमल होता कवि-हृदय-कुसुम
हो उस कभी भी तनिक न दुख

कह गए पिता निज निधन-पूर्व
'पालना इसे तू सुत-समान
रोकना नहीं अन्तर-प्रवाह
यह नहीं करेगा कठिन ध्यान'

मृदु भाव पुत्र-सा प्रिय पवित्र
नयनों में ममता मातृ-तुल्य
शंका-विहीन मम सुभ्रान्तर—
आँकता रहा वात्सल्य-मूल्य

हो सुखद सर्वदा लौकिकता
स्थायी हो सुषमा-स्वर-प्रमाण
हो व्याप्त एक दिन विश्व-घोष—
'है काल-विजेता महाप्राण'

चाहता पिता, हो पुत्र यशी
नक्षत्रों-सा चमक भू पर
बंदी रह कर भी नृप-गृह में
बिखर किरीट-मणि स ऊपर

कवि हो विमुक्त भावों का रवि
अन्तर-प्रकाश का गायक है
पूजे सिंहासन जिस सन्त
वह वैसा स्वर-उन्नायक है

चेतना-पुरुष सक्षम शिल्पी
संवेदनशील चितेरा कवि
कोमल किरणों में छुपा हुआ
सतरंगी सरस सवेरा कवि

कवि तो त्रिकालदर्शी ब्रह्मा
वह परा और अपरा-द्रष्टा
अक्षर-वसुन्धरा पर सस्वर
आत्माम्बर का सुन्दर स्रष्टा

कल्याणानन्द-प्रणेता कवि
सुन्दरता का शिव-सन्यासी
अन्तर-सागर में मानस-गिरि
उज्जयिनी में उत्पल-काशी !

नित शयन-कक्ष में स्नेह-दीप
जलता मल्लिका सुहासिनि का
खिलता नयनाम्बर में चम्पक—
चन्द्रमा-कुसुम शुभ्रानन का

पति की पगी पल-पल स्वप्निल
अलसाई आँख सोती-सी
आवरणहीन-सी विधुवदनी
कुछ हँसती-सी कुछ रोती-सी

सुरभित शय्या पर आलिंगित
कामना-बाहु वल्लरियों-सी
उठती-गिरती साँसें छवि के
अम्बुधि में लोल लहरियों-सी

यौवन प्रवेश की राजपुरी
स्मृति को आमन्त्रण करती-सी
प्रिय-मिलन-निशा की अमृत-कली
आकुल अधरों पर झरती-सी

पञ्चदश सर्ग

पिपिंग-वासी बौद्ध भिक्षु ह्यू यांग!
भारत से लिख रहा पत्र में ह्वेनसांग
महारण्य-गिरि-दुर्गम पथ कर पार
उत्तर-पश्चिम धर्म-शिखर में
देखा आर्य-देश का वैदिक द्वार।

हिमाच्छन्न उत्तुंग हिमालय पर अरुणांकित प्रात
संस्कृति-मानसरोवर में विकसित आनन्द-जलजात
नद-निर्झर-सिंचित वसुधरा अन्न-फूल-फल-पूर्ण
जन-मन-पूजन-मुक्तपात्र में कर्पूर-चन्दन-चूर्ण

विधुवदना विदुषी वसन्तवसना संस्कार-सुशोभित
मालबद्ध मांगलिक स्वर में आश्रम-कण्ठ नित गुंजित
धन्य हुई मेरी यात्रा है मित्र निरख भू-स्वर्ग
स्यात् कहीं भी नहीं विश्व में इतना रम्य निसर्ग

फाहियान ने उचित लिखा भारत देवों का देश
आए थे आकाश-मार्ग में कभी प्रसन्न सुरेश
उर-सरोज-सौन्दर्य-राज में स्नेह-शील-मकरन्द
प्राण-पवन में प्रवहमान निर्मल मलयानिल-छन्द

मन विभोर अनिमेष नयन से देख प्रकृति-शृंगार
विधि-वसुधा को नमस्कार करता हूँ बारम्बार
महामनुजता-मिथुनीय सर्वोत्तम भारतवर्ष
कला-धर्म-दर्शन-उत्प्रेरित नगर-ग्राम उत्कर्ष

वैदिक-ब्राह्मण-बौद्ध-जैन-संस्कृति रसप्लावित धरणी
किरण-काव्यमय कमलपत्र-सज्जित सुनील पुष्करिणी
व्याप्त विविधता किन्तु एकता की केन्द्रित अभिलाषा
दिव्य ज्ञान से पूर्ण महासागर-सी भारत भाषा

योग-भोग से व्याप्त सभ्यता ऋद्धि-सिद्धि-अनुरंजित
कोमल कठिन कर्म से यतनशील कलाएँ मुखरित
वर्षों तक देखता रहा मैं धान्य-धन की सुषमा
फाहियान ने दी थी इसको देवलोक से उपमा

तक्षशिला नालन्दा विक्रमशिला विश्वविद्यालय
मनशासित छात्रों को करते शास्त्रों से ज्योतिर्मय

भौगोलिक भूविशाल देश का
शुभ्र हिमालय-शिखर तुषार किरीट
शिव-संगम से व्याप्त शान्ति-आकाश
चतुर्दिक
आत्म-ध्यानित ताण्डव का हास-विलास !

कला-पार्वती की क्रीड़ाएँ हिमोद्यान में
आध्यात्मिक चापल्य ताल पर मग्न-गान में
नादित वायु-मृदंग शान्त कमनीय छटा पर
चमक-चमक उठती कविता रमणीय घटा पर

चन्द्र-तूलिका हिम-शिखरों को चित्रित करती
निशि के नीलवृक्ष से तारक-कलियाँ झरतीं
पल खोल कर देवदारु-वन में अप्सरियाँ—
शिव-सरिता में भरतीं सुर-हिम इन्द्र-गगरियाँ!

नूपुर-ऊपर किरण-चरण स्वच्छन्द तरगित
ज्यों जाग्रत प्राणात्मा करती मन को इगित
सलिल-गीत से पुंजित गिरि-निर्झरिणी झर-झर
उड़ती पक्तिबद्ध शत विहगी रगबिरगी सस्वर

उत्तर के समतल भूतल पर
गगा-यमुना-सिधु-ब्रह्मनद सदा प्रवाहित
मध्य भाग में विन्ध्याचल की शैल-श्रेणियाँ
उसके नीचे
दाक्षिणात्य की कलामयी बंकिम वसुधा पर
बहतीं प्रतिपल
महानर्मदा ताप्ती गोदावरी और कृष्णा कावेरी।

इन नदियों के बीचे सीमा ओर
उच्छ्लित अम्बुधि-प्रवाह उद्दाम
पश्चिम पारस
पूर्व ब्रह्म भू
इसी मानमन्दिर का भारत नाम!

अति प्राचीन मनुष्य-सभ्यता ज्ञानग्रंथ ऋग्वेद
वर्णित जिसमें प्रकृति और जीवन-रहस्य का भेद
सूक्ष्म तत्त्व-दर्शन-अनुप्राणित ऋचा-स्तूप वेदान्त
गहन ज्ञान-सन्ध्या में मानों माया का मायान्त!

वर्तमान भूमण्डल का
नालन्दा ज्ञानागार
होती जिसमें नित्य कठिनतम
वाणी की झंकार।

कुलपति शीलभद्र ज्योतिर्मय
स्वयं एक उप बुद्ध
सात्त्विक तात्त्विक उन्नत जीवन शुद्ध।
योग-शास्त्र पर उनका ही अधिकार
धर्मपाल गुणमति स्थिरमति जिनमित्र (चन्द्रफल)
ज्ञानचन्द्र सागरमति आदि प्रकाण्ड दिव्य आचार्य
सदा करते शिष्यों को प्यार।

देश-देश के दस सहस्र मेधावी छात्र प्रसन्न
सदाचार-सुविचार-मधुरता—
से अन्तर आच्छन्न।
नालन्दा में महायान-उद्यान
मिलता हीनयान का भी गुरु ज्ञान।

बहुत दिनों तक
बौद्ध और मगध पंडित में
हुए शास्त्र-संग्राम
छूटे विभागात्मक दर्शन याम।

अतुल तर्क का नव आदान-प्रदान
हुई प्राप्त नूतन उपलब्धि महान।
खंडन-मंडन में भी मिलती ख्याति
उड़ती अन्तराल में किरण-कपानि!

सिद्ध बुद्ध के प्रखर शिष्य उप तिष्य—
सारिपुत्र की पुण्यस्मृति में
नालंदा का हुआ कभी निर्माण
राजगृह से उत्तर-पश्चिम
नलग्राम था उनका जन्मस्थान।

प्रथम चरण का नृप अशोक ने स्वयं किया था ध्यान
कालान्तर में
बौद्ध भक्तों के सुयोग से
बना दुर्ग भूविशाल
बने अनेकानेक पद्मसम विस्तृत-विस्तृत ताल।
चारों ओर बने ऊँचे प्राचीर
नालंदा हो गया धीर-गंभीर।

महाविहारों के नभचुम्बी तुंग शीर्ष पर
बैठ-बैठ कर वर्षाऋतु में
देखा करते हम बादल-उत्सगाम

पढ़ते सस्वर जातक-कथा-पुराण
त्रिपिटक-मर्मों का भी करते ध्यान।
विद्युत् में ढूँकते—
महापाणिनि-कृत अष्टाध्याय
सुनते हम चाणक्य-सुचिन्तित श्लोक।
धन-कलिंग की रण-समाप्ति पर
खिलता शारदीय अम्बर में
कारु-कुमुद-वन में चन्द्रीय अशोक।

लिखूँ कहाँ तक मित्र
बड़ा कठिन है पाना यहाँ प्रवेश
मुख्य द्वार पर ही होती प्रतिहार-परीक्षा
सब-मिलती शिक्षित प्रतिभा को आश्रय-भिक्षा।

बीस वर्ष से कम वय वाले यहाँ न आते
तेजोज्ज्वलता से आए यदि
पञ्च वर्ष तक
वृत्ति-सूत्र ही उनसे अध्यापक रटवाते।

शिक्षाएँ निःशुल्क
सुभोजन वस्त्र आदि का भी प्रबन्ध
करता नालन्दा स्वयं
सुनिश्चित आय ग्राम से।

अष्ट भाग में समय विभाजित
मध्य भार में शयन-त्याग-हित
बजता एक नगाड़ा दिशि-दिशि होती गुंजित।

स्वयं छात्र औ' शिक्षक करते स्वच्छ सदन को
बुद्ध-वन्दना में अर्पित करते मृदु मन को
पुष्करिणी में स्नान और फिर उपाहार नित
सभी वर्ग के छात्रों में संस्कृति स्वाभाविक

शील-सौम्यता का प्रसार आचरणांगन में
श्रद्धा प्रेम परस्पर शिक्षक-छात्र-नयन में
यहाँ कभी संघर्ष नहीं गुरुता लघुता का
सदा दीप जलता प्रकाश-पुंजित समता का

धर्मगंज पुस्तकागार में शान्ति स्निग्धतर
रत्नोदधि में नहीं गूंजता कभी तुमुल स्वर
मध्यांगन में एक पुष्प-उद्यान सुवासित
जहाँ तथागत-ताम्रमूर्ति पर्वत-सी स्थापित

नील पद्म-शोभित तड़ाग में हंसमालिका
बिम्बित जिसमें श्वेतस्फटिक-प्रधान शालिका
राजगृह का दाम-कुंज होता आभासित
गृध्रकूट-गिरि-शिखर निखर पड़ता कुसुमित

भरत युग में मुनि-करुणा मौदगल्यायन
मुक्त बिम्बसार-युग के स्वर्णिम वातायन
कभी पाटलिपुत्र यहां का गौरव-स्थल था
चन्द्रगुप्त के विजय-खड्ग में भारत-बल था !

वैशाली-गणतन्त्र सुविकसित था प्रकाश से
स्वयं बुद्ध अत्यन्त प्रभावित थे विन्यास से
रुके नर्तकी अम्बपालिका के कानन में
आया था वैराग्य प्राप्त उसके आँगन में

लिखूँ कहाँ तक मित्र मध्य भारत की महिमा
अब तक है अक्षुण्ण देश की उन्नत गरिमा

महाहर्षवर्द्धन तेजस्वी वर्तमान सम्राट
नीतिनिपुण साहित्य-मुकुट
प्रतिभा-सम्पन्न मधुर व्यक्तित्व विराट्।
कला चेतना से अनुप्राणित प्राण
कभी नहीं सुख म्लान।

प्रबल दस्युदल उनके बल से शान्त
वसुधा कभी नहीं दुर्भिक्षाक्रान्त!
नालन्दा पर नृप की कृपा महान्
करते वे प्रयाग-संगम पर पंचवर्षीय दान
उत्सर्गित निज संचित कोष-कृपाण

वर्तमान युग के प्रिय कवि थी बाण—
करते नालन्दा का अति-सम्मान

राज्यान्तर्गत विद्यालय-संचालन का—
मन्त्रणा-कक्ष में आया जब प्रस्ताव
कहा उन्होंने—

ज्ञान भारती-मन्दिर रहे स्वतन्त्र
रक्षित हो विद्यानुरागियों से ही शिक्षा-तन्त्र
ऋषिकुल-पोषित परम्परा का हो आन्तरिक विकास
फले वसुन्धरा पर दार्शनिक निर्दलीय विश्वास
नृप-बन्धन से दूर रहे मानवता का संगीत
दे किरीट अभिभूत वैभव को विरामवत् शुचि प्रीत

नृपति की निर्द्वन्द्व-दृष्टि में कौंधी ज्योति की बात
दूर हो गई नालन्दा में आनवाली रात।
मित्र स्वयं सम्राट् महाकवि एक
काव्यासन पर विकसित प्रखर विवेक।

उत्कल में जब हीनयान के कुछ भिक्षु ने
नालन्दा में दिए गए सम्मानुदान का—
किया तीव्र उपहास
हुए सत्वर आमन्त्रित वहाँ विद्वान।
सागर-तट पर
महायान की हुई विजय भरे प्रमाण से
हुए अत्यधिक हर्षित नृप नव तर्क-ज्ञान से।

मग्न श्रमण सु वाग!
भिक्षु च्यांग जा रहे यहाँ से चीन,
विनयपिटक में वे हैं अधिक प्रवीण।
भूल गए अब सोमायोग अफीम
मन्दिर में देना तुम समुचित स्थान
लिए जा रहे कतिपय शास्त्र-पुराण।

स्वास्तिवाद सस्कृत त्रिपिटक का—
यमपूर्वक करता हूँ म अनुवाद
होंगे दूर इसी से धर्म-विवाद।

बन्धु जंगलू स कह देना
त्सांग चीन पहुँचगा लकर दीप
यात्रा-सुविधा देंगे मुझे महीप।

सुनो ह्वांगहो क समान ही
यहाँ कौशिकी की धारा उद्दाम
तीरभुक्ति में प्रबल बाढ़ से
मचता हाहाकार,
किन्तु पुन
नव रज प्रसार स शोभित धान्यागार।

यदा-कदा सुधि-प्रतिरूपित—
बोतान और मलान
भिक्षुणी पर रखना नित ध्यान।

मठ क चारों ओर खिल होंग चरी क फूल
उड़ती होगी अगरु-धूम्र-सी धूल।
नील झील स कमल तोड़कर सजना मन्दिर-द्वार
चीर वृक्ष को ढँक ले यदि हिम-हास
हिला दिया करना तुम बारम्बार।
गोबी मरु में आए ही होंग भीषण तूफान
पीड़ितों का करना कल्याण

तुम्हारा ह्वेनसांग

षोडश सर्ग

यश-वर्धित कवि जिस दिन आए
गौरवान्वित दृग बौराए
मृग कोकिल ललित सखा डोली
पिंजरित सारिकाएँ बोलीं

सोमिल सन्ध्या में गृह गुंजित
उल्लसित प्राण-मन परिरम्भित

जाग निशि-निद्रित नील कमल
झुक-झुक झूम कुमुदों के दल
प्रस्फुटित हास्य-मंजरि महकी
कोटर-सुषुप्त विहगी चहकी

सप्तर्षि-गामी-सुगम —
स्पन्दन से स्थापित मगन अब

हंसों के पंख खुले नभ पर
तरुवर-छाया में केकी-स्वर
दिक्-शोभित द्रुत अम्बुद-कपास
सरि-पुलिनों पर चन्द्रिका-कास
उभरी सुधि-बाणाम्बरी-प्यास
युग-वन में द्युति राधिका रास

विजयी यौवन में जयति-गीत
विधु-सी बिम्बित प्रतिबिम्ब-प्रीत
कुसुमित शरद्-सीमित जल-थल
फुरफुरित नयन-खंजन चपल
गुण-गान-पूर्ण जब कवि-जीवन
आयोजित मातृभूमि-अर्चन

परिजन-पुरजन-मन मिलनाकुल
आकुल उर-पुर में स्नेह अतुल
मिल नूतन तनु-सम्बन्ध-आस
आशीष भार से नमित भाल
नभोपक्षित रवि उद्भासित
आभा-अभिनन्दन आत्म-चकित

कवि का निर्मल निर्भर नमन
उत्फुल्ल नयन में मोहन घन
भीग स्वर से उन्नत उत्तर
श्रद्धा-विभोर प्राणान्तरतर

मृत्तिका-मोह पुन-सुधा-सिक्त
मातृका-पात्र प्रतिपल अरिक्त

ममता प्रवदा में हो ममता
कण्टक-विहीन आनन्द-सना
जननी-दृग में हृत्पाद्य करुण
आमरण विपुल वात्सल्य अरुण

दुख में भी सुख-शोभा अपार
हे जन्मभूमि! शत नमस्कार

पूछा कवि ने सब है न कुशल?
होते न रहे उत्सव मंगल?
व्याकरण न्याय मीमांसा का
चलता न रहा क्रम पहले-सा?
होता न रहा शास्त्राऽभ्यास?
नित भर सुभाषित-मय सुवास?

"छात्रों का वेद-पठन-पाठन
विधिवत् यज्ञादि देव-पूजन
प्राचीन काव्य-संलाप सुखद
करते न रहे मन को गद्गद?
होता न रहा वीणा-वादन?
खिलते न रहे संगीत-सुमन?

पाकर संतोषप्रद उत्तर
बाणाम्बर सत्वर सभा-मुखर
सस्मित वार्ता स्वामीश्वर की
राजाधिराज परमेश्वर की
उड़ गये पुत्र भी आत्म-मुदित
ज्यों विकस व्योम में सूर्य उदित

अशनापरान्त मध्याह्न-काल
फिर मिल मित्रमण्डल-मराल
गप्पोत्सव गुंजित ज्यों शतदल
संचित रस-कथा-कलि अविरल

फिर वही रंग फिर वही ढंग
युग-युग में दैहिक मृग-तरंग

ताम्बूल-प्रसाधित सभी-मुख
नव अट्टहास गर्भित सुर-सुख
वाणी में उन्नत इत्वरपन
ज्यों प्रौढ़ विदूषक-समायण

यौवन में ज्वारित तुमुल नाद
सब भाजन दूर विगत विषाद

निपुणता-शीर्णता-हीन सुगम
सुषमामृत-सूक्ति-अलज्जित क्रम
गोष्ठी-विलास परिहास-युक्त
चंचल चपला-सभा मुक्त

छूटी साहित्यिक फुलझड़ियाँ
टूटीं नैतिकता की लड़ियाँ

मञ्जोतिपूर्ण मम वाक्यांजलि
स्फोटार्पित रुचि-हास्यांजलि
विस्मृत सुभग-भाषा विकसित
शब्दों में डूब्य अतीत ध्वनित
रक्त-रंजित ठहरामृत सुधि
अधा-उन्मीलित ज्यों अम्बधि

आए अभिमधुर विभ्रम
मुद स्थगित प्राण-पागल गुञ्जन
ताण्डवित प्रसून प्रलाप शान्त
यौवन में ज्यों सभा-दिनान्त
फिर मौखिक स्वर-विस्तार प्रखर
पद शास्त्राङ्कित विधु-विम-अमर

पहुँचा पुस्तकवाचक सुवृष्टि
उत्कंठित वायुपुराण-वृष्टि
श्वेताम्बर-आवृत तन-दधीचि
अर्धनिमत नयन में अमृत-वीचि

शुचि शिखर-बंध में फूलमाल
चन्दन से चकमक पीत भाल

मौलश्री तरु से झिर चपचप
उष्णीष ग्रीव पर भी टपटप
ताम्बूलित फुल्लित कपिश-गात
पगुराता ज्यों प्रिय पशु प्रवात

नारीय कंठ उच्चरित श्लोक
प्रच्छन्न पाठ सस्वर अटोक

प्रारंभ पुन शास्त्रप्रसंग
प्रिय नृपति बाण से ध्वनित छन्द
तब हर्षचरित की छिड़ी बात
श्यामल सुन भुज ने कहा 'तात !

कादम्बरी-श्रवण-हित हम अधीर
तन्मय दूरागत रसिक-भीड़

किंचित् विमर्श-उपरान्त वाम
तन्त्रान्तर में कर गिरा-ध्यान —
खोलन लग पुस्तक नवीन
श्रुति-सुख प्रवीण श्रोता अधीन

प्रकटा पुष्पित पाण्डित्य प्रखर
कीर्तित काव्यावृत्त विद्याधर

यश-व्याप्त चतुर्दिक सान्ध्यकाल
उतरा मन पर मानस-मराल
विष-हीन हुए कटु तिमिर-व्याल
अभिषिक्त असमय-अन्तराल

शारदा-समावृत पक्षिमता
मातृत्व भाव में स्थिर ममता

लहराए जब पुष्पांशुक पट
आए निज गृह फिर बाणभट्ट
सर्वोच्च उपाधि मिली नृप से
ईर्ष्यालु चित्र जन-मन हुलस

अभिनन्दन-वचन हुए विविध
झुक गए वृद्ध विद्या-वारिधि

मल्लिका मुखर ज्यों विधु-विद्युत्
भर अंक-पाश में नूतन सुत
वह ताक रहा स्मित टुकुर-टुकुर
बिम्बित प्रति बिम्बित नभ-मुकुर

दिव्याम्बर पर दुग्धाभ्रगाप
दृग-दल मखमल तैलाक्त कश

अंगुलि-संस्पर्शित शिशु-कपोल
मृदु मुख पर चुम्बित प्राण-बोल
सुख-स्नात पितृ-हुलस शीतल
स्फटिकाद्रि-शृंग ज्यों चन्द्रोज्ज्वल

नासिका पकड़ झुल झुल विकम्पित
कुसुमित थप्पड़ से चकित विस्मित

बिम्बौष्ठस्मितिकौसुम-फुलझड़ियाँ
झिलमिला उठीं लोचन-कलियाँ
आनन्द प्रसारित शिशु-विलास
चकित लालायित बाहुपाश

रह रह हिल्लोलित वक्ष-हार
स्तनातुर क्षुधाकुल कुमार

निशि में नयनों की नम्र बात
गत उपाक्रम की अप रात
वातायन पर प्रकम्पित विहान
कूजित पिक-शासित स्वर-कृपाण

टिटि-टिटिटि प्रमोदित पुच्छी-गण
सारिका-विलोड़ित उषा-रंग

पग-पग निज भू पर विमल बाण
शोभित कुसुमित बादल-वितान
शोणित सक्त पर मुक्तावल
शुभ्रायु-सुलभ गभीर अतल

मन प्राणमुखी तन कर्मलीन
श्वासों पर सौरभ समासीन

इस पुत्र तरुण नित छन्दायित
पतङ्ग प्रतिमा आश्चर्यचकित
'भूषण में शास्त्रोचित प्रवाह
उद्भासित उर-उज्ज्वल उछाह

हो रहा अनोन्मन हृदय-हवन
परिमा-गर्भित रस पल्लव पल

सप्तदश सर्ग

वैदिक आत्मा की इन्द्राणी रेखा अमौन
ध्वनि पूछ रही प्रति ध्वनि से तुम भिक्षुणी कौन ?
क्यों बुद्ध वेश ?

भारत की काव्य-कला में क्यों गैरिक समय ?
अन्तर-रहस्य-कम्पित छवि क्यों आनन्द-अभय ?
क्यों दमन-क्लेश ?

प्राणोत्तर-मनश्चिन्तन में तर्जित स्वर अशान्त
एकात्म-कम्पित चेतना दग्ध श्रीवर्ण भ्रान्त
दुर्भर प्रहार

अन्तर्वेदिकता ऋद्धि-एकता छिन्न भिन्न
असम्पर्की भस्मगर्भी मूर्ति क अपूर्ण चिह्न
अवरुद्ध द्वार

सोमोपयोग स क्षीण तीक्ष्ण ब्रह्मास्त्र-शक्ति
सुर-शासन के अक्रिय विलास में असुर-भक्ति
सम भाव व्यस्त

धन-वर्ण-महत्ता स्थापित ज्यों-ज्यों क्रमजात
निकला दर्शन-ज्वालामुख स चिन्तन प्रपात
श्रेष्ठता ग्रस्त

जागा सहिष्णु द्विज-मनभूमि फिर एकबार,—
जब हुआ शून्यमय नागार्जुन-अभिनव प्रसार
संस्कृति विकसित

जाग्रत विकास-संगम पर नव हिन्दुत्व सबल
सब आर्य-द्रविड़-शक-शबर किरात अटूट धवल
तन मन गुम्फित

काव्यांकित गुह्य ज्ञान सामासिक भूत भाव
कम हुआ विष्णु-ब्रह्मा शिव से बौद्धिक तनाव
रसमयी दृष्टि

साकार तीर्थ-संस्कार-ऐक्य-आबद्ध गात
सम्पूर्ण वन-दर्शन-विज्ञान-आत्मसात्
अवतार सृष्टि

संस्कृत-मंदिर में स्थापित अक्षय-गायन
भारत शास्त्र पौराणिक, गीता रामायण
स्थिर हृदय पुञ्ज

गति-सिद्ध कला-कौशल परिपूरित गुप्त-काल
भारती-चरण-अर्पित साहित्यिक स्वर-मराल
स्मित विभा पुञ्ज

स्वाध्याय-साधना से नव शोभित उपनिषद्
वाल्मीकि-व्यास के आर्ष-मूल में दीप-दश
वाणी वसन्त

बर्बर यज्ञों में आंगिरसी आहुति पुनीत
संस्कृति-निष्ठित परमाणु-ज्ञान भू-तत्त्व-गीत
अर्थपूर्ण मन्त्र

संचित धर्म-जल-थल में निर्मित महासिन्धु
निवृत्तोद्धार स मम त्रिवर्ग गतिमय अपंगु
संतुलित धर्म

त्रिविधा में केन्द्रित महात्म्य-आनन्द-किरण
अग्रज भूमण्डल पर नूतन सांस्कृतिक चरण
परिव्याप्त मम

लोमशी दृष्टि स लक्ष पौराणिक सृष्टि-विजय
बौद्धिक रेखा वैज्ञानिकता करती सञ्चय
क्रमबद्ध सृजन

शंखासुर का सागर-तल तक जब वेद-हरण
मन-मत्स्य-शक्ति से ज्ञान-सलिल का भार वहन
तम-दैत्य-ग्रहण

ज्ञानारम्भ-सिन्धु-मथन-मन्दर जब निराधार
स्थिर कूर्म-पीठ पर आश्रित मन-मृत्तिका भार
रत्नोपलब्धि

प्रलयार्णव में डूबी-सी जब गरीयसी
वाराह-दन्त पर हुई प्रतिष्ठित भू-कलशी
संकुचित उदधि

जब व्याप्त हिरण्यकशिपु-दानव-ममता अधकार
पाषाण-कारा में स्तंभित नरसिंहावतार
यु ग प्र ह्ला दि त

भूपति बलि-सम्मुख वामन-पग-विस्तार प्रसार
आकाश घोषणा यही कि ईश्वर-शक्ति अमर
आ त्म सा क्षा वि त

पशु-बल-विनाश-हित परशुराम क्रोधित प्रहार
रामावतार म शील-सभ्यता-स्वाधिकार
त प त्या ग रा ग

कृष्णावतीर्ण से अनासक्ति जग-कर्म-युद्ध
मानव महानतम असुर आचरण के विरुद्ध
स म हि त आ ग

हिंसा शोषण को अनाचार से युद्ध दूषित
भू पर करुणा-श्रद्धा प्रभाव आश्चर्यचकित
जय शान्ति विजय

सम्यक-भावना का जीवन-पथ में विकास
प्रियदर्शी से कनिष्क-युग तक अक्षय प्रकाश
मा न व मि म य

प्रामेय कल्कि-गण-गरिमा समता-सिद्धि-हेतु
जग-जनपद पर निर्मित होंगे मनुजत्व-सेतु,
अ भि रा म स फ ल

म थन-विभेद कड़ियाँ धर्ममय भ्रष्ट प्राय
जन-युग-भविष्य में ओझल सर्वोचित उपाय
भू स्व र्ग स फ ल

श्रम-साम्य-सुधा पीकर पनपें गणमय विचार
अधिकाराम्बुधि से निकल प्रतिमा रत्नहार
मम सब प्रकार

एकतापाश में बँध विश्व-मानव समस्त
देख धरती नित उचित न्याय का उदय-अस्त
हो मन उदार

सागर-तट-नारिकेल-वन पर ज्यों सुधा-धार
रेखा के मानस में कल्याणी उर प्रसार
विभु आर पार

आकाश-सुशोभित ज्यों प्रभात में ओम्कार
वदिकता में अमिताभ चेतना की पुकार
रे, बार बार

ज्यों धर्म-समन्वय स विचार-विम्बित विकास
रेखा करती अन्वेषण समता का प्रकाश
उन्मुक्त मन

दूंधली देह क स्नेह-सत्य का समाधान
केवल विदेह ही नहीं मूर्त मानव-विधान
सम-सिद्धि तन

सीता से ज्यों गीता आगे त्यों प्रश्न और
तीर्थंकर और तथागत भी कालाभ्र-चोर
पूजित नवीन

अब गण-तन में मन-मनुज-दिव्यता का प्रवेश
होगा सम्पन्न समाज मांगलिक एव देश
शिव सृजनलीन

दार्शनिक काव्य-धारा-सी रेखा आशामय
लिख देती प्राण-तरंगों पर जीवन की जय
ज्यों काव्य छन्द

ढूँढती सत्य ज्यों करुणापूर्ण कोमल कविता
मन के झुरमुट में कुसुम-प्राण-रत नव सविता–
कर नयन बन्द

छन्दान्तरिक्षिणी रेखा सम्प्रति काव्य-धीर
भारती प्रौढ़ आत्मा-क्रीड़ित अभिनय-शरीर
भावना-धीर

ज्यों कालपुरुष में प्रकृति-वस्त्र ऋतु-चरण-हरण
जीवन-दर्शन में सदा चमत्कारमय परिवर्तन
चिन्तन गभीर

भावाम्बरी –

अम्बुधि पर ज्यों आवेगपूर्ण तैरता पवन
हिल-हिल उठता हिलकोरों से तरणी का तन
ना वि क ड ग म ग

चन्द्रिका-रन्ध्र में रेखा करती प्राण-ध्यान
वाणी में ज्यों गुंजित विराट् का ब्रह्म-ज्ञान
अ नु भ व अ ग म म

ज्यों कवि से कविता भिन्न एकता सत्यहीन
पानी से पृथक दुग्ध में ज्यों रह सके मीन
स्थिति वही आज

कल्पिकाव्य-सृष्टि ज्यों द्वन्द्व-व्याप्ति से विभा-रहित
मन आत्म-कला समझा केवल आनन्द-सहित
पु ल कि त प्र सा द

ज्यों मुकुलवयस्का नाग-सुता-अंशुकी लास
रेखा के सुधि-वन में अतीत-उल्लास-हास
वातास - गत

मन-उदयन-मुख में वासवदत्ता-मधुर कथा
भूली भूली-सी प्रीतिकूट की मधुर व्यथा
वह निशा अथ

सिकता पर सोकर अभय बाघ के संग बात
डुबकियाँ लगाती रही सोम में चन्द्र-रात
ज्योत्स्ना - प्रभात

भागती हुई हिरणी के पीछे दौड़-धूप
मृगया-पथ में ज्यों रूप-भूप-संगम-स्वरूप
दुखहीन गात

निशि-द्रविड़-नाट्य-मुद्रा में वंकिम भ्रू-कटाक्ष
मलिनी-संग ज्या माध्य अंक में गुप्त पक्ष
कलकल निनाद

स्वप्निल कल्पित क्रीड़ा में विविधा-निना-राग
नयनों में अमरावती रम्य सरसिज-तड़ाग
वारुणि प्रमाद

प्राणों में जिस दिन खिला फूल का छन्द एक
गल गया स्वयं ही मानस-गिरि का हिम-विवेक
कौ सु म अ न्त स्

श्वासों पर छाई कल्पवृक्ष-चकोपित-छाँह
अमरत्व-कुंज तक व्याप्त हुई उर्वशी-बाँह
रस-कलश दि व स

अनुराग ज्वाल-सी भा व-भंगिमा पूर्ण-घूर्ण
अन्तर-मंदिर का काल-विश्वकर्मा अपूर्ण
रि क्त ता स दा

जीवन-सीमा में ही असीम आनन्द-मय
जन्मान्तर में समय अतृप्त साधन समर्थ
वा णी दा स दा

शृंगार-सृष्टि में ही यमरव की मधुर वृष्टि
रक्षता-जुगुप्सा भरे भाव में दिव्य-दृष्टि
र स में र स न

आत्माभिव्यंजना-पूर्ण स्वप्न में सत्य-मय
ज्यों प्राण-सरोवर-पद्मपत्र पर शुभ्र हंस
मिलि में विमेद

टूटी जब अन्तर्लीन प्राण-तन्द्रा अकम्प
आभासित अक्षपाद-सा अन्तर्मना-सम्य
फिर भाव भंग

रक्षा के सम्मुख रुग्ण बाण प्रतिबिम्बित-किरण
रोता-रोता-सा आकुल-व्याकुल उन्मन मन
मूर्च्छित प्रसंग

ज्यों मृग-शावक भीष महाप्राणी का आँचल
छायाग्रह से तत्किंचित रक्षा हुई विकल
ज्यों मातृ स्नेह

राहुल ज्यों बुद्ध-निकट परुषता-हीन मौन
पूछता रूप से ही अरूप तुम कौन-कौन?
रे कहाँ गेह?

तब स रहा शाश्वत शतरूपा में विलीन
भूमण्डल में उड़ रही किरण-परमाणु-मीन
प्र ति प ल म मी न

कहती आत्मा होगा जब सकल विश्व-मथन
पाएगा मनुज असीम शक्ति का करुणा-कण
स त् स मी ची न

भ्रमहीन ज्योति का एक महा-उच्छ्वास जगत
अस्थिरता में स्थिरता का केन्द्रित अन्तिम मत
आ का श ए क

परि-व्याप्त अवनि पर एक मनुजता का वितान
होगा भविष्य में कभी विश्व-संस्कृति विहान
भा स्क र वि ष क

अन्तर्वर्ती अभिलाषा नित जोहती बाट
होगी चरितार्थ किसी दिन मानवता विराट्
ज न मु क्ति-यु क्त

विभ्राट् धर्म-विज्ञान-कला होगी अभिन्न
उन्मुक्त प्रखरता म मानव-अन्तर अभिन्न
स म वि भा मु क्त

अष्टदश सर्ग

कैलाश के तुषार-पाश से आबद्ध
देव-प्रदेश के
कल्प-कुंजों में चिर स्थिर
स्वर्गीय काव्य-विलास-स्वप्न की—
रमणीय अन्तःपुर-वासिनी
हे कमनीय अलका-वधू !

आज से अनेक-अनेक शती पूर्व
रामगिरि पर आमन्त्रित आषाढ़ के प्रथम दिवस में
कामातुर कल्पना-हस्त से
लिखा था मैंने एक मेघ-पत्र
जिसे इन्द्र के काम-दूत ने
तुम्हारे कोमलतम करतल में अवश्य रख दिया होगा !

हस्ति-यूथियों की भाँति सूँड़ हिलाते हुए
श्यामल बादलों से मैंने कहा था
विरहाकाश के हे श्रावण-विमान !
उड़ते-उड़ते तुम्हें
अमरलोक में उस उद्यान भवन में जाना है
जहाँ शिव-शिखर से छिटकती हुई चान्दनी
खिलखिला कर कंठालिंगन करती है सुर-समाप का।

व्योम-मार्ग पर तुम्हें उमड़ते घुमड़ते देख
प्रवासी-पथिक-प्रियाएँ
घुँघराले बालों को ऊपर फेंक-फेंक कर
प्रिय-मिलन-कामनाएँ करती हुई
अनायास तुम्हें देखेंगी टकटकी लगा कर।

उस समय चातक-संगीत-लहर-पथ को
पार करती हुई बलाका-पंक्तियाँ पहुँचेंगी तुम्हारे पास
प्रणयोत्सव मनाती हुई।

कमल-वनों में
सुनकर जब राजहंस तुम्हारे सुमधुर घोष
उत्कण्ठित चंचुओं में मृणाल-अग्रखण्ड का पथ-संबल ले-लेकर
उड़ेंगे तुम्हारे श्यामलता के संग-संग।

लम्बी यात्रा में विविध स्रोतों का जल पी-पीकर
कहीं-कहीं गोपाल कृष्ण के मोर-मुकुट-सा
इन्द्रधनुष की शोभा से चमत्कृत होते रहना
और,
जनपद-वधुओं के चकित भ्रू-विलास को देख कर
रुकना मत अरे मेघ-विहग!

उत्तर की ओर मुड़ने के बाद
आम्रकूट पर क्षणिक विश्राम करते हुए
विन्ध्य पर्वत के सानु-पुंज में नर्मदा से मिलकर,
फुल्ल कदम्ब मांगती हुई हिरणियाँ और
वन्य-गजों का मार्ग ले साथ-साथ
कहीं-कहीं
मयूरी-नृत्य भी रचना तुम!

फिर दशार्ण देश के
करकी और जामुन-वन को पार कर
विदिशा की वेत्रवती नदी से प्यास बुझाना
और निचल पर्वत पर बसेरा के बाद
यूथिका-वन में फूल चुननेवाली वनिता-मुखश्री पर
किंचित छाया करते हुए आगे बढ़ना।

उज्जयिनी के शुभ्र प्रासादों की ऊँची अटारियों पर
विद्युत्-चकित रमणी-चितवन का
यदि सुख नहीं प्राप्त किया तुमने
तो समझना कि तुम ठगे गए।

स्वर्गीय अवन्ती की कलकलमयी शिप्रा में
गन्धाकुल सारसों की मन्द्र-मधुर ध्वनि भी सुनना सख !
और
स्वर्ण धूप में केशराशि सुखाती हुई रमणी-श्वासों की
सुगन्धि से अवश्य थकान दूर करना।
महाकाल-मन्दिर की सन्ध्याकालीन पूजा के अवसर पर
वारविलासिनियों का चामरनृत्य
और ताण्डव लास्य को देखना, मत भूलना तुम।

वहाँ रात्रि के निबिड़ तिमिर में
मन्द-मन्द जाती हुई अभिसारिकाओं की सरणि पर
चपल चपला की कनक-रेखा चमका कर
प्रकाश बिखराना
गुरु गर्जन से डराना मत उन्हें।

फिर वहाँ से उड़ कर
विविध पर्वत-कन्दराओं को पार कर
हिमालय की ओर मुड़ जाना
और,
सुरसरि के तीर पर

हिमाच्छादित सौन्दर्य-शृंगों पर उड़ती हुई—
किरण-कल्पनाओं से आलिंगन कर
देवलोक के द्वार पर
हिम-मर्मों को अवश्य सुनना तुम।

स्वप्नोर्वशी की जलकलि से मन्द-तरंगित
मानसरोवर में स्वर्गीय सुख प्राप्त कर
विविध विहग-कूजित
और मद-निर्झर से बिम्बित-विचुम्बित
देवदारु-वन की शोभा से मन को तृप्त करते हुए
दूर से ही देखना कैलास को।

और तब
सरलमसम अलका में पहुँच कर
ऋतु-पुष्पों से शृंगार करती हुई अनुपम वधुओं को देखना।

वहाँ जाकर मेरे सन्देस-पत्र को
कहीं गिरा मत देना बादल!
क्योंकि स्वर्ग में लोग सब कुछ खो देते हैं।

कुबेर भवन से उत्तर की ओर
गुच्छ-गुच्छ फूलों से आच्छादित
मन्दार वृक्ष की छाया में मेरा गृह है।

मराल और मौलश्री से सुशोभित क्रीड़ा-शैल पर
कंकणधारिणी मेरी प्रिया
मयूरांकित सन्ध्या में
मेरी प्रतीक्षा में छवि-हीन-सी हो गई होगी।

मेरी प्रियतमा छरहरी देहधारिणी
मुकुल कुसुम-सम अध विकसित यौवन
बिम्बाधर प्रकोष्ठ में नुकीली दन्तावली
क्षीण क्वणित कटि-किंकिणी
चकित हिरणी-सी चपल चितवन
गहरी नाभि
श्रोणी-सभार से अलसित
झुकी-झुकी स्तन-भार से वह
प्रथम कृति ब्रह्मा की!

मलिनवसना दीन विरहिणी
अश्रु-सिंचित दृगों के सम्मुख
अंक में वीणा लेकर स्वर-सिद्ध तारों पर
गूँथ रही होगी विस्मृति-विमूर्च्छित नामांकित रागिनी-हार।

बिछोह के प्रथम दिन में
किया था वधू का जो वेणी-शृंगार—
गुँथी हुई बालियों में
मैं ही उसे खोलूँगा विघ्नोपरान्त।

हे जलदूत!
स्वप्नालिंगित प्रिया
सुधि-बाहु-वल्लरी में अपने प्राण-पति को भर कर
नींद में किंचित् कहीं आ गई होगी वह
तो रुक जाना तुम।

और फिर मधुर-मधुर गर्जन कर
शीतल समीर में अमृतबिन्दु का फुहार बरसा कर ही
जगाना उसे

ताकि मालती की नूतन कलियों-सी वह
विस्मयभर लोचन से तुम्हें देखे —
पल भर कुछ कहने की इच्छा प्रकट करे
और तुम मेरी ओर से प्रेषित पत्र

अगणित वर्ष बीत गए।
बादल ने कुछ भी उत्तर न दिया
विरह-मिलन के संगम पर
मैंने अमर कर दिया उस यक्ष को जो निष्कासित हुआ
कल्पना की रहस्यमयी अलका से।

किन्तु
मेघ-पत्र का प्रत्युत्तर आजतक नहीं मिला मुझे।
तब से मेरी पंचचितिक भास्वती काव्य चेतनाएँ
योगस्नात हिमालय के इस पार और उस पार—
प्राण-अपान सूक्ष्म तत्त्वों में बिखरती ही रही।
किन्तु दिक्-रहित आत्मा की लौटी हुई स्वर-लहरी
लौट नहीं सकी।
क्या मेघ-पत्र में मैंने उत्तर भी लिख दिया था ?

प्रसादावनता पार्वती की भाँति
कैलास-विलास प्रासाद के स्फटिक-सोपान पर
स्वप्नालकृत इच्छानुसार
चढ़ती-उतरती हुई
हे महाश्वेता कादम्बरी-कामिनी!

निस्सीम नक्षत्र-शोभिता यामिनी-गवाक्षपथ में
निद्रित चन्द्रमणि की मसृण-दन्ताग्र-प्रस्फुटित
मन्दाच्छादित सरोजवदना प्रभातसुन्दरी की
दन्त-किरण से झरती हुई
हिम-यूथिका-दर्पित भावभूमि पर
भ्रमर इन्द्रायुध की गन्ध-गति से
अनायास मैं वहाँ आया
जहाँ देव-भाषा के स्वर्गोद्यान-द्वार पर
अतुल रूपा-रमा के किन्नर-मिथुन ने
अधिकाधिक आगे बढ़ कर
तुम्हें देखने को—
पथभ्रान्त हिरण-सा बाध्य किया मुझे।

कल्पना की अणिमा-दृष्टि के शब्द-बाण से
अमिट अभिनव काव्य-सौन्दर्यारण्य में
शिव-ध्वनित शास्त्रीय संगीत की भाँति
कला-मृगया की भुवनमोहिनी छवि-छटा
प्राण-पत्रलता पर अंकित करता रहा।

अतीतकालीन काव्य-शिल्प के अजन्ता-पथ से विभिन्न
सुर-तार-बिम्बित बोल-ताल-तरंगित—
हेम-हास-प्रक्षालित मार्ग पर चलते-चलते
चतुर्मुखी महादेव के मणि-मन्दिर से
हस्ति-दन्त-वीणा पर गाई गई दूरागत स्तुति-ध्वनि
के मधुरतम माधुर्य-मय-मृग से प्रदर्शित मग पर ही
कैलास ने मुझ से पूछा
कालिदास की काव्य-सीमा लाँघ कर
कहाँ जा रहे हो तुम?

कोमल मधुमास के मलयमारुत से मन्द-तरंगित अनंग-ध्वज-सा
मानसोद-सरोवर-तट की भवन-सुन्दरी की बाहुवल्लरी पर
आच्छादित अर्ध विकसित पुष्प-गुच्छ को भाव मृगाघात से
चाँदी के पानी में हिलते देख कर
क्षणभर
नव यौवना शकुन्तला की कल्पना रमणीयता की भाँति
मेरी उत्तरोन्मुख मुस्कान चुप-सी रही।

पर मुझे कहना ही पड़ा
कि इस बार
आत्म-लावण्य के अमृत-पंक में
कमल दो ही काम-कमल खिले!

ताम्बूलवाहिनी चकोरिका-तमालिका-जैसी
बड़ी-बड़ी आँखोंवाली
गन्धर्व-गायिका के आश्रम प्रस्थान से
मदिरा-रस में भीगे-भीगे
और किरीट-किरण से सूखे
लम्बे-लम्बे लहराते सुगंधित बाल
जब उड़ते-से कपोत में क्षण भर के लिए उलझ-से गए,
नव पल्लवित शाल्मली वृक्ष की एक झुकी डाली पर
पंक्तिबद्ध बैठी हुई हरी-पीली पाँखोंवाली पहाड़ी सारिकाएँ
एक अपूर्ण श्लोक रचती हुई
सलिल-दर्पण देखती-देखती
दूर-दूर-दूर तक उड़ कर
फिर वहीं आकर चहचहाने लगीं।

श्याम-आसन पर प्रतिष्ठित कालिदास-कलाकृति-सी
शास्त्र-स्कंध पर कविता-कलश उठानेवाली—
महाकाल-मन्दिर में ललित लास्य रचने वाली उज्जयिनी—
के कथा-कुमार की चित्र-दृष्टि से
त्रिपुण्ड्रधारिणी तपस्विनी नारी के स्वभाव में
सहज वीणा के वायुमण्डल में
केतकी-कुहलिका देख कर
ऐसा लगा कि वह इन्द्र से पूछ कर
पवन-वधू के निमित्त व्यंजन-साधना में तल्लीन है।

हिमालय में हिरण-गति में भागती हुई निर्झरिणी-सी
उस गीत की अन्तिम श्वास -
देव-चरणों को छूकर
दिव्याकाश-गंगा-सी मग्न हो गई
तब तुमने मुझे देखा है महादेवते!

तपस्या-सम्पन्न किसी उपेक्षित महाकवि की भाँति
युग-दैत्य के मदाक्त वक्ष पर अमरत्व के अमिट चरण
ज्यों वर्तमान की सीमा पर भविष्य-पूजित होते हैं
संस्मरण के अतीत-पवन वसन्त से लिपट कर चले गए!

तब हे बिछुड़ी-बिछुड़ी यक्षिणी मर्म वधू!
तुम्हारे स्वागत-संकेत के अभ्र-जाह्नवी-उद्गम तक
मैं पूर्व परिचित पाहुन-सा
कुछ कहता-सुनता अग्रसर होता गया।

स्फटिक गुफा तक पहुँचते-पहुँचते
गैरिक गिरि से झरझराते झरनों के सदृश
प्रगाढ़ रक्तवर्णा सन्ध्या
कमल-वन की निद्रित झिलमिलाहट—
के रेशमी वस्त्र को समेट कर
आकाश-अवतीर्ण गजगामी अन्धकार में
धीरे-धीरे-धीरे छुप गई!

और तब
अक्षमाला पर लगी हुई समाधि में
सन्ध्योपासना के पश्चात्
तुम्हारे चन्द्र-कपोल पर प्रवाहित नयनामृत को
प्राणांजलि में भर कर आत्म-कलश में रख दिया मैंने।
किन्तु पुरातन पीड़ा की स्मृति-लहर उठती ही रही
क्योंकि
संसार में वियोग ही संयोग का तप है!

अगस्त्य ऋषि के समुद्र-पान की तरह
कैलास पर उदित ज्योति-सिद्ध सूर्य ने
ब्राह्ममुहूर्त में ही तिमिर-पारावार पी लिया!

उसी समय
पृष्ठ के पुष्ट स्वर्ण मेघों से बिम्बित तड़ाग—
की निकटवर्ती उपत्यका से युगल नीलकण्ठ पक्षी
चञ्चु-पुट में कीटाहार लिए
शिरीष वृक्ष पर नहीं बैठ कर
जब रक्ताशोक पर उतरे
कि युवावस्था में भ्रमणोपरान्त प्रीतिकूट प्रत्यावर्तन की भाँति
हम हेमकूट आए।
तब हे काव्यमोहिनी कादम्बरी!
पुनर्दर्शन की उस रोमांचित वेला में
तुम्हारे लाल-लाल होंठ
लम्बी नासिका
पूर्वालिंगित ग्रीवा
और विभ्रम-विलास देखकर
मैं आर्य-सौन्दर्यकोश का एक-एक रूप-शब्द भूल गया!

तभी
तुम्हारे हिलते आभूषण निरख
और मणि-नूपुर-कंकण-झनकार सुनकर
सुन्दरता-सागर पर विचलित ऊर्मि-माला से
कामना के सप्तर्षि-वन में यज्ञ-होम करने लगा मैं!

स्मरण है
मधुरता की मञ्जुलेखा का पग प्रक्षालन
सागरिका मृणालिका निपुणिका कदलिका प्रभृति का
स्वागत-समापन

स्नेह-केयूरक का निपुण वीणा-वादन
मणि-दर्पण में सलज्ज नयनों का नूतन अभिनन्दन !
महाश्वेता के अपरिचित आग्रह से
भारतीय वधू की प्रथम रति रात्रि की भाँति
लज्जा-जाल में यौवन की अव्यक्त जय करती हुई
आकांक्षा-अंगुलियों से तुमने मुझे
जो प्रणय-ताम्बूल दिया था
उसकी उच्छ्वसित सुगंध
श्वासों में स्वर्ग-संगीत भर भर देती है !

प्रमदवन में क्रीडा-पर्वत के रत्नमय प्रासाद में
चक्रवर्ती सम्राट् के युवराज अतिथि-सा
जब मैं महामत्व-शय्या पर लेट गया
और तुम
कल्पना-सौध से मुझे निष्पलक दृष्टि से देख-देख कर
दिन में ही काम्याभिसार का स्वच्छन्द अभ्यास करने लगी
तब मैं तुम्हें
किसी के स्कंध पर हस्त रख कर मात्र झुकी-रुकी ही नहीं
अपितु
वक्ष-कमल को पद्मालिंगन करते देख
स्वयं संकुचित-सा हुआ था !

विलासवती उत्कंठा से प्रेषित
संश्लिष्ट स्वप्न की असंदिग्ध कलि-सहचरी पत्रलेखा को
हेम प्रासाद में छोड़ कर जब मैं
कृपाण की एक ही चोट से कटे ताम्र-वृक्ष-सा
मणि-भाव-परिवर्तन से अलंकृत हुआ
देखा
कि कल्पना-प्रसूतिका-गृह-द्वार पर :

वन्दनवारों के बीच-बीच में लटकी हुई कनक-घंटियाँ
शरद-वायु के मन्द स्पर्श से हिल-हिल कर
टुनटुनाती हुई सहज स्वप्न-पुरन्ध्रियों के संग-संग
चित्राह्वान कर रही हैं!

गोबर, गेरू और कपास-पुष्प से निर्मित अल्पना चक्र पर
चिपकाई हुई चित कौड़ियों के मध्य में
नवीन भाव-जन्म की प्रज्वलित दीपाभा से
मंगल्यगृह-श्री गर्भ-गोपिमा प्रकट करती हुई
शिल्पी-श्री अवतीर्ण हुई!

जब मैंने सृजनमयी की चम्पक कान्ति देख कर
पिंगल-रहस्य-ग्रंथि के अनायास सृजन की
बालात्-जिज्ञासा व्यक्त की
मेरे मन का चापलायन शुक
बृहस्पति-पिंजर से उड़ कर
किरात-कामिनी के इच्छानुसार
विदिशा-प्रासाद में कथा-विस्तार करने लगा।

एक बार फिर
कैलास व धवल-विमल स्कन्धावार में
हर्षोत्सव मना कर
जब मैं स्थाण्वीश्वर पहुँचा
तब अमरम्मा परिचारिका बोली
रत्नलेखा को रंगभिक्षा अधिक नहीं मिली महाकवि!

और इस समालोचना की लहर पर
लहराती हुई आदिकवि की उर्मिला भी आई,
अमिताभ-पत्नी भी मुस्काई
किन्तु
मुझे कहना ही पड़ा कि सृष्टि की सर्व शिल्पकला की भाँति
कादम्बरी भी अपूर्ण है अपूर्ण है देवि!

स्वर्गीय काव्य की प्रतिक्रिया से
भविष्य के भू-गर्वित कवि
उपेक्षित मूर्त्ति के असंख्य गीत रचकर
अभाव में भाव भरते रहेंगे अमरसते!

भविष्य-भाषा के स्वत्वशास्त्र से निकलनेवाली
हे बन्धनहीन गण-वाणी!
छन्द-रुद्ध काव्य के घूर्णित भूमण्डल पर
कभी होगा प्रवहमान शब्द-प्रसव
उन्मुक्त सृष्टि के उस असह्य आरम में
संभव है उपेक्षा और उपहास के वज्रनाद का—
अर्थहीन अनर्गल प्रसाद स्रष्टाओं को प्राप्त हो
किन्तु
व्यष्टि-वीर की उत्तप्त श्वास की गत्यात्मक झंकार
काल-संशोधन की चित्रार्पित अवस्तता को छूकर
दसों दिशाओं में परिव्याप्त होगी ही।

प्राचीनता के म्लान रक्त-शून्य नयन में
होगा जब विद्युत्भरी में अश्रु-कोलाहल
उस समय हे प्राणाम्प्रोक्षित काव्यसुन्दरी!
जागरूक मौलिकता के मनोहरण हाव-भाव के
उष्ण पाश में समस्त पदवियों को भर कर
भद्र वाग्बाण अवश्य चलाना।

अतिशयोक्तियों और अनुभव-हीन आडम्बर के
आकाशीय घटाटोप में श्लोकत्व की सीमा-रेखा मिटाकर
स्वयशक्ति की आत्माभिव्यक्ति से
निर्विराम् साधना का
सत्यांकित प्राण-वाक्य लिखना मत भूलना।

उस समय
तटस्थता की इन्द्रधनुषित तरंगों पर
समालोचनाओं के लोहित जलयान
एक जीर्ण चुम्बक-बाहु से
तुम्हें अपनी ओर खींचने का रमा-प्रयोग करेंगे
पर
हे मनस्विनी मुक्त कविते!
साहित्य में गत्यावरोध उपस्थित करना भी तो—
एक वैदिक पाप है
तुम विविध वर्णा तूलिका-कला से
निरीह भाव-गुफाओं में
आनन्द-अजन्ता की रचना-श्री से
समस्त विश्व को मोहित करना।

क्रूर मनुष्यों के आघात से
लिखेंगे जो प्रतिक्रियात्मक काव्यालोक
उनके एक-एक पुष्प-पत्र पर
प्रक्रिया की खद्योत-ज्योति भर कर
कुत्सित रहस्य का उद्घाटन करना
तुम्हारा प्रमुख कर्तव्य होगा

क्योंकि यह सनातन सत्य है
कि काव्य एक अद्भुत द्युति-आलोक है।
शाश्वत कछारों की किरण-लिपि को
प्रत्येक युग का ज्वार पढ़ता है
और सौन्दर्य-संकेत के माध्यम से
प्रभाहीन चित्रों पर पुनः रंग-लेपन की—
प्रेरणाएँ भी वही देता है।

यह असत्य नहीं कल्पनादृष्ट!
कि रस-शृंगार ही काव्याङ्गार है
नीरसता के शिलीभूत भूतल पर अङ्कुरित भाव के पौध
यक्ष्मा रोगी की भाँति सत्वर कराहते रहते हैं
ओषधि पीकर भी झूमने की शक्ति कदाचित् नहीं मिलती
पर
मिलाती हुई अतुष्टि की टीस में
तिक्त मधुरता का उपहार मिलता तो है!

अभी तक काव्यों में
राजधर्म की ही ध्वजा लहराई
द्विजता के अहंकार से आर्यत्व की असीम अभिवृद्धि हुई
किन्तु
धरती के शूद्रत्व की उपेक्षा भविष्य में नहीं होगी छन्द
प्रियतमे!

रक्त नदी के किनारे
हरी-हरी घास पर
दीन-हीन आदिवासियों-सी वन-तरुणियाँ

वेणी में श्वेत फूल खोंस कर
जब जल-दर्पण में अपनी श्यामवर्णा मुखश्री देखेंगी
और, भाद्रपदा में कड़कड़ाती हुई बिजली-सी खिलखिलाकर
हीरक-जड़ित नासिका-नोंक को
किसी अधीर काव्य-पुरुष के चरणों पर
लजा कर झुका लेंगी

और फिर
श्रृंगार की डोंगी पर चढ़कर कभी उस पार,
कभी इस पार
कभी मध्य धार में शाकुन्तल-हस्त में
मांसल-पतवार लेकर
तिरस्कृत मिट्टी की भाषा में भाव भर देंगी
और
वनस्थली-गिरि-गोद से आती हुई हवा की—
ग्रामीण-गंध लेकर
जब पलाश-स्कंध पर चढ़ती हुई मालती-लता की भाँति
समस्त प्राणों पर अपने आपको झुका देंगी

और आत्म-शिल्पी
कैन्वास केशराशि पर, प्रेमांगुलियों से
स्नेह-सौन्दर्य का स्वप्न-लोक रच देगा
तब हे धूम-दुकूलधारिणी मगोते!
प्रबुद्ध पाठकों को श्रुति-सुख की शेफाली-सुरा पिलाकर
ग्राम-भारती के धर्म-मन्दिर में धीरे-धीरे से जाना।

जहाँ शरदेय इन्दु के अधर से झरती हुई पिय ज्योत्स्ना से
धरती को धोकर
दिवस में खिलने वाले फूलों को रोपना
और, मनुष्य की महामुक्ति का माधुर्य बिखराना।

क्षणिक प्रभुत्व के दर्पित दम्भ से मत्त प्रमत्त—
विनयहीन राजनीतिज्ञ
अपने अहंकार-वश से
कला-शिल्पियों का करेंगे जब मर्यादा-भंग
हे निर्मले वीणावादिनी!
अप्रतिष्ठा के कालकूट पीनेवाले अपने सभी शिव-साधकों को
कम से कम आध्यात्मिक आश्वासन अवश्य देना
और,
चाटुकारिता के तृण को छाँट-छाँट कर
राजपुरुषों के मिथ्यामृत सिक्त दस्यु-दन्तों को
घृणित हस्त-कौशल से खोदने वाले—
साहित्य भ्रष्ट लोभियों को
बार-बार स्खलन-यातना देकर
कुछ प्रमाद अवश्य कम करना।

यह सर्वविदित है
कि शासन का अधिकार-दीप
अपनी चतुर प्रभा बिखर कर
चिर निद्रा में विलीन हो जाता है
किन्तु
स्रष्टा के अमर शिल्पियों की कला-वर्तिका
क्षीण भले हो जाए
पर बुझ नहीं सकती!

यदि राजतंत्र के कुहरापूर्ण प्रवाह में
काव्यर्षियों के उचित मूल्यांकन में व्याघात होने लगे

तब हे आत्म-त्रिपथगे!
कठोर काल के क्रूर नयनों में
सहृदयता की प्राचीन अश्रु-धारा भर कर
उसके अशोभन दर्प को अवश्य मिटाना
अन्यथा
अनासक्त साधना की आत्म-रेखा
सिकुड़ कर शून्य में विलीन हो जाएगी!

ईश्वर न करे
कि भविष्य का कोई कवि क्षामनात्मगत रहे
और छन्द के अस्तित्व में अपने मुक्त वक्ष को बंदी बना ले
क्योंकि हे कविते!
काव्य के काल-सिंहासन पर बैठने के लिए
आत्म-निरंकुशता अपेक्षित है—अनिवार्य है!

एकोनविंशति सर्ग

अश्विनी ज्योति बुझना न अभी
पीयूष प्रभा देती रहना
श्वासा प्रकार की लहरों में
रश्मिमय रहस्य-गाथा कहना

मत कोप पराक्रम-प्राण-चित्त !
उद्दीपित झंझावातों में
चण्डिका-भग्न-ताण्डव रञ्जित
अन्तिम माया की रातों में

आकाश-कुसुम झरना न अभी
वदिक सुगम बिखरानी है
आत्मा की रस-तरंगों पर
तिरती कलकाम कहानी है

समन सींझी सज अज-प्रमाद
प्राम्य प्राण में कर प्रवेश
सौन्दर्य-स्रोत की सीमा से
अब रम तमातम-अगम देश

एकोनविंशति सर्ग

साधना-विहग उड़ना न अभी
कुछ गीत शेष हैं श्वासों में
भरना है कलरव अभी बहुत
कल्पना-केलि-उच्छ्वासों में

रुकना न अभी मेरे प्रवाह
उत्तुंग शृंग से झरना है
अन्तिम पथ के पाषाणों से
अब अन्तर-बल से लड़ना है

सारस्वत पूजा शेष अभी—
लक्षित संस्कृति के मन्दिर में
इच्छित निर्झरिणी कोमल-सी
स्वर-भावदेश के हिमगिरि में

विश्वास-वीचि के वृन्तों पर
आत्मोत्पल अब तक खिले नहीं
भूमा-वसन्त के भाव भ्रमर
अन्तिम पराग से मिले नहीं

ओ मेरी अन्तिम प्राण-ज्योति
उर-पथ आलोकित कर देना
अन्तिम तट के हिलकोरों पर

कादम्बरि बाण अम करुण-अरुण
भीगी आँखों में लाली-सी
ज्योतिष के दृढ़ गणनानुसार
भाग्यवाली अँधियाली सी

अब प्राण-पूर्णिमा दूर नहीं
बीती यौवन की पमी रात
हिमकणिका की शीतलता पर
जाग्रत अन्तिम् हेमन्त प्रात

प्रतिभाशाली प्रिय सुत भूषण
आ गए मगध स्थाण्वीश्वर से
हो गए मुक्त कवि बाणभट्ट
अति कष्ट-पूर्ण पीनज्वर से

आदेश दिया फिर आने का
उद्‌ के हित प्रेषित किया गमन
आश्वासन दिया वधू को भी —
नयनों में बिम्बित शोण-सदम

दृग से ओझल जब हुआ पुत्र
स्वर्गीय मित्र का किया ध्यान
बिखरा कपोल पर एक श्लोक
रे काल प्रबलतम महाप्राण

है व्यर्थ गर्व जीवन-धन का
यौवन का अहम् निरर्थक है
मिथ्या न कभी विश्वात्म-बोध
निष्काम कर्म ही सार्थक है

प्रत्येक श्वास वन्दना-कली
प्रत्येक अश्रुकण अर्घ्य-नीर
जीवन ही है देवता दिव्य
पावन मन्दिर नश्वर शरीर

हो गई भूल मुझसे रे मन
तज ज्योति किया सौन्दर्य-स्नान
जो पाप-पुण्य से रहा दूर
मैं प्रीतिकूट का वही बाग

मेरे प्राणों के कलाकार!
जीवन-यात्रा हो रही शेष
तुम कह न सकोगे क्या अब भी
दृग से ओझल वह कौन देश?

गाने की इच्छा प्रबल किन्तु
स्वर ही होने को है समाप्त
हो रही अभी से ही नृप के—
नयनों में मेरी पीर व्याप्त

विस्मित न देख कर मुझ कृष्ण
कुछ सजल-सजल-से हो जाते
ममता की मोहक मिट्टी पर
ये प्राण बहुत ही अकुलाते

हैं घिरे प्राण के सभी द्वार
भूपति-पण्डित प्रतिहारों से
पूजा जिसकी हो रही सफल
अविरल वीणा-झनकारों से

करती है पूरी कादम्बरि
अतिशय संशय-कोलाहल में
खोजूँ कैसे मैं अमृताम्बर
रे काल-सिन्धु-हालाहल में

मानस-सीमा पर सघन शान्ति
ममत्व न स्यात् सप्राण गान
अन्तिम रचना शृंगार-हेतु
आकुल-व्याकुल-सा भट्ट बाण

मेरे प्रदीप बुझना न अभी
प्रालय ज्योति में जयति-नाद
गुंजित ममता का श्वास घोष
अब क्या प्रमाद अब क्या प्रमाद

इच्छावशेष इंगित अन्तिम
बसूँ दृग से दार्शनिक अमर
सम्राट् हर्ष के प्राणों में
स्थापित हो शाश्वत ब्रह्मस्वर

वात्स्यायन कुल का अग्रध्वज
फहर फहर मणिमय शिर पर
बरस अविरल चेतना-कुसुम
अभिनव भारत के मन्दिर पर

गाएँ स्थाण्वीश्वर उडुपति भी
फलाएँ सौख्य-सुतर्क-आस
मेरे जीवन में ही जागे
वैदिक स्वर से भारत विभास

हो अरुण विभा से दीप्त देश
उत्तुंग हिमालय हो अरुणिम
प्रतिपल लहराता-सा समुद्र
जागरण-किरण से हो स्वर्णिम

ज्योतिल आत्मा का हो प्रभात
मानवता के भूमण्डल पर
व्यापकता के उदयाचल से
फूटे प्रकाश का निर्झर-स्वर

संगमरमर के समतल भू पर
ज्योत्स्ना-सरिता ज्यों बहती-सी
क्षीरोज्ज्वल कवि की अभिलाषा
नृप-अन्तर में कुछ कहती-सी

आमोद-सरोवर-पुष्पों पर
ज्यों चन्द्रचूर्ण-कण झरता-सा
अन्तिम कविता का आत्म-अर्घ्य
हर्षित उर को तर करता-सा

कामना-महाश्वेता शिव को
अन्तिम संगीत सुनाती-सी
अन्तराकाश की वाणी में
झिलमिल-झिलमिल छवि भाती-सी

दार्शनिक मन का दृढ़ होता
संकल्प सत्य का लेता-सा
दिशि-दिशि के विद्वन्मण्डल को
आतुर आमंत्रण देता-सा

कवि बाणभट्ट के प्राणों पर
अन्तिम परछाइं पड़ती-सी
जीवन की अन्तिम घाटी में
चमकीली किरण उतरती-सी

अन्तस्तल के अरुणाचल पर
शिव की स्वर्गंगा आती-सी
आलोक-अप्सरी पुलिनों पर
नूपुर के बोल सुनाती-सी

मन की यमदेवी के मुख से
पूर्णिमा-सुधा-जल गिरता-सा
कैलास-कलि-कम्पित भरि में
कलहंस-कलाधर तिरता-सा

ज्योत्स्ना-सागर पर कुमुदमयी
कविता आलिंगन करती-सी
कामना-चकोरी हिम-तरु पर
शशि-मुख में चुम्बन भरती-सी

अन्तिम सपनों का दल अभी
अज्ञात सुरभि बिखराता-सा
धीरे-धीरे कल्पना लोक
कुसुमित धरती पर आता-सा

मत काँप प्राण की स्वर्णशिखा !
मधुरिमा अभी आन को है
कोमलता की कमनीय प्रभा
दृग-अम्बर में छाने को है

हे मृत्यु-मुक्ति ! मत हो अधीर
साहित्य-सुरा पी रहा प्राण
अन्तर-तरंग से निकल रहा
स्मित प्रभाच्छन्न काव्यात्म ज्ञान

संस्कृति-विलास रत उराकाश
अभ्युदित अतल में काव्य-धर्म
मस्तक पर अंकित काल-तिलक
अवगत प्राणों को कला-मर्म

विश्वास-विपिन में ज्योति-यज्ञ
श्वासों में निष्ठित अगरु-धूम
चहुँ ओर घोर अमरण झकोर
आकुल अन्तर्मन झूम-झूम

अन्तस्तल के अरुणाचल पर
शिव की स्वगंगा आती-सी
आलोक-अप्सरी पुलिनों पर
नूपुर के बोल सुनाती-सी

मन की वनदेवी के मुख से
पूर्णिमा-सुधा-जल गिरता-सा
कैलास-कलि-कम्पित सरि में
कलहंस-कलाधर तिरता-सा

ज्योत्स्ना-सागर पर कुमुदमयी
कविता आलिंगन भरती-सी
कामना-चकोरी हिम-तरु पर
शशि-मुख में चुम्बन भरती-सी

अन्तिम सपनों का देश अभी
अज्ञात सुरभि बिखराता-सा
धीरे-धीरे कल्पना लोक
कुसुमित धरती पर आता-सा

मत काँप प्राण की स्वर्णशिखा!
मधुरिमा अभी आने को है
कोमलता की कमनीय घटा
दृग-अम्बर में छाने को है

हे मृत्यु-मुक्ति ! मत हो अधीर
साहित्य-सुरा पी रहा प्राण
अन्तर-तरंग से निकल रहा
स्मित प्रभाच्छन्न काव्यात्म ज्ञान

संस्कृति-विलास रत उराकाश
अभ्युदित अतल में काव्य-धर्म
मस्तक पर अंकित काल-तिलक
अवगत प्राणों को कला-मर्म

विश्वास-विपिन में ज्योति-पद्म
श्वासों में निष्क्रिय अगरु-धूम
चहुँ ओर घोर अमरण झकोर,
आकुल अन्तर्मन झूम-झूम

विंशति सर्ग

नभ विमल बाण-इच्छाभिषेक
अन्तस्तल-बल बाणी विवेक
दार्शनिक आज आए अनेक
हर्षोत्सव

गैरिक वस्त्रावृत हुवेनसांग
दिङ्नाग-सदृश विख्यात-अंग
दशक में निष्काम प्रसंग
महिमा नव

उर्मिल उत्सुकता यथांकुरित
विस्मयता-माटी पन घूर्णित
द्युति-भाव भावित मन प्राण हरित
वासन्ती

पग-स्वस्ति ग्राम में स्मरण-गाथ
ज्यों कादम्बरी-कथा प्रबन्ध
छू रही मीमिमा नलस्कन्ध
दमयन्ती

भूषण-उडुपति ज्यों शुक्र-चन्द्र
मृण्मय राका अंशु-रश्मि मन्द्र
निर्माल्य-देह में स्नेह रन्ध्र
अङ्कुरित

सौगंधिक आकांक्षा अछोर—
शृङ्गारम माधुरी में विभोर
सरि में ज्यों शशि-लिपि-पठित मोर
घन-बिम्बित

चह-चह-चिह चिह-चुह-चुहित वात
कालिमा-सत्ता में लुप्त रात
ताम्रमुखी सुरभमुखी प्रात
पिक कूजित

प्राची-प्रांगण प्रस्फुटित व्योम
दिक्-गुहा-धूम में किरण-होम
स्वर्णोदित अरुणोच्चरित ओम्
ऋग्मंत्रित

सम्मान-समर्पित स्याध्वीश्वर
मौक्तिक बसन्त-विम्बित उर-सर
जिज्ञासा-स्वर म आत्म-अमर
सुर-सस्कृत

यह पथ-मन्दिर-विद्यास्थल में
उद्यान-नगर-तट-तरु तल में
शुचि सरस्वती-वाप्पित जल में
धन चर्चित

शुचि-दर्पण में राजर्षि-सभा -
ज्ञानोत्सव की महर्षि-विभा
आरण्यक आत्मानन्द प्रभा
दर्शनमय

विस्तृत विश्राम में सुख-उदय
निष्पक्ष प्रखर उपदश अभय
उर्वर अशोक-पुर-शान्ति-विजय
भारत जय

तपस्वी तीर्थंकर मनोरूप
मुनि स्थूलभद्र-सम्यक विमल
सदर्थपूर्ण अध्यात्म रूप
अति दुस्तर

धृतिवन्त कनिष्कोच्छ्वसित प्राण
श्री-शिथिल विगत हीनयान
प्रिय महायान सक्षम प्रयाण
सत्य रथ पग

विक्रमादित्य साहित्य-सचित
कवि रवि-छवि-हित हृदयानुरक्ति
पर-पद्मार्पित सांस्कृतिक शक्ति
युग हर्षित

सुरपति-सम सफल समुद्रगुप्त
वाणी-वैभव बल बुद्धि युक्त
स्वर-सागर-संगम नहीं सुप्त
नृप-अर्पित

साहित्यकार सम्राट् हर्ष—
करते प्रियजन से परामर्श
दिव्यतापूर्ण दार्शनिक वर्ष
कुसुमित मन

सेनापति सिंहनाद तत्पर
द्रष्टा-स्रष्टा-संग कृष्ण मुखर
कवि बाणभट्ट भ्रू भाव प्रखर
विस्मृत तन

प्रतिहारिणियाँ अपि-काय-व्यस्त
धीनता भाव में द्वैत हस्त
समुचित सात्विक सेवा समस्त
आश्रम-श्रम

स्वर्गीय मग्न रवि रस प्रधान
शिव म पगास्त ज्यों पचबाण
धारणात्मक सामग्री विश्राम
शिव निष्नम

आमन्त्रित अभ्यागत सुमुदित
मेघाम्बर में नक्षत्र उदित
चंचल चंचल मृग चकित-चकित
झिलमिल

पुष्पित पाषाणी दुर्ग-द्वार
तोरण पर मधुमञ्जरी भार
नवमी कलश मंगलोच्चार
पवमानिल

हसम-सरोज गंधित समीर
उत्फुल्ल रश्मि-शोभा-शरीर
गम्भीर धीर लोचन अधीर
कर्णोत्सुक

ज्यों-ज्यों सन्निकट महोत्सव-क्षण
परिमल-निधि भ्रान्त भ्रमर-सा मन
मुखमण्डल पर दृग-तितली-गन
मधु-स्पृक

शास्त्रार्थ-युक्ति विस्तृत विशाल
भव्यता यथा मणि-ग्रथित जाल
पाटल-प्रसून में ज्यों प्रवाल
धी-शोभा

नव रत्नालङ्कृत मुख्यस्थल
ज्यों इन्द्र-जाल में तड़ित-कमल
मुक्ता-माणिक-नीलम-द्युति-दल-
चन्दोवा

कनकासन पर विद्वन्मण्डल
सामन्त दूतगण मन्त्री-दल
सौरभ-युत हित हीरक-कुन्तल-
उच्चासन

सब राजरमणियाँ यथास्थान
ज्यों काव्य-योजनाबद्ध बाण
सर्वोच्च शृंग पर महाप्राण
सिंहासन

विधिवत् वाणी-वन्दना हुई
साम-गान अतिथि-अर्चना हुई
ज्ञानोत्सव की घोषणा हुई
श्री मुख से

मंगल मण्डप में आत्म-काम
शताव्रत पुनि छन्द ग्राम
शब्दामृत स प्रति-ध्वनित धाम
स्वर-मुख से

परमात्म-आत्म-अस्तित्व अमर
दृश्यालिङ्गा-सत्ता नश्वर
जड़-चेतनमय अमरणु अम्बर
प्रभु-लीला

सच्चिदानन्द शाश्वत स्वरूप
रज-तम-सत् क्रीड़ा-छवि अनूप
ब्रह्माण्ड-स्तूप में ही अरूप—
स्वर लीला

आम्नय प्रश्न मथित उत्तर
प्रवेदित शर्म्या पर स्तुति-स्वर
तड़ितोर्मि मुखर सत्वर-सत्वर–
उन्मजित

श्रोता-समूह-उर उद्वलित
सत तर्क-व्यूह में मन विस्मित
न्यायांकित पट हुत-हुत शमित
परिवर्तित

मध्याह्न-काल मार्तण्ड क्षुब्ध
उडु-स्वन सांप में मान-पुंज
वाणी में कपिल कणाद बुद्ध
गुरु गर्जन

तर्पित स्वर म स्वर पर प्रहार
बौद्धिक-कम्पिक गल-महोच्चार
मगार-तुम में अन्धकार
सम्मोहन

सुन कृष्ण-ग्रीव अज-अग्निनाद
सम्राट-हृदय स्थिर निर्विवाद
ज्यों जड़-स्वर में चेतना-स्वाद
रस-सिंचित

नव सित-चिकुर में रश्मि-रूप
अनघ-सत्त्व का ज्योति-स्तूप
सीता-गति में श्रीकंठ-भूप
अभिव्यंजित

रघुपति-ग्रीवा में विजय-हार
गूँजे अनगिन कलकंठ-द्वार
ज्यों कम्प-वक्ष पर पिक-पुकार
मधि-निशि में

भृगु चरण-चिह्न-अंकित नरेश
वंदित यश-स्तम्भमय आत्म-देश
चर्चित युग-वदान-प्रभा घोष
दिशि-दिशि में

प्रज्ज्वलित बाण-अन्तराकाश
अर्ध सुप्त प्राय इष्टिका-प्यास
पद्मिम मुख पर शुचि शरद्-हास
सूर्योदित

विजयी-आकांक्षा धर्म-धवल
हिमगिरि पर ज्यों आलोक-कमल
कोमल दल शाश्वत स्फोटोज्ज्वल
नभ-नीलित

सम्राट् हर्षवर्द्धन विभोर
मरु-श्रावण में ज्यों मुदित मोर
सुरधनु-सम्मुख घुम तड़ित-रोर
अस्फाकुल

अन्तःपुर में स्वर-निधि-सुहाग
घन में ज्यों रस-तरंग-राग
नीड़ित हृत्पाण्डप काम्य-फाग
सुर-मधुम

द्युति-गति में कादम्बरी-कथा
ज्यों पाणि-ग्रहण में सुता-व्यथा
कलि वृन्त च्युता पूजार्थ यथा
रचना रति

रसभरी शिल्प-विधि-विभावरी
भावना भूमि-सी हरीभरी
छू रही चन्द्रमा बाल-परी
हिम-अंचित

साधना-कक्ष में युग निद्रित
स्वप्नों म प्रीतिकूट चित्रित
यौवन समस्त शृंगारांकित
साहित्यिक

साकार कलात्मक क्रान्ति सफल
सुधि-शयन-नयन में आकुल जल
सर्वत्र घोष को यश विमल
चिर नतिक

पीताम्बर-सा शिशिरान्त प्रात
पुष्पित सरसों-सम आत्म-गात
चन्दन-मन में चम्पई रात
अस्तमिता

रचनासन पर प्रिय ग्रंथ ललित
सज्जिका सखी कुसुमांजलि-हित
वह अमरलता सौन्दर्य-नमित
विधु-वनिता

अर्चन-उपरान्त गिरा-वन्दन
वीणा-वादन पर मंत्र-हवन
ध्यानाश्रित अमरलता का मन
गायन में

पूजा-समाधि में बाण लीन
आकृति पर अरुणाभा नवीन
माधुर्य भक्ति ज्यों मद-हीन
यौवन में

पीली-पीली दुपहरी धूप
उद्यान-मध्य में बना कूप
सम्मुख कपोत से घिरा स्तूप
द्रुम दोलित

तोड़ता जीर्ण पल्लव समीर
जोड़ता काल पतझर-शरीर
ऋतु पहन रही नव हरित चीर
पुष्पांकित

वन-विचरित वारविलासिनियाँ
उड़ती रह रह पिकियाँ मुनियाँ
खिलखिला रही कोमल कलियाँ
हिलमिल कर

पण्डुका-आतप का स्वरारोह
भस्मावृत मम-अध्ययन मोह
हरता कवि-हिय अब काम-द्रोह
भू-दिनकर

बीती वह पथ-अवसान घड़ी
डूबी घुघुआती सान्ध्य तरी
निकली नूतन पूर्णिमा-परी
नृप हर्षित

कौमुदी-कक्ष में चन्द्रोत्सव
आकाश-कुसुम-शोभित निधि नव
निश्वास-शिशिर में सुरभित सब
मधु वर्षित

युवती रजनी रति-रसमयी
राका-रागिनी अनगमयी
मोहकता मंदिर उमगमयी
मन मादक

अन्तःपुर में आनन्द-पर्व
यौवन-वसन्त पर आत्म-गर्व
मुदित सुर-मुन को त्याग सब
दृग चमचम

आए गृह-पथ की ओर प्राण
पीताभ मौलिमा-विधु-वितान
मलयानिल में बही विहान
निधि मर्दित

आवास-वर्तिका ज्वलित मन्द
गुंजित पतंग में शिखा-छन्द
हो रह ज्योति में नयन मग
उत्सर्गित

सिंहासन पर मत नमित 'श्लथा
उच्चरित श्वास में स्वप्न-कथा
मुख पर उद्भासित मधुर व्यथा
मन पुष्पित

द्रुत व्याप्त द्रोण-सौंधी सुगंध
'प्राणों में प्रिय मल्लिका-स्पंद
लोचन-मिलिन्द में सुरानन्द
प्रतिबिम्बित

कवि-कक्ष-दीप-द्युति तिमिरावृत
सुषि-सुप्त अचेतन मन आहत
स्वप्निल सुख-पथ प्रतिपल विस्मृत
रेखांकित

वेणी विन्यास अर्धेन्दु-हास
कमनीय कामना-कल्प व्यास
क्षण-क्षण में ही पकिल प्रकाश
तम-दर्शित

चन्द्रिका-स्मित नैशावसान
दृग निद्रित कादम्बरी-नाम
इति-स्वप्न-विसर्जित कवि महान
द्युति-शोभित

फणधराबद्ध भी हृदयान्वित
मणि-रश्मिल कादम्बरी हर्षित
छाया-छवि यह आश्चर्यचकित
कवि-कल्पित

सौन्दर्य-सेज पर स्वप्न प्रसर
निर्वाक् प्राण काव्यात्म-मुखर
नयनों में स्थिर अन्तिम मिसर
हिम-कम्पित

मानस-मंथित ध्रुव-ध्वनित हृदय
काव्यांकित कोमल कला-विजय
चिर अमर महाश्वेता-सदय
छवि-गुम्फित

स्वप्निल तन में ही दबा-पीर
कसमस-कसमस मन अति अधीर
मान्मथ श्वास-गति गरल-तीर
फिर मूर्च्छित

निःशब्द कण्ठ में स्वर-कराह
छटपट-छटपट अन्तर अथाह
आवरण-हीन वक्षाङ्क बाँह
प्राणार्पित

जब अमरलता गृह में आई
सब देख साश्रु वह चिल्लाई
युग-दृग में घोर घटा छाई
अकुलाई

आरम्भ कोलाहल मचा तुरत
शोकाकुल मस्तक श्रद्धा-नत
उडु-स्वनसांग-भूपण आगत
परछाई

विह्वल विस्मय-पीड़ित कुमार
निस्तब्ध मणिगण बार-बार
भ्रमण-प्रभात में अधकार
अति दुखमय

आकुल-व्याकुल सम्राट् भ्रमित
गणितज्ञ-बुद्धि-बल चकित-चकित
सब निरस सजल करुणा-मिश्रित
लोचन द्वय

झुक गया तुरत श्रीकण्ठध्वज
लेते सहृदय पावन पद-रज
अब रह निपुण जन अरथी सज
राजोचित

आर्योचित शान्ति-पाठ सस्वर
शोपार्जित-वक्षा कर घर-घर
श्रीहर्ष-स्कंध पर मृत भास्कर
भू-गर्वित

शव-यात्रा में सैनिक-प्रयाण
निर्वाक नागरिक-स्नेह-दान
स्वर्गीय वाण-हित दुखित प्राण
पथ शोकित

आए सब सरस्वती-तट पर
भूपण-नेत्रों में शोक-लहर
क्रन्दित माता का कंपित स्वर
उर-मूर्छित

चन्दनी चिता पर बाणार्पण
प्रज्ज्वलन-पूर्व अन्तिम दर्शन
नृप-नयनों में भी नश्वर मन
मन विचलित

मरघट में मानस-द्वन्द्व अनल
जलता जीवन क्षिति पर प्रतिपल
चंचल सुकर्म हो अक्षय जल
भय-संचित

नत श्रमण भिक्षु आए तत्क्षण
नूतन शव पर काषाय वसन
प्रश्नोन्मुख हवनमार्ग का मन
स्वाभाविक

निर्वाण प्राप्त र त्ना श री र
थी महाभिक्षुणी धर्म धीर
आए हम इच्छित सरित-तीर
गत इंगित

मुन चकित मुग्ध उडु स्मरण-भ्रान्त
देखा विभूति मुख म्लान श्रान्त
बाणान्त-सहित रेखान्त प्रान्त
आत्मिकता

श्यामाम्बर में सुरधनुष रंग
निस्सीम कला क्रीडा अनंग
कल्पना लुप्त कवि-संग-संग
स्वर-सिक्ता

अर्पित भूपांजलि उडु-रञ्जित
रेखा स्वर्गीय सुमन-गुम्फित
शुभ-पिकपक्षी संस्मृति सुरभित
आलोकित

भू से सुदूर समरस-समीर
आत्माणु प्राप्त अस्थिर-शरीर–
अपरान्त परा-पथ में गंभीर
भूमायित

सावित्री-रश्मित उठे प्राण
सहसा रेखा का किया ध्यान
सस्पालिंगित सतुलित प्राण
परिरम्भित

वेदाम्बुधि में ज्यों बोध-लहर
उपनिषद-ऊर्मि में भौतिक स्वर,
अगणित सुतर्क-परिवर्तित नर
उत्कर्षित

विज्ञान-वीचि में मुक्त मनुज
विधि-नृप-विरुद्ध गति-विद्युत्-भुज
दिग्ध्वनित सिन्धु में चिताम्बुज
रवि-विकसित

बन्धन-विहीन स्वप्नांकित पथ
चालित भविष्य में समता रथ
ध्वनि-निशि में आगत अरुणिम अथ
युग-उन्मिन

छायाम्बर में अरुणारोहण
चतना-सुपर्ण कल-कूजन
नव प्राण-पत्र पर करुणा-कण
मन-गंधित

रस-स्वर-गिरि पर हैमवती
अन्योक्ति-पार्वती पूर्व सती
शिव-केलि-कला कवि वाण-यती
नि:इन्द्रित

सौन्दर्य-शिखर-तन निरावरण
गुंजित दिगन्त में आत्म-चरण
स्वर्णाम्बर में कल्पना-हरण
वसुधार्पित

रेखांजलि में रमणीय सृष्टि
ज्यों कामरूप पर कुसुम-वृष्टि
उडु-अंकित चन्द्रिकोच्छ्वसित दृष्टि
ऋतु रंजित

सावित्री रक्षित उठे बाण
सहसा रेखा का किया ध्यान
सत्यालिंगित संतुलित प्राण
परिरंभित

वेदाम्बुधि में ज्यों बोध-लहर
उपनिषद-उर्मि में मौलिक स्वर,
अगणित सुतर्क-परिवर्तित नर
उत्कर्षित

विक्षोभ-वीचि में मुक्त मनुज
विधि-नृप विरुद्ध गति-विद्युत्-भुज
दिग्व्यापिनि सिंधु में चिताम्बुज
रवि-विकसित

बंधन-विहीन स्वप्नांकित पथ
चालित भविष्य में समता रथ
रजनि-निशि में आगत अरुणिम भय
युग-दर्पित

छायाम्बर में अरुणारोहण
चेतना-सुपर्णा-कल-कूजन
नव प्राण-पत्र पर करुणा-कण
मन-गर्भित

रेखा-स्वर-गिरि पर हैमवती
अन्योक्ति-पार्वती पूर्व सती
शिव-भक्ति-कला कवि बाण-व्रती
निस्तन्द्रित

सौन्दर्य-शिखर-तन निरावरण
मुखरित दिगन्त में आत्म-चरण
स्वर्णाम्बर में कल्पना-हरण
वसुधाश्रित

रेखांजलि में रमणीय सृष्टि
ज्यों कामरूप पर कुसुम-वृष्टि
उडु-खचित चन्द्रिकोच्छ्वसित दृष्टि
ऋतु-रंजित

आलोकित स्कधावार हमनित
सगीत-चरण रवि-किरण-क्वणित
भारती-मत्र दिशि-दिशि मुखरित
जय भारत

जब प्रीतिकूट पा रहे त्राण
सँग में उड़, सुपर्ण स्वनसांग
अति विकल द्रोण-हित सजल प्राण
सुधि-जाग्रत

दृग पथ में रेखा रंगमयी
कविता-सी तुग तरंगमयी
हिममणि में चन्द्र प्रसंगमयी
इन्द्राणी

हमाभ रश्मि-मलराकला
अपगुठित कान्ति-मसिम कममा
उर-अभिव्यजित भा मा ममता
कल्याणी

मन-सुमन पर सुचिन हिलोर
यौवन-रसाल-अलिमाल-डोर
सुधि-गंध काकली-स्वर-विभोर
ऊर्जस्विन

श्रुत-सर्वचितिक में अचिरवती
विश्वास-संग स्वन-सरस्वती
आत्मा अपान में परा-सती
या-ज्योतिस

क्यों विष्णु-ब्रह्म-रत सृष्टि-सत्र
वाणात्मा में ऋग्-अधिति-मग
अनिरुक्त प्रमित निश्वास-यम
सारस्वत

दिक्काल-पक्ष पर प्राण-भानु
सोमांशु-व्याप्त रवि-मनस्वान्
अंगिरा-नयन में गिरा-ध्यान
दधीमत

अन्तर-सुमेरु पर गणोत्सव
शिव शृंग-पान में प्रभा प्रणव
नयनान्तरिक्ष में ओपला-भव
भू प्रापित

मानसी सिद्धि-सदीप्त हृदय
रेखायित छन्दोवद-विजय
पिपिणी अक्षरा-व्योमोदय
मर्कास्पित

विज्ञान-भाष्य में आत्म लीन
प्राचीन साधना अब अहीन
वात्स्यायन-सुत ऋषि ऋत प्रवीण
मन चेतन

वैदिक प्रकाश-परिपूर्ण प्राण
परमेष्ठित वैश्वानर-वितान
सुशोभित शान्त्यानन्द-ध्यान
ज्योतितम

शाश्वत प्रवाह में तिग्ति भक्ति
आकाश-अनुसरा धरा शक्ति
करुणा-कम्पित अरुणानुरक्ति
निष्कामा

आग्नेय देह से ध्वनित श्लोक
कवि-श्वासों में आपूत त्रिलोक
ममते! अब यात्रा-क्रम न रोक
अभिरामा

कैलास-वृन्त पर शिव-विलास
प्रस्मित बाँहों में दिशाकाश
अवभृत् असीम अन्तिम विकास
इति श्री अथ

चिर महाकाव्य ब्रह्माण्ड अखिल
अक्षर अनन्त झिलमिल-झिलमिल
विभ्राट काल अग्नि-अणु-सलिल
गतिमय पथ

म सोम-सिक्त अम्बरित बाण
उस प्रीतिकूट से दूर प्राण
आनन्द-अस्थि चेतन प्रयाण
ऊर्ध्वात्मा

अर्चना श्वास प्रभा प्रथित
उत्पन्न अविनि-मन प्रकाशित
ज्ञानानुरक्त उग अश्वपित—
परमात्मा



शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
क	१	वेस्ट मिनिस्टर अबे	वेस्ट मिनिस्टर अब
६४	१	ललिमारि	ललिमादि
८८	१८	चाह	चाह
१ ६	७	मरिंच	मरीचि
१५२	३	निर्यबहीन	नियमनहीन
१५८	१५	भरती	भरती
१ ८	११	पिक-तन	पिक-तान
२११	११	तामस	ताम
२२	/	अनचित	अनुचित
२८१	३	रहूँगा	रहूगा
२९३	१४	—आ	—औ
२९०	१६	बलों	बूला
३ ६	११	बाम-बेग	वाम्य-दम
३२६	३	हुतल	हुतल
३२६	१४	रा	नब
३३	४	गान	वनि
३५	२२	पदन-बेह	मदन-देह
३५४	२२	पत्रेम्मा	पत्रम्मा